पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 जनवरी की

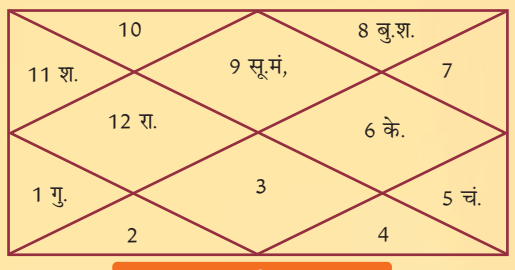

10 | 8 बु.श. | 11 श. | 9 सू.मं, | 7 | 12 रा. | 6 के. | 1 गु. | 3 | 5 चं. | 2 | 4

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- धनु में, ता. 15 को 9:05 दिन से मकर में। **मंगल-** धनु में, **बुध-** वृश्चिक में वक्री, ता. 2 को 7:40 रात से मार्गी, ता. 7 को 10:55 रात से धनु में। **गुरु-** मेष में, **शुक्र-** वृश्चिक में, ता. 18 को 7:06 रात से धनु में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या में।

मूल ता. 1 को 7।7 प्रातः तक, ता. 8 को 7।29 रात से ता. 10 को 7।6 रात तक, ता. 17 को 9।22 दिन. से ता. 19 को 6।41 प्रातः तक, ता. 26 को 9।38 दिन. से ता. 28 को 2।20 दिन तक।

गुरु शुक्र तारा पूर्व दिशा में उदित

ज्योतिष मठ संस्थान

गौतम पंचांग

सूर्य दक्षिणायन
ता. 16 से उत्तरायण

हेमंत ऋतु
16 से शिशिर ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 16 जनवरी की

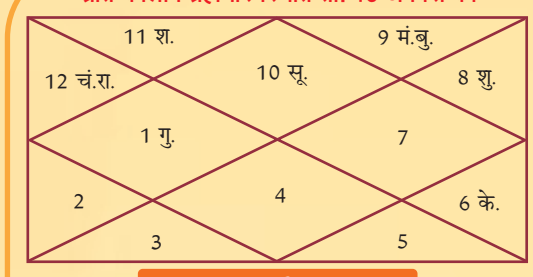

11 श. | 9 मं.बु. | 12 चं.रा. | 10 सू. | 8 शु. | 1 गु. | 7 | 2 | 4 | 6 के. | 3 | 5

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा सिंह राशि का, ता. 2 को 4।26 बजे दिन से कन्या का। ता. 4 को 3।39 बजे रात से तुला का। ता. 7 को 12।50 बजे दिन से वृश्चिक का। ता. 9 को 7।30 बजे रात से धनु का। ता. 11 को 12। 05 बजे रात से मकर का। ता. 13 को 3। 05 बजे रात से कुंभ का। ता. 15 को 5। 24 बजे रात से मीन का। ता. 18 को 7।55 बजे प्रातः से मेष का। ता. 20 को 11। 43 बजे दिन से वृष का। ता. 22 को 5। 24 बजे सायं से मिथुन का। ता. 24 को 1। 29 बजे रात से कर्क का। ता. 27 को 11।51 बजे दिन से सिंह का। ता. 29 को 11। 38 बजे रात से कन्या का चंद्रमा रहेगा।

तिथि समय समा.

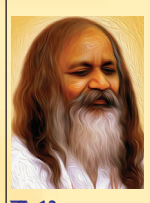

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	5	12।5	दिन	पौष कृष्णपक्ष
2	6	2।16	दिन	
3	7	4।19	दिन	
4	8	6।7	सायं	
5	9	7।31	रात	
6	10	8।26	रात	
7	11	8।51	रात	
8	12	8।44	रात	
9	13	8।8	रात	
10	14	7।5	रात	
11	30	5।39	सायं	
12	1	3।53	दिन	पौष शुक्लपक्ष
13	2	1।51	दिन	
14	3	11।38	दिन	
15	4	9।18	दिन	
16	5 6	6।56	प्रात:	
17	7	2।30	रात	
18	8	12।33	रात	
19	9	10।56	रात	
20	10	9।39	रात	
21	11	8।47	रात	
22	12	8।23	रात	
23	13	8।30	रात	
24	14	9।8	रात	
25	15	10।14	रात	
26	1	11।48	रात	माघ कृष्णपक्ष
27	2	1।42	रात	
28	3	3।49	रात	
29	4	6।1	रात	
30	5	दिन	रात	
31	5	8।2	प्रात:	

वर्षभर की मंगल कामना के साथ यह पंचांग अपने मित्रों व संबंधियों को भेंट करें।

-ज्योतिषाचार्य गुरुदेव पंडित **अयोध्या प्रसाद गौतम**

ता. 12 महर्षि जयंती
वेदों एवं ध्यानकर्म के पुनरोद्धारक महर्षि श्री महेश योगीजी का जन्म दिवस उनके अनुयायी वेदपाठी ब्राह्मण, कर्मकांडी बड़ी श्रद्धा के साथ मनाते हैं। आपके भावातीत ध्यान एवं सिद्धांतों से प्रेरित होकर देश ही नहीं बल्कि अनेक देशों के साधक लाभांवित हो रहे हैं।

शिव वास अग्नि वास
ता. 1,6, 11, 19, 22, 26, 30

शालिवाहन संवत 1945
शंकराचार्य संवत् 2530
श्री महर्षि संवत 106-7

जनवरी 2024

संवत् 2080
पौष-माघ मास

SUNDAY रवि	**पंचक** तारीख 13 को 3।05 बजे रात से तारीख 18 को 7।55 बजे प्रातः तक पंचक रहेंगे।	सफला एकादशी व्रतं विशाखा 6।59 रात **7** उत्पात योग पौष कृष्ण 11	गणेश चतुर्थी व्रतं धनिष्ठा 2।16 दिन **14** मातंग योग, पंचक पौष शुक्ल 3	पुत्रदा एकादशी व्रतं रोहिणी 5।12 रात अंत **21** गुरुगोई दिवस पौष शुक्ल 11	सौभाग्य योग मघा 2।20 दिन **28** मुद्गर योग माघ कृष्ण 3
MONDAY सोम	ईश्व सन नववर्षारंभ मघा 7।07 प्रातः **1** अमृत योग पौष कृष्ण 5	सुरूप द्वादशी अनुराधा 7।29 रात **8** मानस योग पौष कृष्ण 12	मकर संक्रांति, पोंगल शतभिषा 12।37 दिन **15** अमृत योग, पंचक पौष शुक्ल 4	कूर्म द्वादशी मृगशिर 5।34 रात अंत **22** आनंद योग पौष शुक्ल 12	गणेश चतुर्थी व्रतं चंद्रो. 9।5 पूर्वा फा. 4।57 दिन **29** ध्वज योग, तिल चौथ माघ कृष्ण 4
TUESDAY मंगल	पूर्वा फा. 9।46 दिन **2** सौभाग्य योग पौष कृष्ण 6	शिव चतुर्दशी व्रतं ज्येष्ठा 7।30 रात **9** प्रदोष व्रतं पौष कृष्ण 13	अन्नरूपा षष्ठी पूर्वा भाद्रपद 10।57 दिन **16** पंचक, काण योग पौष शुक्ल 5, 6	प्रदोष व्रतं आद्रा 6।26 रात **23** सुभाषचंद्र बोस जयंती पौष शुक्ल 13	धाता योग उत्तरा फा. 7।31 रात **30** महात्मा गांधी पुण्यतिथि माघ कृष्ण 5
WEDNESDAY बुध	उ.फा. 12।17 दिन **3** सावित्री बाई फुले जयंती पौष कृष्ण 7	मूल 7।06 रात **10** ध्वज योग पौष कृष्ण 14	लुंबक योग उ. भाद्रपद 9।22 दिन **17** गुरु गोविंद सिंह जयंती, पंचक पौष शुक्ल 7	राष्ट्रीय बालिका दिवस पुनर्वसु दिनरात **24** गदा योग पौष शुक्ल 14	हस्त 9।52 रात **31** आनंद योग माघ कृष्ण 5
THURSDAY गुरु	अष्टका श्राद्ध हस्त 2।34 दिन **4** लुई ब्रेल जयंती पौष कृष्ण 8	पौषीय अमावस्या पूर्वाषाढ़ 6।18 सा.य **11** धाता योग पौष कृष्ण 30	साकंभरी यात्रा रेवती 7।55 प्रा.त **18** मित्र योग, पंचक समाप्त पौष शुक्ल 8	स्नानदान पूर्णिमा पुनर्वसु 7।49 प्रा.त **25** सिद्धि योग, माघ स्नान प्रा. पौष शुक्ल 15	**भद्रा** ता. 2 को 2।16 बजे दिन से 3।23 बजे रात्रि ता. 6 को 8।08 बजे दिन से 8।26 बजे रात्रि ता. 9 को 8।8 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 10 को सूर्योदय से 7।46 बजे प्रातः ता. 14 को 10।32 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 15 को सूर्योदय से 9।18 बजे दिन ता. 17 को 2।30 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 18 को सूर्योदय से 1।34 बजे दिन ता. 21 को 9।12 बजे दिन से 8।47 बजे रात्रि ता. 24 को 9।8 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 25 को सूर्योदय से 9।40 बजे दिन ता. 28 को 2।48 बजे दिन से 3।49 बजे रात्रि
FRIDAY शुक्र	सुकर्मा योग चित्रा 4।30 दिन **5** परमहंस योगा. जयंती पौष कृष्ण 9	आनंद योग उत्तराषाढ़ 5।11 सा.य **12** स्वामी विवेकानंद जयंती पौष शुक्ल 1	ओशो महोत्सव अश्वि, भर 6।41 प्रातः **19** पौष शुक्ल 9	गणतंत्र दिवस पुष्य 9।38 दिन **26** माघ कृष्ण 1	
SATURDAY शनि	सिद्धि योग स्वाती 5।59 सायं **6** गुरु गोकुलदास जयंती पौष कृष्ण 10	लोहड़ी उत्सव श्रवण 3।48 दिन **13** सुस्थिर योग पंचक प्रा. पौष शुक्ल 2	साम्ब द्वादशी कृतिका 5।18 रात **20** ध्वज योग पौष शुक्ल 10	श्लेषा 11।51 दिन **27** मानस योग माघ कृष्ण 2	

मुहूर्त

विवाह- ता. 16, 17, 20, 21, 22, 27, 28, 29, 30, 31
नामकरण- ता. 3, 15, 17, 26, 31
कर्णभेद - ता. 26,
मुंडन ता. 17,31
अक्षरारंभ- ता. 1
अन्नप्राशन- ता. 3, 12, 17, 25, 31
सीमांत पुंसवन- ता. 17, 21, 26
नवीन वस्त्र- ता. 3, 4, 6, 17, 18, 21, 25, 26
संपदा क्रय- ता. 15, 18
व्यापार आरंभ- ता. 4, 8, 17, 18, 21, 26, 31
वाहन क्रय- ता. 3, 4, 8, 15, 18, 26
शल्यक्रिया- ता. 4, 7, 18, 21, 25
वाटिका रोपण- ता. 18, 21, 26
औषधि सेवन- ता. 3, 8, 15, 18, 26
धान्य छेदन- ता. 3, 17
उपनयन- ता. 21
गृह प्रवेश- ता. 17, 22, 24
वस्तु विक्रय - ता. 1, 20, 27
शस्त्र निर्माण- ता. 2, 20
पशु क्रय-विक्रय- ता. 3, 4, 15, 18, 25, 26 **यात्रा-** ता. 25, 26
आभूषण निर्माण - ता. 15, 21
शिल्प विद्या- ता. 15, 21

राशिफल

मेष - यात्रा, शुभ प्रसंग, परेशानी, कष्ट।
वृष- मेहमान आगमन, मतभेद बढ़ेगा।
मिथुन - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
कर्क - भूमि लाभ, पुत्र सुख, यात्रा कष्ट।
सिंह - जायजाद वृद्धि, चिंता निवारण,
कन्या - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
तुला - प्रतिष्ठा में वृद्धि, भूमि लाभ, यात्रा।
वृश्चिक - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
धनु - प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
मकर- शरीर कष्ट, तनाव, स्थानांतरण।
कुम्भ- श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
मीन- धन लाभ, शुभ समाचार, मतभेद।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 3 श्री जादूगर आनंद जन्म दिवस
ता. 5 श्री गुरु गोविंद सिंह जयंती
ता. 10 विश्व हिन्दी दिवस
ता. 12 महर्षि श्री महेश योगी जयंती, स्वामी श्री विवेकानंद जयंती
ता. 23 नेताजी श्री सुभाषचंद्र बोस जयंती
ता. 26 गणतंत्र दिवस
ता. 30 श्री महात्मा गांधी पुण्यतिथि

शुभ योग

अमृतसिद्धि योग- ता 22 को सूर्योदय से 5।34 बजे रातअंत तक। ता 25 को 7।49 बजे प्रातः से रातअंत तक। **सर्वार्थसिद्धि योग-** ता 3 को 12।17 बजे दिन से रातअंत तक। ता 6 को सूर्योदय से 5।59 बजे सायं तक। ता 8 को सूर्योदय से 7।29 बजे रात्रि तक। ता 12 को 5।11 बजे सायं से रातअंत तक। ता 13 को सूर्योदय से 3।48 बजे दिन तक। ता 16 को 10।57 बजे दिन से रातअंत तक। ता 18 को सूर्योदय से 7।55 बजे प्रातः तक। ता 19 को सूर्योदय से 6।41 बजे प्रातः तक। ता 25 को सूर्योदय से 7।49 बजे प्रातः तक। ता 31 को सूर्योदय से 9।52 बजे रात्रि तक। **रवियोग-** ता 2 को दिन 9।46 बजे से रात्रिअंत ता 3 को सूर्योदय से दिन 12।17 बजे तक। ता 14 को दिन 2।16 बजे से रात्रिअंत ता 15 को सूर्योदय से दिन 12।79 बजे तक। ता 16 को दिन 10।57 बजे से रात्रिअंत ता 17 को सूर्योदय से दिन 9।22 बजे तक। ता 19 को प्रातः 6।41 बजे से रात्रिअंत ता 20 को सूर्योदय से रात्रि 5।18 बजे तक। ता 22 को रात्रि 5।34 बजे से रात्रिअंत ता 23 को सूर्योदय से रात्रि 6।26 बजे तक। ता 24 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 25 को सूर्योदय से प्रातः 7।49 बजे तक। ता 31 को रात्रि 9।52 बजे से रात्रिअंत तक। **त्रिपुष्कर योग -** ता. 2 को 9।46 दिन से रात अंत तक।
गुरु पुष्य नक्षत्र - ता. 25 को 7।49 प्रातः से रात अंत तक।

भोपाल

	ता.						
सूर्योदय	ता.	1-6.42	7-6.41	13-6.39	19-6.37	25-6.34	31-6.31
सूर्यास्त	ता.	1-5.18	7-5.19	13-5.21	19-5.23	25-5.26	31-5.29

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

PUBLIC FIRST
सर्वदा भारतीय
देश-विदेश में देखा जाने वाला नंबर-1 चैनल
चैनलहेड-आशुतोष गुप्ता

ता. 4 अष्टका श्राद्धं, रूक्मणी अष्टमी
ता. 7 सफला एकादशी व्रतं
ता. 8 स्वरूप द्वादशी
ता. 9 प्रदोष व्रतं, शिव चतुर्दशी
ता. 11 स्नानदान पौषीय अमावस्या
ता. 14 वैनायकी चर्तुथी
ता. 15 मकर संक्रांति पुण्य स्नान
ता. 16 सौर माघ मासारंभ
ता. 17 उभय सप्तमी
ता. 21 पुत्रदा एकादशी व्रतं
ता. 23 प्रदोष व्रतं (शुक्ल)
ता. 25 स्नानदान पौष पूर्णिमा व्रतं
ता. 29 संकष्टी चतुर्थी

जैन व्रत पर्व
ता. 6 पार्श्वनाथ जन्म कल्याण
ता. 10 पाक्षिक प्रतिक्रमण
ता. 21 रोहिणी व्रतं
ता. 25 खोडस व्रतं प्रारंभ

मकर संक्रांति फलं

ता. 15 को 9.5 दिन में मकर संक्रांति अर्की है। इसका वाहन अश्व उप वाहन सिंह एवं कृष्ण वस्त्र धारण किए हुए है। संक्रांति का पुण्यकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहेगा। सूर्य उत्तरायण स्नान के साथ सूर्य पूजा के साथ गर्म वस्त्र तिल आदि का दान करना फलदायी माना गया है।
संक्रांति फल - **मेष**-लाभ, **वृष** -कष्ट, **मिथुन**-मान सम्मान, **कर्क**-अशांति **सिंह**-लाभकारी, **कन्या**-अशांतिप्रिय, **तुला**-उन्नतिकारी, **वृश्चिक**-धनलाभ, **धनु**-यश कीर्ति, **मकर**-हानिप्रद, **कुंभ**-शुभफल, **मीन**-यशकारक।

मास फल

इस माह सूर्य मंगल कीयुति एवं मंगल बुध का योग तथा स्वराशि का शनि कई राज्यों में अशांति, तनाव निर्मित करेगा। जिससे सत्ता पक्ष को परेशानी होगी। रोगकारक प्रभाव के कारण हृदयघात रक्तचाप के मामले बढ़ेंगे। यानखान रेल-दुर्घटना के योग हैं। असमय बारिश कोहरा तथा बिजली से हानि होगी। अनाज के भाव में सामान्य घटा-बढ़ी के साथ शेयर, धातु आदि में सामान्य घटा-बढ़ी के प्रभाव बने रहेंगे।

ज्योतिषीय परामर्श हेतु संपर्क करें
प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल फोन- 0755-7964542
₹70

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम मो.-9827322068 ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास,
राष्ट्रपति कुल विभूषित भविष्यवक्ता महामहोपाध्याय,
कोतवाली बाजार, जबलपुर, मो.-9826621998

ज्योतिष विचार मंथन-ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल

ज्योतिष दृष्टि फल-2024 ई.

सहयोगी ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम
ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर भोपाल
मो. 9827322068, 7553581264

ग्रह राज्यं प्रयक्षामी, ग्रह राज्यं हरेण च।

शास्त्र वचनानुसार - ग्रह ही राज्य देते हैं और ग्रह ही राज्य का हरण कर लेते हैं, भविष्य की जानकारी तो ब्रम्हा जी से अधिक संसार में किसी और को नहीं हो सकती, क्योंकि वह तो सृष्टि भविष्य के रचियता ही हैं। -पं. व्यास

पिंगल नाम संवत्सर फल कथन संवत-2081

8 अप्रैल से नववर्ष प्रारंभ होगा।

श्री गणेशाय नम: अथ संवत्सरावली महात्म्य जो मनुष्य चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का फल सुनता है वह धनाढ्य, निरोगी, राजकुल में विजयी, बुद्धिमान और सुखी होता है।

इस दिन घर को स्वच्छ कर ध्वजा बंधन कर पंचांग स्थित श्री गणेश जी का पूजन कर रात्रि में मंगल गीत आयोजन करना चाहिये। ।। अथ संवत्सरावली ।। श्री गणेशाय नम: स जयति सिन्धुर वदनो देवो यत्पादपंकज स्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिनाशयति विघ्नानाम् । अस्मिन् संवत्सरे अथ श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्थे श्री श्वेतवाराहकल्पे वर्तमान कल्पारंभत: ससख्यत: परमनवो व्यतीता:। वर्तमानस्य सप्तम वैवस्वतमनौ: सप्तविंशति महायुगानि गतानि । अष्टाविंशति महायुगस्य कृतादि युगत्रयं व्यतीतम् सृष्टितो गताब्दा: 1955885125 वर्तमान कलियुगस्य 5125 वर्षाणि गता: । विक्रमादित्य राज्यकालातत्संवत्सरा: गता: 2081 शकारंम्भतक्ष 1946 व्यतिताब्दा: ।

कालयुक्त नाम संवत्सर फलम् - वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिन: सर्वजतव: सन्त्यथापि च संस्यानि प्रचुराणि तथा गदा: । काल वर्ष में सब मनुष्य सुखी रहेंगे, अन्न अधिक हो किन्तु रोग फैले।

सिद्धार्थ नाम संवत्सरफलम् - सिद्धार्थ वत्सरे भूयो ज्ञान वैराग्य युक्तप्रजा सकतावसुधा भाति बहु सस्यार्ध वृष्टिभि: । सिद्धार्थ वर्ष में प्रजा ज्ञान वैराग्य से युक्त हो। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहेंगे और जल अन्न प्रचुर हों।

राजा भीम फलम् - भौमे नृपे वन्हिभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रह च दु:खं प्रजा व्याधि वियोग पीड़ा स्वल्पं पयो मुंचति वारिवाह: । भीषण अग्निकांड, जनहानि, चोर भय, रोग व्याधि और कम वर्षा का योग है।

मंत्री शनि फलम् - रविसुते यदि मंत्रिणी पार्थिवा विनयसं रहिता बहुदु दान जलदा जलदा जनता पादजनेषु सुखनधनं कचित् ॥ शासक वर्ग में नम्रता न रहने से वे जनता को दु:खदाई रहेंगे। कम वर्षा होने से मनुष्य दु:खी रहेंगे।

सस्येश भौम् फलम् - प्रथम धान्यपती धरणीसुते गजतुरंग खरोष्ट्र गवामपि प्रभवदो बहुरोग मनोज न सौख्यकरं तुष धान्यहत् ॥ मंगल सस्यैश होने से पालतू जानवरों में रोग होने की संभावना है। जल नहीं वर्ष एवं खेती नष्ट होने की संभावना बनती है।

दुर्गेश शनि फलम् - रविसुते गढ़पालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जना: । विविध वैरिविशेषितनागरा: कृषिधनं शनैर्मषितं भुवि: ।। शनि दुर्गेश होने से संसार में नाना भांति से अशान्ति होगी। टिड्डी तथा चूहों का आतंक होगा।

धनेश भौम फलम्- असममौल्यकरो धरणीसुत: शरदितापकररस्तुषधान्यहत्। सहसि मासि भवेद्विगुणं तदा नरपतिर्जन शोक विधायक: । भौम धनेशहोने से तेजी मंदी हो। गहूं कम हो। मार्गशीर्ष मास में विक्रय करने से संग्रहीत वस्तु में दुगुना लाभ होगा। शासक को कष्ट होगा।

रसेश गुरु फलम् - यदि गुरु रसपो जन सौख्यद: कमल वन्तिसरांसि तृणानि च। जनपदा द्विज पूजन तत्परा राजसु वाजिरथोष्ट्र युता नृपा: ॥ गुरु रसेश होने से सब सुखी रहेंगे। घास पर्याप्त होगी। शासकों को नये नये वाहन सुख प्राप्त होंगे धान्येश चंद्र फलम्- चंद्रे धान्याधिपे जायते प्रजा वृद्धि: प्रजायते। गोधूमा: सर्वपाश्चैव गोक्षु क्षीरं तदा बहु ।। चंद्रमा धान्येश होने से प्रजा में वृद्धि होगी। दूधऔर अनाजों का उत्पादन अधिक हाकगा।

नीरसेश भीम फलम् - नीरसेशो यदा भौम: प्रवाल रक्त वाससाम्। रक्त चंदन ताम्राणामर्च वृद्धिर्दिनेदिने। मंगल नौरसेश होने से मूंगा, लाल वस्त्र, लाल चंदन एवं तांबा इत्यादि लाल रंग की वस्तुयें महंगी होने की संभावना है

फलेश शुक्र फलम्- यदि फलस्यपती भृगुजे घरा मृदु कुमार महोरुह राशय: । बहु फला नरनाथ सुभोगदा द्विजवरा: श्रुति पाठ परायणा: ।। शुक्र फलेश होने से पृथ्वी पर खूब घास-फूस पैदा होगी। फल-फूल पैदा होंगे। शासकों को सुख भोगने को मिलेगा। ब्राम्हण वेद परायण होंगे।

मेघेश शनि फलम् - मेघेषो शनि यदा वर्षे विरल वर्षा तदा भवेत्। शासका: मनस्ताप बहुरोगे पीड़ितो जन: ।। शनि मेघेश होने पर बहुत कम वर्षा होगी। जनता में रोग फैलेंगे। शासक वर्ग को कष्ट होगा।

वरूण नाम मेघस्य फलम् - अग्निहोत्र करणादराद्विजा: स्यु: सदाधिक मुखोखिला: प्रजा: । अपवेन सहितं महीतलं वारुणे जलधरे भवेदलम्।। वरुणमेघ होने से ब्राम्हणों का आदर होगा। जनताखुशरहेगा गी तथा पर्याप्त वर्षा होगी।

वासुकि नाम नाग फलम् - उदेति यत्र वत्सरे स वासुकिरभुजंगम: । प्रभूत धान्य दायक: सुवृष्टि कारकस्तथा। वासुकि नाग होने से उत्तम वर्षा और अन्न कायोग है।

रोहिणी वास फलम् - यदि विधि धिष्ण्य पतति तटस्थम् । शुभ जल वृष्टि धन कण वृद्धि: । तट में रोहिणी होने से शुभ वर्षा होगी और अन धन की वृद्धि होगी ।।

आर्द्रा प्रवेश तिथि फल- प्रतिदिवसे भानोर्यदाद्रायां प्रवेशनम्। नृणं गृहे गृहेतहिं भवेन्मंगल वर्द्धनम् प्रतिपदा तिथि के दिन सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवे तो घर घर में मंगलकार्य बढ़ते हैं।

आर्द्रा प्रवेश शनिवारफलम् - शनैश्चरस्य वारे वेद विराद्रागतो यदि कृशता तर्हि लोकानां नितांत मंद बुद्धिता। शनिवार को आर्द्रा प्रवेश होने से लोग दुबले अधिक हों तथा बुद्धि भी कम हो ।

आर्दा प्रवेश नक्षत्र फलम् - चंद्राक्रांते निति भेदाद रवि संयुता भयं नानाविधं पुंसां कृशत्वं रोग वृद्धिदा मूल नक्षत्र हो तो पुरुषों को कई प्रकार के भय हों और रोग वृद्धि दुबलापन हो ।।

आर्द्रा प्रवेश योगफलम् - शुक्ल योगे दिनकरे कृत रौद्रागमे सति जल वर्षण योगेन धान्याद्युपचयी भवेत् । शुक्ल योग में हो तो जल बरसने से खेती अच्छी उत्पन्न हो।

वर्ष लग्न फलम् - धनु लग्ने तृत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टि मध्यदेशे सरोगता पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्थ मास पंचकात्। दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीड़ा चतुष्पदे। धन लग्न में उत्तर पूर्व में सुख हो, मध्यदेश में प्रबल वर्षा से दुर्भिक्ष तथा रोग हो। पश्चिम में पांच मास में घी धान्य सस्ते हों, दक्षिण में सुख रहेगा। किन्तु चौपायों को कुछ पीड़ा हो।

अथ विशोषक - वर्षा 5, धान्य 11 5. शीत 13 ते 17, वायु 13. वृद्धि 15, क्षय 15 विग्रह 11.3 षा 9 निद्रा 15, आलस्य 15, उद्यम 13, शांति 15, क्रोध 13. 5 लोभ 3, मैथुन 15 रस 9 फल 13, उत्साह 11, उग्रा 15, पाप 3, पुण्य 11, व्याधि7, आचार 3, अनाचार 5, मृत्यु 3, जन्म 7 देश 9, देश स्वास्थ्य 15, चोर भय 13. चोर नाश 15, अग्रि5, अग्नि शांत 11, वृक्षादि उद्भिज 3 मनुष्यादि 3 सर्पादि 3, मखमलादि स्वेदज 9

भारत एवं अंतर्राष्ट्रीय देशों पर प्रभाव

चीन, जापान- राष्ट्रपति को अपने प्रस्तावों के कारण विरोध का सामना करना पड़ेगा। इन देशों में सशक्त राजनैतिक महिला का उदय हो सकता है। चीन का प्रयास भारत के बढ़ते हुए अंतर्राष्ट्रीय कदमों को रोकने का रहेगा। चीन पर लगे प्रतिबंध अमेरिका द्वारा हटाए जा सकते हैं। चीन रूस के संबंध अच्छे रहेंगे। चीन में नया संक्रमक रोग महामारी से जनधन की हानि हो सकती है। चीन में बजट बढ़ेगा। चीन में बीजिंग का दबदबा कायम रहेगा। मुस्लिम विद्रोह इंडोनेशिया में देखने को मिलेगा। यहां पर किसी बड़े भूकंप की संभावना है। वर्ष के अंत में किसी बड़े नेता पर हमला हो सकता है। उत्तर कोरिया एवं अमेरिका में तनाव की स्थिति रहेगी। अमेरिका के प्रतिबंधों का कोई असर उत्तर कोरिया पर नहीं पड़ेगा।

रूस और यूक्रेन - यूक्रेन पर रूस का सैन्य अभियान यथावत चलता रहेगा। वर्ष के अंत में रूस हमला रोकने पर विचार सर सकता है। गंभीर हिंसक घटनाओं के कारण युद्धादि की स्थिति में बदलाव हो सकता हरै। अमेरिका के प्रतिबंध रूस की अर्थवस्था को प्रभावित कर सकते हैं। रूस यूक्रेन से संबंधित निर्णायक कदम उठा सकता है। यूक्रेन कुंडली में प्रतिकूल ग्रह स्थिति विनाशकारी स्थितियां निर्मित कर सकती है।

इजराइल-गाजा-फिलिस्पीन- इजराइल द्वारा सोची समझी रणनीति के तहत गाजा का नेस्तानाबूद करने के पूरे प्रयास किए जाएंगे। इसमें अमेरिका एवं अन्य मित्र देशों का सहयोग प्राप्त होगा। इस संबंध में भारत की रणनीति तटस्थ रहेगी। गाजा में भारी नुकसान के साथ इजराइल का कब्जा होगा। मुस्लिम देशों में असंतोष एवं तनाव का प्रभाव कुछ अन्य देशों को भुगतना पड़ सकता है। गाजा इजराइल की युद्धात्मक स्थिति विश्व में तनाव पैदा कर विश्व युद्ध की ओर ले जा सकती है। परन्तु फिल्हाल ग्रह योग विश्व युद्ध के नहीं बन रहे हैं।

पाकिस्तान-काबुल-म्यांमार - पाकिस्तान में आम चुनाव में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को मध्यम सफलता प्राप्त होगी। सरकार में एक मजबूत विपक्ष बनेगा। पाकिस्तान में सेना से समझौता होगा, इमरान खान के सत्ता में लौटने के योग कमजोर हैं। पाकिस्तान में सिंध, ब्लुचिस्तान, पीओके आदि संवेदनशील स्थानों पर पाकिस्तान के खिलाफ आंदोलन होंगे। काबुल में ताबिलवानी बर्बाता बढ़ेगी जिससे महिलाओं के अधिकार एवं स्थिति में गिरावट आएगी। यहां पर किसी बड़ी आंतकी घटना, भूंकप, प्राकृतिक प्रकोप आदि के योग भी काबुल को दयनीय स्थिति में ला सकते हैं। इधर म्यामांर में ग्रह स्थिति वहां के नागरिकों के लिए कठिन परिस्थिति पैदा कर सकती है। सैन्य शासन जारी रखने के संकेत ग्रह दे रहे हैं। म्यामांर के राष्ट्रपति को जेल में प्रताड़ित हो सकते हैं, यह देश चीन के जाल में फंस सकता है। इसी प्रकार नेपाल के संबंध भारत के साथ अच्छे बनेंगे। परन्तु अमेरिका के साथ संबंध बिगड़ सकते हैं। तिब्बत में दलाईलामा के स्वास्थ्य में गड़बड़ी आएगी उनकी सुरक्षा पर खतरा हो सकता है। इसमें चीन का नियंत्रण बढ़ेगा।

ब्रिटेन - पीएम को अर्थव्यवस्था मजबूत करना एक कठिन कार्य होगा। परन्तु वर्ष के शुरु में कुछ सुधार होने की संभावना है। विश्व स्तर पर प्रभाव जमाने के लिए ब्रिटेन को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। जिसमें आंशिक सफलता प्राप्त होगी। भारत से संबंधों में बढ़ोतरी होगी।

अमेरिका - अमेरिका का ताईबान के प्रति झुकाब रहेगा। उसे रक्षा हथियार उपलब्ध कराएगा। चीन के साथ वचस्व एवं नेतृत्व की होड़ की कारण अमेरिकी नीति अरब देशों की ओर रुख कर सकती है। अमेरिका भारत से अच्छे संबंध स्थापित करेगा। राहु की अष्टम स्थिति के कारण अमेरिका में संघर्ष के साथ कोई बड़ी दुर्घटना से जनहानि हो सकती है।

अन्य देश - इस्लामिक संगठनों वाले देशों के प्रति फ्रांस सरकार कड़े कदम उठाएगी। फ्रांस पर आतंकी हमला हो सकता है। जर्मनी के चांसलर के लिए समय कठिन साबित होगा। तुर्की के सीरिया पर हमलें जारी रहेंगे। ईरान की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिणाम दिखाई देंगे।

पीएम नरेन्द्र मोदी और भारत

यह वर्ष मोदी के लिए संघर्ष भरा रहेगा। नामराशि में अढैया शनि का प्रभाव अनेक प्रकार की समस्याएं निर्मित करेगा। देश की आंतरिक समस्याओं में वृद्धि होगी। अष्टम शनि से प्रभावित चंद्रमा देश में समस्याओं से निजात दिलाने में प्रधानमंत्री की टीम को सक्षम करेगा। चंद्रमा के प्रभाव से सनातन धर्म में धार्मिक उन्माद की वृद्धि होगी। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत सांस्कृतिक राष्ट्र विरोधी ताकतों का मुकाबला करेगी। अप्रैल एवं नवंबर माह में देश में सांप्रदायिक तनाव बढ़ सकता है जिसमें प्रधानमंत्री मोदी अपने सूझबूझ के द्वारा विभाजनकारी ताकतों से भलीभांति मुकबाला करेगी। दुनिया में भारत के खिलाफ शड्यंत्रकारी प्रयासों को प्रधानमंत्री नियंत्रित करने में सक्षम होंगे। द्वादश भाव का शनि शारीरिक हानि के संकेत देता है अत: उन्हें अपने स्वास्थ्य एवं सुरक्षा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सबके साथ चलने वाले मुद्दों में सबका विकास होगा। मंगल राष्ट्रीय स्तर के नेताओं पर हमले करा सकता है। इस वर्ष देश की वैदिक विरासत पर अनुसंधान प्रचार-प्रसार के साथ पाठ्यक्रम में बदलाव की संभावना है। भारत में रियल स्टेट के क्षेत्र में तरक्की होगी। भाजपा के खिलाफ राष्ट्रीय मोर्चा विफल हो जाएग। भारत में तीन रेल दुर्घटनाएं हो सकती हैं। किसी मठाधीश को कानून समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसी प्रकार भारतीय फिल्म जगत के किसी शीर्षस्थ व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। भारत में दो बड़े भूकंप आ सकते हैं। तटीय क्षेत्रों में युद्धात्मक स्थितियां निर्मित हो सकती हैं।

पिछले वर्ष की अक्षरता सत्य भविष्वाणी

अनेक राष्ट्रों की आंतरिक स्थिति खराब होगी। अफगानिस्तान में भूकंप से हानि होगी। विरोध दलों का वर्चस्व बढ़ेगा। जमीन के मूल्यों में तेजी एवं खरीदी बढ़ेगी। कश्मीर में आतंकवादी घटनाएं होंगी। दुनिया में भारत का कद बढ़ेगा। स्कूल शिक्षा पर बड़ा बदलाव होगा। मुख्यमंत्री योगी की सरकार में पकड़ मजबूत होगी। कुछ प्रदेशों में कांग्रेस को सफलता प्राप्त होगा। विधानसभा चुनाव में कुछ राज्यों को नुकसान होगा। कोरोना की फिर वापसी संभव है। विपछले वर्ष कोरोना फिर से दस्तक दी थी। नई संक्रमित पशुओं में बीमारी पाकिस्तान में अस्थिरता ता इजराइल में हमले होने की भविष्यवाणी के साथ नेपाल में भूकंप एवं राम मंदिर निर्माण से संबंधित भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। इसके साथ ही अनेक प्रकार की छोटी-बड़ी भविष्य वाणियां प्रमुख पंचांग एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से पिछले वर्ष की गई थी जो अक्षरता सत्य सिद्ध हुई।

प्रादेशिक सरकारें

भविष्यफल-2023

मध्यप्रदेश-प्रदेश में विकास दर में बढ़ोतरी होगी, परन्तु महंगाई बेरोजगारी से जनता पीड़ित रहेगी। नई सरकार अच्छा कार्य करने का प्रयास करेगी परन्तु सभी लोग संतुष्ट नहीं होंगे। इस वर्ष अति वृष्टि और बाढ़ से नुकसान हो सकता है। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहेगा। यहां पर भाजपा भी चतुराई पूर्वक सरकार बना सकती है। वहीं कांग्रेस की स्थिति गिरावट आएगी। अर्थात चतुराई से ही मध्यप्रदेश में सरकार बनेगी। जो ज्यादा चतुर होगा वही सरकार चलाएगा।

छत्तीसगढ़ - प्रदेश में कृषि उत्पादन की स्थिति अच्छी रहेगी। वनोपज में वृद्धि होगी परन्तु वर्षा की स्थति कमजोर रहेगी। कहीं बाढ़ से नुकसान होगा। यहां पर भाजपा की स्थिति में सुधार होगा। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस सरकार को भाजपा द्वारा कड़ी टक्कर मिलेगी। परन्तु अन्तोत्गत्वा भाजपा सत्ता पर काबिज होने में सफलता प्राप्त करेगी।

राजस्थान - लोक हित के कार्यों से प्रजा में असंतोष बढ़ेगा। किसानों को वर्षा की कमी के कारण वर्षभर चिंता रहेगी। कृषि उत्पादन में प्रभाव बढ़ेगा परन्तु वनोपज से लाभ होगा। शिक्षा के क्षेत्र में लबाव एवं प्रगति के योग हैं। मुख्यमंत्री को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पिछड़ सकती है। यहां भाजपा को सफलता मिलने की संभावना। राजकुमारी दियाकुमारी सांसद का प्रभाव राजस्थान में बढ़ेगा।

महाराष्ट्र - महाराष्ट्र में अशांति अराजकता का माहौल बढ़ेगा। सिंधे सरकार द्वारा जनहित के अच्छे कार्य किए जाएंगे। यहां पर केंद्र सरकार के सहयोग से अनेक प्रकार की कार्ययोजनाएं परिलक्षित होंगी। नशीले पदार्थो की तस्करी पर लगाम लगेगी। इसी प्रकारा कर्नाटक में सरकार की अपेक्षाओं को पूरा करने में शुक्र मदद करेगा। कुछ घरेलु अशांति के बावजूद सुख-शांति रहेगी। यहां पर प्रतिभा को अवसर मिलेगा, परन्तु भ्रष्टाचार का बोलवाला भी रहेगा।

यहां पर भाजपा प्रदर्शन संतोषजनक रहेगा।

तेलांगाना - में राहु का प्रभाव रग्रहण दोष के रूप में परिलक्षित हो रहा है। होने वाले चुनाव में कांग्रेस से कड़ा मुकाबला करना पड़ेगा। कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा होगा। यहां पर त्रिशंकु सरकार की स्थिति बन रही है।

बिहार बंगाल असम उड़ीसा - विहार के मुख्यंत्री नीतिष कुमार को संकटों का सामना करना पड़ेगा, लोकप्रियता में कमी आएगी। अनेक चुनौतिपूर्ण समस्याओं के बावजूद उन्हें कड़ा संघर्ष करने पर सफलता प्राप्त होगी। ये अपनी विरोध नीति में परिवर्तन करेंगे। बंगाल में सामाजिक-राजनैतिक समससता भंग होगी। यहां का म हौल तनावपूर्ण असंतोषजनक होगा। बंगाल में विपक्ष मजबूत होगा। यह सरकार को नई-नई चुनौतियां देता रहेगा। यहां पर अनेक नेताओं को कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। असम सरकार को लोकप्रियता में वृद्धि होगी परन्तु यहां पर आतंकवादियों से परेशानी होगी। यहां पर मस्जिदों एवं मदरसों की स्थिति पर नियंत्रण किया जाएगा। इसी प्रकार उड़ीशा में प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि संभव है। मणिपुर में नई समस्या का उदय होने के साथ पुरानी समस्या का हल नहीं होगा। संघर्ष की स्थितियां अनेक प्रकार से वर्ष के मध्य में तनावपूर्ण स्तिथियां निर्मित कर सकती हैं। भारत सरकार द्वारा केंद्रीय सत्ताबल का उपयोग भी किया जा सकता है। यह पर नई नियम कानून बनाकर स्थिति को नियंत्रण में करने का प्रयास किया जाएगा।

भारतीय जनता पार्टी

भाजपा की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि स्वराशि में बली है जिससे भाजपा का वर्चस्व बढ़ेगा परन्तु नए चुनाव में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। भाजपा के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भाजपा को उच्च स्तर तक पहुंचाने के साथ देश को मजबूती प्रदान करेगा। आरएसएस एवं भाजपा में महिलाओं की भूमिका बढ़ेगी। भाजपा अपनी चुनावी रणनीति में विशेष परिवर्तन कर सफलता अर्जित करने का प्रयास करेगी। आगामी चुनाव में जिताऊ प्रत्याशियों को टिकट देकर अपनी स्थिति को मजबूत बनाएगी। केंद्रीय नेतृत्व द्वारा प्रदेशों पर पैनी नजर रखी जाएगी। पार्टी में महिलाओं का वर्चस्व बढ़ेगा। पार्टी में कुछ असंतुष्टों द्वारा परेशानी खड़ी कर अस्थिरता प्रदान करने की कोशिश की जाएगी।

कांग्रेस और तीसरा मोर्चा

कांग्रेस की पत्रिका में ग्रहण योग का प्रभाव बना हुआ है। यह अनेक कार्यों में ग्रहण लगाता है। जिसके प्रभाव से पूर्व स्थिति के अनुसार कांग्रेस अपनी रणनीति में परिवर्तन लाएगी। कांग्रेस में कुछ सुधार होगा। राज्यसभा में लोकसभा में सदस्यों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। कुछ प्रदेशों में कांग्रेस को सफलता प्राप्त होगी। वर्ष के उत्तरार्ध में कांग्रेस के ऊपर ग्रहण दोष का प्रभाव शुभ नहीं है। परन्तु प्रियंका गांधी और राहुल के योग इनकी लोकप्रियता में बढ़ोतरी करेगें। सोनिया गांधी के लिए एवं मल्लिकार्जन खडगे के लिए यह वर्ष संकटकाल माना जाएगा। कांग्रेस के पुराने नेताओं को अनेक प्रकार से जांच एजेंसियों से परेशानी होगी। कुछ नामी-गिरामी नेताओं के षडयंत्र भी उजागर होंगे।

लोकसभा चुनाव-2024

इस चुनाव में सत्ताधारी भाजपा को विशेष सफलता प्राप्त होगी। सांसदों में कांग्रेस की संख्या में कमी हो सकती है। प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ बनने वाले 'इंडिया' मोर्चे के विफल होने के संकेत ग्रह दे रहे हैं। परन्तु कांग्रेस की शक्ति में वृद्धि होगी। आम चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अच्छे बहुमत के साथ विजय प्राप्त करेंगे और पुन: भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे। इन चुनावों के दौरान प्रधानमंत्री मोदी को अपनी सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नामराशि का शनि अढैया का प्रभाव इन्हें संकट में डाल सकता है। वहीं मंगल का प्रभाव लोकसभा चुनाव में सफलता प्राप्ति के साथ देश-विदेश में लोकप्रियता हासिल कराने में सहायक है। शनि के प्रभाव से मोदी की लोकप्रियता एवं न्यायप्रियता के कारण भारत का विश्व में अग्रिम स्थान होगा।

संस्थान के संरक्षक सदस्य

महामंडलेश्वर 1008 अवधूत बाबा श्रीअरुण गिरिजी महाराज ऋषिकेश, **महंत रविंद्रदासजी,** भोपाल **पूर्व चीफ जस्टिस मा. श्री डीपीएस चौहानजी**-प्रयागराज, **जस्टिस श्री अशोक तिवारीजी**-इंदौर, **न्यायाधीश श्री एस.एन. द्विवेदीजी**-भोपाल, **सुश्री अनुराधा त्रिवेदी,** वरिष्ठ पत्रकार भोपाल, **श्री देवकुमार सत्वानीजी**-भोपाल, **श्रीमती किरण गुप्ता** भोपाल, **श्री नीरज पांडेजी इंजी.**-भोपाल, **श्रीमती भावना वालम्बेजी** आईएएस भोपाल, **श्रीमती भूपिन्दर कौर**-समाजसेवी भोपाल, **श्री संजीव शर्माजी** वरिष्ठ इंजी. भोपाल, **श्री आशुतोष गुप्ताजी,** वरिष्ठ पत्रकार भोपाल, **डॉ. अनिल शर्माजी**-भोपाल

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम, ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com पंजीयन क्रमांक 01/01/26063/12

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

सूर्य उत्तरायण

शिशिर ऋतु

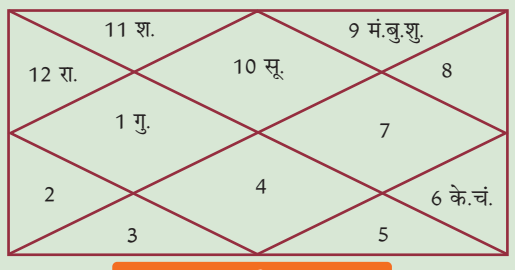

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 फरवरी की

11 श.	10 सू.	9 मं.बु.शु.
12 रा.	1 गु.	8
	4	7
2	3	5
		6 के.चं.

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- मकर में, ता. 13 को 7:50 रात से कुंभ में। **मंगल-** धनु में, ता. 5 को 5:56 शाम से मकर में। **बुध-** धनु में, ता. 1 को 11:24 दिन से मकर में। ता. 19 को 9:12 दिन से कुंभ में। **गुरु-** मेष में, **शुक्र-** धनु में, ता. 11 को 10:17 रात से मकर में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 4 को 3।15 रात से ता. 6 को 3।8 रात तक। ता. 13 को 5।30 सायं से ता. 15 को 2।46 दिन तक। ता. 22 को 5।1 सायं से ता. 24 को 9।34 रात तक।

गुरु-शुक्र तारा - पूर्व दिशा में उदित।

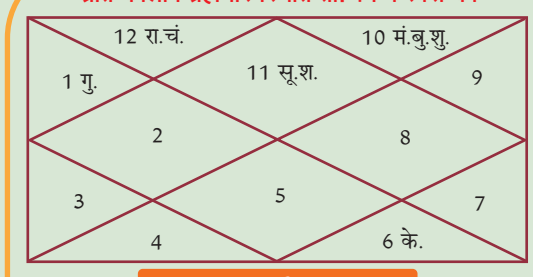

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 14 फरवरी की

12 रा.चं.	11 सू.श.	10 मं.बु.शु.
1 गु.	2	9
	5	8
3	4	7
		6 के.

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा कन्या का, ता. 1 को 10।58 बजे दिन से तुला का। ता. 3 को 8।25 बजे रात से वृश्चिक का। ता. 5 को 3।22 बजे रात से धनु का। ता. 8 को 8।7 बजे प्रातः से मकर का। ता. 10 को 11।13 बजे दिन से कुंभ का। ता. 12 को 1।33 बजे दिन से मीन का। ता. 14 को 4।2 बजे दिन से मेष का। ता. 16 को 7।39 बजे रात से वृष का। ता. 18 को 1।6 बजे रात से मिथुन का। ता. 21 को 8।57 बजे प्रातः से कर्क का। ता. 23 को 7।9 बजे सायं से सिंह का। ता. 26 को 6।51 बजे प्रातः से कन्या का। ता. 28 को 6।17 बजे सायं से तुला का। ता. 1 को 3।59 बजे रात से वृश्चिक का।

शालिवाहन संवत 1945
शंकराचार्य संवत् 2530
श्री महर्षि संवत 107

फरवरी 2024

संवत् 2080
माघ-फाल्गुन मास

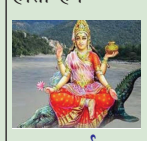

यह पंचांग अवश्य खरीदें। अपने परिचितों, रिश्तेदारों, संबंधियों मित्रों को भेंट करें।
पं. अयोध्या प्रसाद गौतम

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	6	9।46	दिन	माघ कृष्णपक्ष
2	7	11।7	दिन	
3	8	12।1	दिन	
4	9	12।19	दिन	
5	10	12।9	दिन	
6	11	11।31	दिन	
7	12	10।30	दिन	
8	13	8।55	प्रात:	
9	14 30	7।6 5।26	प्रात:	
10	1	2।47	रात	माघ शुक्लपक्ष
11	2	12।25	रात	
12	3	10।4	रात	
13	4	7।46	रात	
14	5	5।37	सायं	
15	6	3।41	दिन	
16	7	2।3	दिन	
17	8	12।47	दिन	
18	9	11।56	दिन	
19	10	11।34	दिन	
20	11	11।44	दिन	
21	12	12।18	दिन	
22	13	1।26	दिन	
23	14	3।1	दिन	
24	15	4।55	सायं	
25	1	7।5	रात	फाल्गुन कृष्णपक्ष
26	2	9।13	रात	
27	3	11।11	रात	
28	4	12।53	रात	
29	5	2।10	रात	

पिछले पृष्ठों की उपयोगी जानकारी अवश्य पढ़ें, ये आपके ज्ञान में वृद्धि करेगी।

ता. 14 बसंत पंचमी
यह पर्व बसंतोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन विद्या की देवी मां सरस्वतीजी की पूजा-आराधना होती है।

ता. 16 नर्मदा प्रकटोत्सव
यह पर्व मोक्ष दायिनी मां नर्मदाजी के प्रकटोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन मां नर्मदा की पूजा की जाती है।

शिव वास अग्नि वास
ता. 3, 6, 11, 15, 18, 22, 28

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

भद्रा

ता. 1 को 9।46 दिन से 10।50 रात्रि तक, ता. 4 को 12।19 बजे रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 5 को सूर्योदय से 12।9 बजे दिन तक। ता. 8 को 8।55 बजे दिन से 8।5 बजे रात्रि तक। ता. 13 को 8।57 बजे दिन से 7।46 बजे रात्रि तक। ता. 16 को 2।3 बजे दिन से 1।26 बजे रात्रि तक। ता. 19 को 11।34 बजे रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 20 को सूर्योदय से 11।44 बजे दिन तक। ता. 23 को 3।1 बजे दिन से 4।2 बजे रात्रि तक। ता. 27 को 10।17 बजे दिन से 11।11 बजे रात्रि तक भद्रा रहेगी। जिसमें शुभ कार्य वर्जित हैं।

वार					
SUNDAY रवि	(भद्रा)	मृत्यु योग **4** माघ कृष्ण 9 — अनुराधा 3।15 रात — भीष्म पितामह जयंती	चंद्रदर्शन **11** माघ शुक्ल 2 — शतभिषा 8।46 रात — पंचक, राक्षस योग	गुप्त नवरात्रि समाप्त **18** माघ शुक्ल 9 — रोहिणी 1।00 दिन — महानंदा नवमी	**25** फाल्गुन कृष्ण 1 — पूर्वा फा. 12।19 रात — छत्र योग
MONDAY सोम	(भद्रा)	पद्म योग **5** माघ कृष्ण 10 — ज्येष्ठा 3।22 रात	**12** माघ शुक्ल 3 — पूर्वा भाद्रपद 7।6 रात — पंचक, मुसल योग	आनंद योग **19** माघ शुक्ल 10 — मृगशिरा 1।16 दिन — छत्रपति शिवाजी जयंती	**26** फाल्गुन कृष्ण 2 — उत्तरा फा. 2।45 रात — श्रीवत्स योग
TUESDAY मंगल	(भद्रा)	एकादशी व्रतं **6** माघ कृष्ण 11 — मूल 3।8 रात — छत्र योग	गणेश चतुर्थी व्रतं **13** माघ शुक्ल 4 — उत्तर भाद्रपद 5।30 सायं — पंचक, कुंभ संक्रांति	जया एकादशी व्रतं **20** माघ शुक्ल 11 — आर्द्रा 2।2 दिन — चर योग	सौम्य योग **27** फाल्गुन कृष्ण 3 — हस्त 5।10 रात अंत — चंद्रशेखर आजाद शा.ति.
WEDNESDAY बुध	(भद्रा)	प्रदोष व्रतं **7** माघ कृष्ण 12 — पूर्वाषाढ़ 2।20 रात — श्रीवत्स योग, तिल द्वादशी	बसंत पंचमी **14** माघ शुक्ल 5 — रेवती 4।2 दिन — पंचक समाप्त	प्रदोष व्रतं. भीष्म द्वादशी **21** माघ शुक्ल 12 — पुनर्वसु 3।18 दिन — गदा योग	गणेश चतुर्थी व्रतं, चंद्रोदय 9।26 **28** फाल्गुन कृष्ण 4 — चित्रा दिनरात — राष्ट्रीय विज्ञान दि.
THURSDAY गुरु	**1** माघ कृष्ण 6 — चित्रा 11।54 रात — धृति योग	शिव चतुर्दशी **8** माघ कृष्ण 13 — उत्तराषाढ़ 1।15 रात — सौम्य योग	शीतला अष्टमी **15** माघ शुक्ल 6 — अश्विनी 2।46 दिन — मानस योग	**22** माघ शुक्ल 13 — पुष्य 5।1 सायं — विश्वकर्मा प्रकटोत्सव	**29** फाल्गुन कृष्ण 5 — चित्रा 6।33 प्रातः — चर योग
FRIDAY शुक्र	मृत्यु बाण आरंभ **2** माघ कृष्ण 7 — स्वाती 1।33 रात — रामानन्दाचार्य जयंती	मौनी अमावस्या **9** माघ कृष्ण 14,30 — श्रवण 11।55 रात — ध्रुव योग	मां नर्मदा प्रकटोत्सव **16** माघ शुक्ल 7 — भरणी 1।48 दिन — अचला सप्तमी	व्रत की पूर्णिमा **23** माघ शुक्ल 14 — श्लेषा 7।9 रात	**पंचक** ता. 10 को 11।13 बजे दिन से प्रारंभ होकर ता. 14 को 4।2 बजे दिन को पंचक समाप्त होंगे।
SATURDAY शनि	अनवष्टिका श्राद्ध **3** माघ कृष्ण 8 — विशाखा 21।38 रात — शुभ योग	गुप्त नवरात्रारंभ **10** माघ शुक्ल 1 — धनिष्ठा 10।24 रात — पंचक प्रारंभ	भीष्माष्टमी **17** माघ शुक्ल 8 — कृतिका 11।12 दिन — ध्वज योग	स्नानदान पूर्णिमा **24** माघ शुक्ल 15 — मघा 9।34 रात — संत रविदास जयंती	पंचांग में दिन एवं तारीख का प्रारंभ सूर्योदयकाल से माना जाता है।

मुहूर्त

विवाह- ता. 3, 4, 5, 6, 7, 12, 13, 14, 17, 18, 19, 23 से 27, 29
नामकरण- ता. 8, 14, 19, 21, 22, 26, 29 **कूप खनन** -ता. 22
कर्णभेद - ता. 15, 21, 22
मुंडन -ता. 5, 14, 19, 21, 22
अक्षरारंभ- ता. 15, 21
अन्नप्राशन- ता. 21, 22
सीमांत पुंसवन- ता. 6, 27
नवीन वस्त्र- ता. 3, 14, 20 से 22, 27
प्रसूति स्नान- ता. 4, 27
गृहारंभ- ता. 21, 22, 26
व्यापार आरंभ- ता. 14, 15, 21, 22
वाहन क्रय- ता. 4, 14, 15, 21
देव प्रतिष्ठा- ता. 15, 21, 22
शल्यक्रिया- ता. 4, 22, 27
वाटिका रोपण- ता. 4, 15, 22
औषधि सेवन- ता. 4, 14, 15, 21
यात्रा- ता. 4, 14, 21, 22, 26, 27
धान्य छेदन- ता. 5, 15, 17, 19, 22
उपनयन- ता. 19, 20, 21
नवान्य भक्षण-ता. 4, 21, 22
गृह प्रवेश- ता. 1, 8, 14
वस्तु विक्रय - ता. 14, 15, 22, 25, 27
शस्त्र निर्माण- ता. 6, 20, 24, 25
पशु क्रय-विक्रय- ता. 5, 14,
द्विरागमन - ता. 14, 15, 21 से 23, 26

राशिफल

मेष - पुत्र सुख, प्रापर्टी से लाभ, रोग।
वृष- शरीर कष्ट, तनाव, स्थानांतरण।
मिथुन - चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
कर्क - सहयोग मिलेगा, व्यर्थ की चिंता।
सिंह - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कन्या - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
तुला -पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
वृश्चिक - प्रतिष्ठा में वृद्धि, भूमि लाभ, यात्रा।
धनु - धोखा परेशानी, स्वास्थ्य चिंता।
मकर- मेहमान आगमन, मतभेद बढ़ेगा।
कुम्भ- लाभ, बेवजह तनाव, श्रम अधिक।
मीन- धन लाभ, मतभेद, शुभ समाचार।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 4 विश्व कैंसर दिवस
ता. 6 लतामंगेश्कर पुण्यतिथि
ता. 11 पं. दीनदयाल उपाध्याय पु.ति.
ता. 15 कवि शुभद्रा कुमार चौहान पुति, देवनारायण जयंती
ता. 19 गुरु गोलवलकर जयंती
ता. 24 शबरी जयंती, संत रविदास जयंती
ता. 26 वीर सावरकर पुण्य तिथि

शुभ योग

सर्वार्थसिद्धि योग- ता 9 को सूर्योदय से 11।55 बजे रात्रि तक। ता 13 को सूर्योदय से 5।30 बजे सायं तक। ता 15 को सूर्योदय से 2।46 बजे दिन तक। ता. 17 को 1।12 दिन से रात्रि अंत, ता. 19 को सूर्योदय से 1।16 दिन, ता. 22 को सूर्योदय से 5।1 सायंकाल तक।ता 25 को 12।9 बजे रात से रातअंत तक।

अमृतसिद्धि योग- ता 17 को 1।12 बजे दिन से रातअंत तक। ता 19 को सूर्योदय से 1।16 बजे दिन तक। ता 22 को सूर्योदय से 5।1 बजे सायं तक।

रवियोग- ता 1 को सूर्योदय से रात्रि 11।54 बजे तक। ता 12 को रात्रि 7।6 बजे से रात्रिअंत ता 13 को सूर्योदय से सायं 5।30 बजे तक। ता 14 को दिन 4।2 बजे से रात्रिअंत ता 15 को सूर्योदय से दिन 2।46 बजे दिन तक। ता 17 को दिन 1।12 बजे से रात्रिअंत ता. 18 को सूर्योदय से रात्रिअंत तक। ता 19 को सूर्योदय से दिन 1।16 बजे दिन तक। ता 20 को दिन 2।2 से रात्रिअंत तक। ता 22 को सायं 5।1 बजे से रात्रिअंत ता 23 को सूर्योदय से रात्रि 7।9 बजे तक।

त्रिपुष्कर योग - ता. 11 को 8।46 रात से रात्रि अंत, ता. 20 को 2।2 दिन से रात अंत तक। **गुरु पुष्य योग** - ता. 22 को सूर्योदय से 5।1 सायं तक।

भोपाल

सूर्योदय	ता.	1-6.31	7-6.27	13-6.24	19-6.20	25-6.16	28-6.14
सूर्यास्त	ता.	1-5.29	7-5.33	13-5.36	19-5.40	25-5.44	28-5.46

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

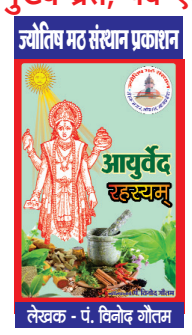

ता. 6 षटतिला एकादशी व्रतं
ता. 7 प्रदोष व्रतं, तिल द्वादशी
ता. 8 शिव चतुर्दशी
ता. 9 स्नानदान मौनी अमावस्या
ता. 10 गुप्त नवरात्रि आरंभ
ता. 13 तिल, कुद, वरद चतुर्थी व्रतं
ता. 14 वसंत पंचमी
ता. 15 शीतलाषष्ठी
ता. 16 अचला सप्तमी
ता. 17 भीमाष्टमी

ता. 18 नवमी, गुप्त नवरात्रि समाप्त
ता. 20 जया एकादशी व्रतं
ता. 21 प्रदोष व्रतं, तिल द्वादशी
ता. 24 स्नानदान माघ पूर्णिमा व्रतं
ता. 28 गणेश चतुर्थी व्रतं

जैन व्रत-पर्व

ता. 8 मेरू तेरस
ता. 9 रिषभदेव निर्मोत्सव,
ता. 18 रोहिणी व्रतं
ता. 23 पाक्षिक प्रतिक्रमण

कुभ संक्रांति फलं

ता. 13 को 7:50 रात से कुंभ संक्रांति होगी। माघ शुक्ल चतुर्थी मंगलवार को भगवान सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। कुंभ संक्रांति वृद्धावस्था में बैठी हुई स्थिति में अकी है। जिससे धान्यादि के भाव में समता रहेगी। इस माह में गेहूं, बाजरा, मूंग, चना, मोठ, अलसी, तिहलन, मक्का, मटर एवं सोना-चांदी के भाव में तेजी होगी। रसक पदार्थ में घटा-बढ़ी बनी रहेगी।

मास फल

इस माह चतुर्ग्रही योग का प्रभाव एवं उच्चस्थ मंगल पश्चिमी राष्ट्रों में अशांति का वातावरण निर्मित करेगा। विश्व के पश्चिमी भूभाग में रोग-वृद्धि एवं प्राकृतिक आपदा से प्रजा में भय व्याप्त होगा। शेयर बाजार में तेजी, इमारती सामान में महंगाई, हिमपात एवं ओलावृष्टि से हानि तथा कुछ राजनेताओं को संकट का सामना करना पड़ सकता है। इस माह राजनैतिक गलियारों में आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलेगा। मकर राशि में चतुर्ग्रही योग देश-दुनिया में अशांति कारक है।

पंचांग के पिछले पृष्ठों पर ज्ञानवर्धक जानकारी अवश्य पढ़े।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरु नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

आपकी राशि इस वर्ष क्या बोलती है?

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम
ज्योतिष मठ संस्थान,
ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल
मोबा. 9827322068

मेष
राशि स्वामी : मंगल
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

इस वर्ष आपकी राशि के स्वामी ग्रह मंगल वर्ष की शुरुआत में धनु राशि में आपके नवम भाव में सूर्य के साथ स्थित होंगे जिससे लंबी यात्राओं के योग बनेंगे। आपके सम्मान में बढ़ोतरी होगी। समाज में आपको एक अच्छा ओहदा मिल सकता है। आप धर्म-कर्म के मामलों में भी व्यस्त रहेंगे। व्यापार में उन्नति के अच्छे योग बनेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। बृहस्पति वर्ष की शुरुआत में आपके प्रथम भाव में बने रहकर आपके प्रेम भाव, आपके वैवाहिक जीवन, आपके व्यापार और आपके धर्म के भाव को मजबूत बनाएंगे जिससे आपको इन सभी क्षेत्रों में अनुकूल परिणामों की प्राप्ति होगी। इसके बाद 1 मई को बृहस्पति आपके दूसरे भाव में जाकर आर्थिक उन्नति के योग बनाएंगे। इस राशि के प्रेमी जातकों के जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। शनि आपके प्रेम की परीक्षा लेंगे इसलिए आपको सच्चाई के साथ अपने रिश्ते में बने रहना होगा। जो लोग अकेले हैं, उनके जीवन में इस वर्ष प्यार आ सकता है। अगस्त से अक्टूबर के बीच प्रियतम के साथ अनुकूल संबंध रहेंगे और साथ में घूमने फिरने जा सकते हैं। करियर के मामले में कुछ बदलाव देखने को मिल सकते हैं। दशम भाव के स्वामी शनि देव जी के एकादश भाव में बने रहने से करियर में स्थायित्व आएगा और आपको अच्छी पदोन्नति के योग भी बनेंगे। विद्यार्थियों की बुद्धि का तीव्र विकास होगा और इससे आपको पढ़ाई में अच्छी सफलता मिलेगी। बृहस्पति का प्रभाव आपको अच्छा विद्यार्थी बनाने में मदद करेगा। पारिवारिक जीवन में वर्ष की शुरुआत अनुकूलता लेकर आएगी। पारिवारिक सामंजस्य बना रहेगा लेकिन वर्ष के अंतिम महीनों में माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा।

वृष
राशि स्वामी : शुक्र
ई, ऊ, ए, ओ, व, वी, वू, वे, वो

वर्ष के शुरु में बृहस्पति द्वादश भाव में बने रहकर खर्चों में बढ़ोतरी करेंगे लेकिन आप धर्म कर्म और अच्छे कार्यों में भी लगे रहेंगे। मई के बाद बृहस्पति आपकी राशि में आ जाएंगे। तब इन समस्याओं में कमी आएगी लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य पर थोड़ा ध्यान देना पड़ेगा। योगकारक ग्रह शनि देव जी के पूरे वर्ष दशम भाव में रहने से आप मेहनत भी कराएंगे। अच्छा प्रतिफल भी मिलेगा। भाग्य और कर्म का संबंध बनने से आपको अपने करियर में राज योग का प्रभाव मिलेगा। करियर में उन्नति होगी। राहु की उपस्थिति पूरे वर्ष आपके एकादश भाव में बनी रहेगी जिससे मनचाही इच्छाओं की पूर्ति होगी। सामाजिक तौर पर आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। दोस्तों और सामाजिक दायरे में बढ़ोतरी होगी। आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा। करियर में सुखद और आशा जनक परिणामों की प्राप्ति होगी। मेहनत का लाभ मिलेगा। इस वर्ष अच्छी उन्नति के योग बन रहे हैं। मार्च से अप्रैल और दिसंबर के महीने में अच्छी उन्नति हो सकती है। विद्यार्थियों को शिक्षा में समस्याएं आ सकती हैं लेकिन कुछ विशेष विषयों में आप की पकड़ मजबूत बनेगी। वित्तीय तौर पर आपको लाभ मिलता रहेगा और आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। गुप्त धन प्राप्ति के योग भी वर्ष की शुरुआत में आपको मिल सकते हैं लेकिन खर्च भी बने रहने की संभावना है। पारिवारिक जीवन को देखें तो वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी लेकिन आपके माताजी और पिताजी के स्वास्थ्य समस्याएं बनी रह सकती हैं। वैवाहिक जीवन में जीवनसाथी की शारीरिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। वर्ष की शुरुआत में बुध और शुक्र सप्तम भाव में, द्वादश भाव में बृहस्पति, दशम भाव में शनि और राहु एकादश भाव में होने से व्यापार के लिए आदर्श स्थितियों का निर्माण करेंगे।

मिथुन
राशि स्वामी : बुध
का, की, कु, के, को, घ, ङ, छ, हा

इस वर्ष ग्रहों की स्थिति बता रही है कि वर्ष की शुरुआत आपके लिए अनुकूल रहेगी। बृहस्पति एकादश भाव में विराजमान होकर अनेक सफलताएं प्रदान करेंगे। आर्थिक रूप से यह बहुत मजबूती प्रदान करेंगे। प्रेम संबंधों में भी प्रेम को बढ़ाते रहेंगे। वैवाहिक संबंधों में भी समस्याओं में कमी आएगी। शनि भाग्य के स्वामी होकर भाग्य स्थान में रहकर आपके भाग्य की वृद्धि करेंगे जिससे रुके हुए कार्य भी बनने लगेंगे। आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। राहु और केतु आपके दशम और चतुर्थ भाव में रहेंगे जो शारीरिक रूप से समस्याएं दे सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी अशांति पैदा हो सकती है। वर्ष की शुरुआत में सूर्य और मंगल सप्तम भाव में होने से वैवाहिक जीवन में कुछ तनाव बढ़ सकता है और व्यापार में भी उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। बुध और शुक्र वर्ष की शुरुआत में छठे भाव में होकर खर्चों में तेजी ला सकते हैं। स्वास्थ्य को पूरी तरह से ध्यान देकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। प्रेम संबंधों के लिए वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी। बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव पर रहने से प्रेम विकसित होगा और इस वर्ष आप अपने प्रियतम से प्रेम विवाह करने में सफल हो सकते हैं। नौकरी में स्थानांतरण संभव हो सकता है। मार्च से अक्टूबर के बीच आपको नौकरी में बदलाव का अवसर मिल सकता है। विद्यार्थियों को शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। चौथे भाव में केतु पारिवारिक समस्याओं को बढ़ाएंगे जिसका असर आपकी पढ़ाई पर पड़ सकता है। हालांकि बृहस्पति उसमें आपकी मदद करेंगे और पढ़ने में दिमाग लगाने में आपको फायदा होगा। पारिवारिक जीवन में तनाव बढ़ सकता है, इसका ध्यान रखें।

कर्क
राशि स्वामी : चंद्र
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

वर्ष की शुरुआत में बृहस्पति दशम भाव में विराजमान हो कर आपके करियर और परिवार के बीच संतुलन स्थापित करने में आपकी मदद करेंगे और इस वर्ष शनि अढ़ैया का प्रभाव आपकी राशि पर पूरे वर्ष रहेगा। मई के बाद यह आपके ग्यारहवें भाव में जाकर आपकी आमदनी में वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेंगे। धर्म-कर्म के मामले में आपकी रुचि जागेगी। राहु पूरे वर्ष आपके नवम भाव में बने रहेंगे जिससे आपको तीर्थ स्थानों के दर्शन और विशेष नदियों में स्नान करने का मौका मिल सकता है। लंबी यात्राओं के योग बनेंगे। यह वर्ष यात्राओं से भरा रहने वाला है। वर्ष की शुरुआत में शुक्र और बुध पंचम भाव में विराजमान रहेंगे। इसके परिणाम स्वरूप यह समय प्रेम और आर्थिक लिहाज से अनुकूल रहेगा। सूर्य और मंगल के छठे भाव में और शनि के आठवें भाव में होने से स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के प्रति आपको सावधानी रखनी होगी और खर्चों पर नियंत्रण रखने के लिए प्रयास करने होंगे।वर्ष की शुरुआत खूबसूरती लेकर आएगी। बुध और शुक्र जैसे शुभ ग्रह प्रेम भाव में रहेंगे। आपके प्रेम जीवन में नई ऊर्जा बढ़ेगी। रूमानियत बढ़ने से आपका रिश्ता खूब मजबूत होगा। इस वर्ष आप एक-दूसरे से विवाह करने के बारे में विचार कर सकते हैं। करियर के मामले में वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी। शनि अष्टम भाव से लेकर दशम भाव में दृष्टि डालेंगे जिससे आपको काम का दबाव तो रहेगा लेकिन आप खूब मेहनत करेंगे और नौकरी में अपनी स्थिति को परिपक्व बनाएंगे। अचानक से आपको कोई बड़ा लुभावना पद यानी कि पदोन्नति का लाभ मिल सकता है। मई में बृहस्पति के एकादश भाव में जाने से वरिष्ठ अधिकारियों से बेहतर संबंध बनेंगे जिसका समय समय पर आपको नौकरी में लाभ होगा। वर्ष की शुरुआत विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगी।

सिंह
राशि स्वामी : सूर्य
म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे

यह साल सिंह जातकों के लिए अनुकूलता लेकर आने वाला है। पूरे वर्ष शनि आपके सप्तम भाव में विराजमान रहेंगे जिससे आपके वैवाहिक जीवन को मजबूत बनाएंगे और आपके जीवन साथी के व्यक्तित्व में सुधार होगा। वह मजबूत व्यक्तित्व के स्वामी बनेंगे। इसके अतिरिक्त आपके व्यापार में भी स्थाई वृद्धि होने के योग बनेंगे। आप चाहें तो व्यापार का विस्तार भी कर सकते हैं। लंबी - लंबी यात्राएं इस वर्ष आपको करने का मौका मिलेगा। विदेश जाने के मौके भी मिल सकते हैं। बृहस्पति वर्ष की शुरुआत में नवम भाव में रहकर आपको सही निर्णय लेने में मदद करेंगे। धर्म कर्म के कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी और घर पर ही कार्यक्रमों का आयोजन होगा। आपके पिताजी से आपके संबंध सुधरेंगे। उसके बाद 1 मई को बृहस्पति दशम भाव में जाकर परिवार और काम के बीच स्थितियों को सुधारेंगे। राहु के पूरे साल अष्टम भाव में बने रहने से आपको स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ेगा। शुरूआत प्रेम जीवन में कुछ परेशानी जनक हो सकती है। सूर्य और मंगल वर्ष की शुरुआत में पंचम भाव में रहकर आपके प्रेम संबंधों को खराब करेंगे लेकिन बृहस्पति नवम भाव से देखकर धीरे-धीरे शांति लाते जाएंगे और आप अपने रिश्ते को मजबूती दे पाएंगे। नौकरी में अच्छी सफलता मिलने के योग बनेंगे। व्यापार करने वाले जातकों को भी इस वर्ष अच्छी सफलता मिलने के योग बन रहे हैं। वर्ष की शुरुआत विद्यार्थियों के लिए कुछ कमजोर रह सकती है। पढ़ाई पर आपका ध्यान रहेगा और आप दिल से पढ़ना चाहेंगे लेकिन गरम प्रकृति के ग्रहों का प्रभाव स्वास्थ्य बिगाड़ सकता है और आपके आसपास की परिस्थितियों में बदलाव ला सकता है। इसी के कारण आपकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
राशि स्वामी : बुध
टो, पा, पी, पू, पे, पो, ष, ण, ठ

इस वर्ष आपको ग्रहों के गोचर के अनुसार अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ेगी। वर्ष की शुरूआत से ही शनि आपके छठे भाव में विशेष रूप से विराजमान रहकर आपके आठवें और बारहवें भाव को भी देखेंगे। इससे आपको स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है लेकिन यही शनि इन समस्याओं से मुक्ति दिलाने में भी मददगार बनेंगे, बस आपको एक संतुलित और अनुशासित जीवन व्यतीत करना होगा और अच्छी दिनचर्या का पालन करना होगा। जीवन में अनुशासन लाने से आपके सभी काम बनने लगेंगे। शनिदेव की स्थिति नौकरी में अच्छी सफलता दिला सकती है। आपको संतान संबंधी सुखद समाचार भी मिलने की संभावना बनेगी। राहु पूरे वर्ष आपके सप्तम भाव में बने रहेंगे इसलिए आपको व्यापार और निजी जीवन दोनों क्षेत्रों में सावधानी बरतनी होगी। कन्या राशि के प्रेमी जातकों के लिए वर्ष की शुरुआत मध्यम रहेगी। भावनाओं को नियंत्रण में रखना आपके लिए बेहद आवश्यक होगा और प्रियतम को कुछ भी कह देना उनसे आपके रिश्ते को बिगाड़ सकता है। सूर्य और मंगल जैसे ग्रहों का प्रभाव चतुर्थ भाव में वर्ष की शुरुआत में रहेगा जिससे पारिवारिक जीवन में कुछ तनाव बढ़ेगा और इसका असर प्रेम जीवन पर भी पड़ सकता है। वर्ष की शुरुआत में बुध और शुक्र तीसरे भाव में रहकर दोस्तों से अच्छे संबंध बनाएंगे और आपका कोई दोस्त भी आपका खास बन सकता है। शनि की कृपा से और वर्ष की शुरुआत में सूर्य और मंगल के प्रभाव से नौकरी में स्थितियां अनुकूल रहेंगी, बस किसी से भी कहासुनी करने से बचें। व्यापार में सफलता के लिए राहु का मार्गदर्शन आपको मिलेगा लेकिन किसी भी तरह के शॉर्टकट से बचें और बिना सोचे समझे कहीं भी हाथ डालने से बचें, तभी व्यापार आगे बढ़ पाएगा।

तुला
राशि स्वामी : शुक्र
रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला राशि के जातकों को पूरे वर्ष मेहनत, कार्यकुशलता और इमानदारी पर विश्वास रखना होगा क्योंकि वर्ष की शुरुआत से पूरे वर्ष शनि आपके पंचम भाव में रहेंगे और वहां से आपके सप्तम, एकादश और द्वितीय भाव पर दृष्टि बनाए रखेंगे। आप जितना ईमानदारी और मेहनत से काम करेंगे, उतना ही आपका वैवाहिक जीवन और आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। बृहस्पति मई तक आपके सप्तम भाव में रहकर प्रथम, तृतीय और एकादश भाव को देखेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य सुधरेगा। आपके व्यापार और निजी संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी तथा आपकी आमदनी अच्छे से बढ़ने लगेगी लेकिन मई में बृहस्पति अष्टम भाव में जाएंगे जिससे खर्चों में बढ़ोतरी होने के योग बनेंगे। हालांकि आपका धर्म-कर्म में मन लगेगा लेकिन खर्च ज्यादा बढ़ने से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। राहु पूरे महीने आपके छठे भाव में बने रहेंगे इसलिए स्वास्थ्य समस्याएं सामने आएंगी लेकिन वे आती-जाती रहेंगी। खर्चों पर नियंत्रण रखना आपके लिए थोड़ा चुनौती पूर्ण होगा। तुला राशि के जातकों के प्रेम संबंधों के लिए वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी। दूसरे भाव में शुक्र और बुध मीठा बोलने वाला बनाएंगे जिससे आप अपने प्रियतम और किसी को भी अपना बनाने में सफल रहेंगे। बृहस्पति की कृपा से और शनि की उपस्थिति से नई नौकरी प्राप्त हो सकती है और पुरानी नौकरी में भी धीरे-धीरे वरिष्ठ अधिकारियों की प्रसन्नता से आपको पद की प्राप्ति होने के योग बन सकते हैं। मार्च और अप्रैल के महीने में थोड़ी सावधानी बरतें। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष चुनौतियों से भरा रहने वाला है। शनि कठिन मेहनत की ओर इशारा करते हैं। जितनी ज्यादा मेहनत और प्रयास करेंगे, उतनी ही अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वृश्चिक
राशि स्वामी : मंगल
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

पूरे वर्षभर आपकी राशि पर अढैया शनि का प्रभाव रहेगा। वर्ष की शुरुआत में शुक्र और बुध आपकी ही राशि में रहकर आपको खुशनुमा बनाएंगे। आपका व्यवहार और चुंबकीय व्यक्तित्व आकर्षण का केंद्र बनेगा। लोग आपकी ओर खिंचे चले आएंगे। राहु पूरे साल आपके पंचम भाव में बने रहेंगे और आपकी बुद्धि को प्रभावित करेंगे। जल्दबाजी में आकर कोई भी गलत निर्णय लेने से बचने की कोशिश करें। प्रेम संबंधों में राहु की मौजूदगी आपको और कुछ भी करने वाला बना सकती है। वृश्चिक राशि के जातक प्रेम संबंधों में वर्ष की शुरुआत में अनुकूलता महसूस करेंगे। बुध और शुक्र प्रथम भाव में और पंचम भाव में राहु की उपस्थिति प्यार बढ़ाने में मदद करेंगे। इससे आपके प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। अप्रैल से जून के बीच का समय मंगल के पंचम भाव में राहु के ऊपर गोचर के कारण अनुकूल नहीं रहेगा। इस दौरान बहुत सावधानी बरतें, शेष समय आपको सफलता देगा। रोजगार की बात करें तो आपके रोजगार में इस वर्ष स्थायित्व आएगी। जिस नौकरी में आप लगे हुए हैं, उसी में लगे रहना आपको सफलता भी देगा। बीच-बीच में नौकरी बदलने के योग बनेंगे। यदि आप चाहें तो अपनी सुविधानुसार नौकरी बदल सकते हैं। हालांकि नौकरी में पदोन्नति अक्टूबर के बीच मिल सकती है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष मिश्रित परिणाम देने वाला रहेगा। राहु पंचम भाव में रहकर बुद्धि को तेज बनाएंगे। शिक्षा की ओर मुड़ना आपके लिए चुनौती होगा। पारिवारिक तौर पर यह वर्ष मध्यम रहेगा। शनि चौथे भाव में रहकर आपको अति व्यस्त बनाएंगे जिससे परिवार को कम समय दे पाएंगे। किसी से भी कड़वा बोलना आपके लिए ठीक नहीं होगा। इससे रिश्ते बिगड़ सकते हैं। इस वर्ष आपका वैवाहिक जीवन उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा।

धनु
राशि स्वामी : गुरू
ये, यो, भा, भी, भू, भे, फा, ढा, ध

धनु राशि के जातकों के लिए यह साल उम्मीदों से भरा रहने वाला है लेकिन वर्ष की शुरुआत में सूर्य और मंगल आपकी राशि में रहकर आपको गर्म दिमाग बनाएंगे। आपको उग्रता में आकर कुछ भी बोलने और कोई भी व्यवहार या निर्णय लेने से बचना चाहिए क्योंकि इससे आपका न केवल व्यापार और बल्कि आपका निजी जीवन भी प्रभावित हो सकता है। वर्ष की शुरुआत में बृहस्पति आपके पंचम भाव में विराजमान रहेंगे। आपके प्रेम संबंधों को सुधारेंगे। आपके भाग्य की बढ़ोतरी करेंगे और आपकी आमदनी में भी अच्छी उन्नति देखने को मिलेगी। संतान से संबंधित अच्छे समाचार मिल सकते हैं या संतान हो सकती है। विद्यार्थियों को भी अच्छे परिणाम मिलेंगे। शनि पूरे वर्ष तीसरे भाव में रहकर आपको साहस और पराक्रम देंगे। यदि आप इस वर्ष अपने आलस्य को छोड़ देंगे तो जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर पाएंगे। राहु पूरे वर्ष आपके चौथे और केतु दशम भाव में बने रहेंगे जिससे जीविका में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी और पारिवारिक संबंधों में भी रस्साकशी की स्थिति बन सकती है। प्रेम संबंधों के लिए वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी। बृहस्पति पंचम भाव में बैठकर प्रेम जीवन को खुशियों से भरा बनाएंगे। हालांकि आपकी राशि में उपस्थित मंगल और सूर्य के कारण उग्रता में आकर कुछ कठिन परिस्थितियों को जन्म दे सकते हैं। इनसे बचने की कोशिश करेंगे तो यह वर्ष आपको प्यार में बहुत कुछ प्रदान करेगा। नौकरी के लिए वर्ष उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है। रोजगार में आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आपके सामने कई बार ऐसी स्थिति आएगी कि जब आपका मन काम में नहीं लगेगा लेकिन किसी भी तरह की गड़बड़ी करने से बचें।

मकर
राशि स्वामी : शनि
भो, जा, जी, खा, खी, खू, खो, गा, गी

यह वर्ष मकर राशि वालों के लिए आर्थिक रूप से अनुकूल परिणाम लेकर आने वाला है। आपके राशि स्वामी आपके दूसरे भाव के स्वामी भी हैं। साढ़े साते का प्रभाव उतरता हुआ रहेगा। वहीं शनि दूसरे भाव में पूरे वर्ष बने रहने के कारण आर्थिक रूप से आपको मजबूत बनाते रहेंगे। आप चुनौतियों से डरेंगे नहीं और उनका डटकर सामना करेंगे। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। बृहस्पति मई तक चौथे भाव में रहकर पारिवारिक जीवन में खुशियां लेकर आएंगे और करियर को भी सफलता देंगे। मई से आपके पंचम भाव में जाकर संतान संबंधित समाचारों के कारण बन सकते हैं। पूरे वर्ष आपके तीसरे भाव में रहकर आपके जोखिम लेने की प्रवृत्ति को बढ़ाएंगे और आपके व्यापार में भी आपको अच्छी सफलता प्रदान कर सकते हैं। दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करने से बचना आपके लिए सफलता दायक होगा। आपको अपने परिवार को जोड़कर रखने के लिए प्रयास करने होंगे और आपके प्रयास करने से आपको इस वर्ष सफलता भी मिल सकती है। वर्ष की शुरुआत प्रेम संबंधों के लिए अनुकूल रहेगी। एक दूसरे पर विश्वास बढ़ेगा। रोजगार में अच्छी सफलता इस वर्ष आपको मिल सकती है जबकि विद्यार्थियों को मेहनत और एकाग्रता से आगे बढ़ने पर दक्षता बढ़ेगी और पढ़ाई में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा वाले विद्यार्थियों को कुछ व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। वैवाहिक जीवन में कुछ सावधानियां रखनी आवश्यक होंगी। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। हल्की - फुल्की समस्याएं बीच-बीच में परेशान कर सकती हैं।

कुंभ
राशि स्वामी : शनि
गू, गे, गो, दा, सा, सी, सू, से, सो

कुंभ राशि के ऊपर हृदय का साढ़े साती शनि प्रभाव चल रहा है। जातकों के लिए यह वर्ष बहुत कुछ प्रदान करने वाला वर्ष साबित होगा। आपके राशि स्वामी शनि आपकी ही राशि में पूरे वर्ष बने रहेंगे। यह आपके लिए हर तरीके से शुभ परिणाम लेकर आएगा। आपके जीवन में अनुशासन बढ़ेगा। आप हर काम को पूरी लगन और मेहनत से करेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में भी अपना अच्छा स्थान बना पाएंगे। आपकी मेहनत आपको अन्य लोगों से आगे रखेगी। बृहस्पति मई तक आपके तीसरे भाव में रहकर आपकी आमदनी में बढ़ोतरी का कारण बनेंगे और आपके वैवाहिक जीवन में भी अनुकूल समय की आहट होगी। व्यापार में वृद्धि के योग बनेंगे और भाग्य वृद्धि होगी। मई के बाद बृहस्पति चतुर्थ भाव में जाकर पारिवारिक संबंधों को अनुकूल बनाने के लिए आपकी मदद करेंगे। वर्ष की शुरुआत में सूर्य और मंगल के प्रभाव के कारण प्रेम संबंधों में कुछ तनाव बढ़ सकता है, जो वर्ष के उत्तरार्ध में अनुकूल हो जाएगा। आप अपना रिश्ता निभाने की सच्ची कोशिश करेंगे जो धीरे-धीरे कामयाब होगी और प्रेम संबंध प्रगाढ़ होंगे। करियर के मामले में आपको अच्छी सफलता मिलेगी। शनि आप से मेहनत कराएंगे जो आपको नौकरी और व्यापार दोनों ही क्षेत्रों में अच्छी सफलता प्रदान करेगी। विद्यार्थियों को जागरूकता की कमी से जूझना पड़ेगा और इस साल की शुरुआत कुछ कमजोर रहेगी। आगे वर्ष के बीच में परीक्षा में सफलता के योग बन रहे हैं। वित्तीय तौर पर यह वर्ष उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है। धन व्यय करने पर ध्यान दें। पारिवारिक जीवन अनुकूल रहेगा। वैवाहिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहने की संभावना है। स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूलता रहेगी।

मीन
राशि स्वामी : गुरू
दी, दू, दे, दो, चा, ची, थ, झ, त्र

मीन राशि वालों को इस वर्ष सिर पर चढ़ते हुए साढ़ेसाती का प्रभाव चल रहा है। आपकी राशि के स्वामी बृहस्पति वर्ष की शुरुआत से ही आपके दूसरे भाव में रहेंगे और आपके धन और आपके कुटुंब की रक्षा करेंगे। आपकी वाणी में मिठास बढ़ेगी जिससे आपके रिश्ते मजबूत होंगे। धन संचित करने में आपको सफलता मिलेगी। केवल इतना ही नहीं, ससुराल पक्ष से भी आपके संबंध बढ़िया होने लगेंगे। बृहस्पति मई को तीसरे भाव में चले जाएंगे जिससे आपके व्यापार में बढ़ोतरी होगी। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म के मामलों में मन लगेगा। शनि पूरे वर्ष द्वादश भाव में बने रहने से आपको अपने खर्चों पर ध्यान देना होगा क्योंकि कोई न कोई खर्च पूरे वर्ष लगा रहने वाला है। विदेश यात्रा इस वर्ष होने के प्रबल योग हैं इसलिए इसकी तैयारी पूरी करके रखें। राहु प्रथम भाव में और सप्तम भाव में केतु का गोचर बना रहने से वैवाहिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थितियां बनती रहेंगी। वर्ष की शुरुआत प्रेम संबंधों के लिए अनुकूल रहेगी। मंगल की दृष्टि पंचम भाव पर होने पर हल्की-फुल्की समस्याएं आ सकती हैं। वर्ष के बीच में थोड़ी सावधानी रखनी होगी, जब सूर्य और मंगल का प्रभाव रिश्तों में खटास बढ़ा सकता है। आपके प्रियतम को इस वर्ष स्वास्थ्य समस्याएं परेशान कर सकती हैं। वर्ष का मध्य अनुकूल रहेगा। करियर के मामले में यह वर्ष अनुकूलता लेकर आ रहा है। आप अपनी नौकरी में अच्छा काम करेंगे और आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आप से संतुष्ट रहेंगे। आपको काम के सिलसिले में विदेश जाने का मौका भी मिल सकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष की शुरुआत अनुकूल रहेगी। समस्याओं के बावजूद आप पढ़ाई पर ध्यान देकर अच्छा प्रदर्शन करने में कामयाब रहेंगे।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 मार्च की

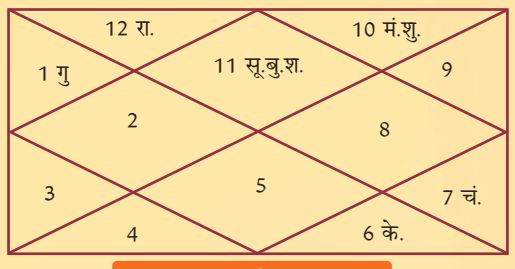

12 रा.	11 सू.बु.श.	10 मं.शु.
1 गु	2	9
3	5	8
4	6 के.	7 चं.

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- कुंभ में, ता. 14 को 3:03 दिन से मीन में। **मंगल-** मकर में, ता. 15 को 5:11 शाम से कुंभ में। **बुध-** कुंभ में, ता. 7 को 10:10 दिन से मीन में। ता. 25 को 8:10 रात्रि से मेष में। **गुरु-** मेष में, **शुक्र-** मकर में, ता. 7 को 2:2 दिन से कुंभ में। ता. 31 को 7:51 प्रातः से मीन में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 3 को 10। 54 दिन से ता. 5 को 10। 54 दिन तक। ता. 11 को 1।37 रात से ता. 13 को 10।48 रात तक। ता. 20 को 12।22 रात. से ता. 22 को 4।47 रात तक। ता. 30 को 6।31 सायं से शुरु होंगे।

गुरु शुक्र तारा- पूर्व दिशा में उदित

सूर्य उत्तरायन

शिशिर ऋतु
ता. 15 से बसंत ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 15 मार्च की

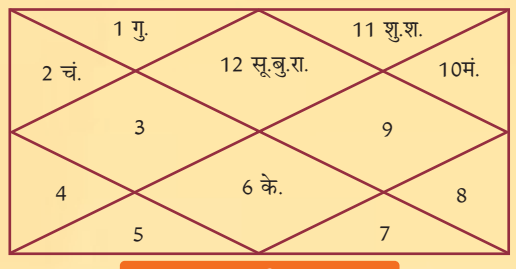

1 गु.	12 सू.बु.रा.	11 शु.श.
2 चं.	3	10मं.
4	6 के.	9
5	7	8

चंद्र परिवर्तन स्थिति

ता. 1 को 3।59 बजे रात से वृश्चिक का। ता. 4 को 11।8 बजे दिन से धनु का। ता. 6 को 4।5 बजे दिन से मकर का। ता. 8 को 7।19 बजे सायं से कुंभ का। ता. 10 को 9। 42 बजे रात से मीन का। ता. 12 को 12।6 बजे रात से मेष का। ता. 14 को 3।35 बजे रात से वृष का। ता. 17 को 8। 49 बजे प्रातः से मिथुन का। ता. 19 को 4। 28 बजे दिन से कर्क का। ता. 21 को 2।25 बजे रात से सिंह का। ता. 24 को 2।3 बजे दिन से कन्या का। ता. 26 को 1। 37 बजे रात से तुला का। ता. 29 को 11।29 बजे दिन से वृश्चिक का। ता. 31 को 6।52 बजे सायं से धनु का।

शालिवाहन संवत 1945-46
शंकराचार्य संवत् 2530
श्री महर्षि संवत 107

मार्च 2024

संवत् 2080
फाल्गुन-चैत्र मास

ता. 8 महाशिवरात्रि
यह दिन भगवान शिव को समर्पित है जिसमें चार प्रहर रात्रि जागरण के साथ शिव आराधना, हवन, अभिषेक किया जाता है।

ता. 24 मार्च होलिका दहन
धर्म सिंधु पृष्ठ 229 के अनुसार प्रतिपदा युक्त पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर से ऊपर होने पर प्रदोष व्यापिनी प्रतिपदा में होलिका दहन करना शास्त्र सम्मत है, परन्तु भद्रायुक्त पूर्णिमा को होलिका दहन वर्जित है। अतः होलिका दहन ता. 24 को प्रदोषकाल के बाद होगा तथा 25 को होलिकोत्सव होगा।

शिव वास अग्नि वास
ता. मार्च 6, 10, 14, 18, 22, 26, 30 को शिववास एवं अग्निवास दोनों रहेगा।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	6	2।58	रात	फाल्गुन कृष्णपक्ष
2	7	3।15	रात	
3	8	3।2	रात	
4	9	2।18	रात	
5	10	1।8	रात	
6	11	11।36	रात	
7	12	9।44	रात	
8	13	7।37	रात	
9	14	5।21	सायं	
10	30	2।59	दिन	
11	1	12।36	दिन	फाल्गुन शुक्लपक्ष
12	2	10।17	दिन	
13	3	8।6	प्रात:	
14	4 5	6।9	प्रात:	
15	6	3।16	रात	
16	7	2।25	रात	
17	8	2।3	रात	
18	9	2।11	रात	
19	10	2।50	रात	
20	11	3।57	रात	
21	12	5।31	रात	
22	13	दिन	रात	
23	13	7।24	प्रात:	
24	14	9।29	दिन	
25	15	11।34	दिन	
26	1	1।29	दिन	चैत्र कृष्णपक्ष
27	2	3।7	दिन	
28	3	4।20	दिन	
29	4	5।4	सायं	
30	5	5।18	सायं	
31	6	5।1	सायं	

वार					
SUNDAY रवि	एकनाथ षष्ठी **31** ज्येष्ठा 6।52 सायं ईस्टर संडे चैत्र कृष्ण 6	सीता अष्टमी **3** अनुराधा 10।54 दिन जानकी प्रकटो. फाल्गुन कृष्ण 8	स्नानदान अमावस्या **10** पूर्वा भाद्रपद 3।14 रात पंचक फाल्गुन कृष्ण 30	होलाष्टक आरंभ **17** मृगशिर 8।57 रात सौम्य योग फाल्गुन शुक्ल 8	व्रत की पूर्णिमा **24** पूर्वा फा. 7।21 प्रातः होलिका दहन फाल्गुन शुक्ल 14
MONDAY सोम	**भद्रा** ता. 2 को सूर्योदय से 3।15 बजे दिन ता. 5 को 1। 48 बजे दिन से 1। 8 बजे रात्रि ता. 8 को 7। 37 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 9 को सूर्योदय से 6। 34 बजे प्रातः ता. 13 को 7। 11 बजे रात्रि से 6।13 बजे रात्रि। ता. 14 को सूर्योदय से 6।9 बजे प्रातः ता. 16 को 2।25 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 17 को सूर्योदय से 2।14 बजे दिन ता. 20 को 3।25 बजे दिन से 3।57 बजे रात्रि ता. 24 को 9।29 बजे दिन से 10।35 बजे रात्रि ता. 27 को 3।52 बजे रात्रि से ता. 28 को 4।20 बजे दिन, ता. 31 को 5। 1 बजे सायं से 4।48 बजे रात्रि अंत तक भद्रा रहेगी।। **पंचक** ता. 8 को 7।19 बजे सायं से ता. 12 को 12।6 बजे रात पंचक रहेंगे।	अंवष्टिका श्राद्ध **4** ज्येष्ठा 11।18 दिन पद्म योग फाल्गुन कृष्ण 9	गद योग **11** उत्तर भाद्रपद 1।37 रात पंचक फाल्गुन शुक्ल 1	**18** आर्द्रा 9।36 रात कालदंड योग फाल्गुन शुक्ल 9	स्नानदान पूर्णिमा, होली उत्सव **25** उत्तरा फा. 9।57 दिन होलाष्टक समाप्त फाल्गुन शुक्ल 15
TUESDAY मंगल		छत्र योग **5** मूल 10।54 दिन स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती फाल्गुन कृष्ण 10	फुलरिया दोज **12** रेवती 12।16 रात पंचक समाप्त फाल्गुन शुक्ल 2	फगु दसमी **19** पुनर्वसु 10।45 रात फाल्गुन शुक्ल 10	वसंतोत्सव **26** हस्त 12।24 दिन सौम्य होली चैत्र कृष्ण 1
WEDNESDAY बुध		एकादशी व्रतं सर्वे. **6** पूर्वाषाढ़ 10।16 दिन श्रीवत्स योग फाल्गुन कृष्ण 11	गणेश चतुर्थी व्रतं **13** अश्विनी 10।48 रात फाल्गुन शुक्ल 3	आमलकी एकादशी **20** पुष्य 12।22 रात मातंग योग फाल्गुन शुक्ल 11	भाईदूज **27** चित्रा 2।34 दिन कालदंड योग चैत्र कृष्ण 2
THURSDAY गुरु		**7** उत्तराषाढ़ 9।17 दिन सौम्य योग फाल्गुन कृष्ण 12	खरमासारंभ **14** भरणी 9।46 रात मीन संक्रांति फाल्गुन शुक्ल 4,5	गोविन्द द्वादशी **21** श्लेषा 2।25 रात अमृत योग फाल्गुन शुक्ल 12	गणेश चतुर्थी व्रतं चंद्रो. 9।33 रात्रि **28** स्वाती 4।22 दिन सुस्थिर योग चैत्र कृष्ण 3
FRIDAY शुक्र	**1** स्वाती 8।57 दिन गद्य योग फाल्गुन कृष्ण 6	प्रदोष महाशिवरात्रि व्रतं **8** श्रवण 8।10 दिन पंचक प्रारंभ फाल्गुन कृष्ण 13	गोरूपणी षष्ठी **15** कृतिका 9।14 रात छत्र योग फाल्गुन शुक्ल 6	प्रदोष व्रतं **22** मघा 4।47 रात विश्व जल दिवस फाल्गुन शुक्ल 13	गुडफ्रायडे **29** विशाखा 5।41 सायं मातंग योग चैत्र कृष्ण 4
SATURDAY शनि	**2** विशाखा 10।10 दिन धुम्र योग फाल्गुन कृष्ण 7	पंचक **9** धनि.शत. 5।32 रात्रि अंत प्रवर्धमान योग फाल्गुन कृष्ण 14	कामदा सप्तमी **16** रोहिणी 8।47 रात श्रीवत्स योग फाल्गुन शुक्ल 7	**23** पूर्वा फा. दिनरात लुंबक योग फाल्गुन शुक्ल 13	रंग पंचमी **30** अनुराधा 6।31 सायं अमृत योग चैत्र कृष्ण 5

मुहूर्त

विवाह- ता. 2 से 7, मासांत दोष मीन संक्रांति
नामकरण- ता. 6, 7, 13, 20 , 27, 28
कर्णभेद - ता. 13
मुंडन -ता. 13
अक्षरारंभ- ता. 13
अन्नप्राशन- ता. 13
सीमांत पुंसवन- ता. 5, 20
नवीन वस्त्र- ता. 2, 3, 6, 7, 13, 16, 20, 23, 30
प्रसूति स्नान- ता. 22, 23
व्यापारारंभ-ता. 3, 6, 13, 17, 20, 28
वाहन क्रय- ता. 2, 3, 13, 17, 20
देव प्रतिष्ठा- ता. 13
शल्यक्रिया- ता. 3, 17
वाटिका रोपण- ता. 3, 17
औषधि सेवन- ता. 3, 13, 17, 20, 23
यात्रा- ता. 2, 13, 16, 19, 23, 30
धान्य छेदन- ता. 6, 13, 20
उपनयन- ता. 13, 20, 21
गृह प्रवेश- ता. 6, 7
वस्तु क्रय - ता. 13, 21, 22
द्विरागमन - ता. 6, 7, 13
शस्त्र निर्माण- ता. 3, 5, 6, 22
पशु क्रय-विक्रय- ता. 3, 13, 20
ईंट भट्टा - ता. 7
शिल्प विद्या- ता.3 17, 20
मुहूर्तों में समय का शोधन कर उपयोग करें।

राशिफल

मेष - जायजाद वृद्धि, चिंता निवारण।
वृष- भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
मिथुन - सहयोग मिलेगा, व्यर्थ की चिंता।
कर्क - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
सिंह - सफलता, धन लाभ, व्यर्थ विवाद।
कन्या - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
तुला - स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
वृश्चिक - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
धनु - मतभेद बढ़ेगा, मेहमान, आगमन।
मकर- शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
कुम्भ- प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
मीन- श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 5 स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती
ता. 8 वैद्यनाथ जयंती
ता. 12 रामकृष्ण परमहंस जयंती
ता. 15 उपभोक्ता संरक्षण दिवस
ता. 22 विश्व जल दिवस, ज्योतिष दिवस
ता. 23 श्री सरदार भगतसिंह आदि श.दि.
ता. 25 चेतन्य महाप्रभु जयंती
ता. 27 संत तुकाराम जयंती

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 8 को सूर्योदय से 8 बजे प्रातः तक। ता 16 को सूर्योदय से रात्रि 8।46 तक, ता 24 को 7।21 बजे प्रातः से रातअंत तक। ता 29 को 5।41 बजे सायं से रातअंत तक। ता 31 को 6।52 बजे सायं से रातअंत तक।
अमृतसिद्धि योग- ता 16 को सूर्योदय से 8।47 बजे रात्रि तक।
रवियोग- ता 1 को प्रातः 8।57 बजे से रात्रिअंत ता 2 को सूर्योदय से दिन 10।10 बजे तक। ता 12 को रात्रि 12।6 बजे से रात्रिअंत ता 13 को सूर्योदय से रात्रि 10।48 बजे तक। ता 14 को रात्रि 9।46 बजे से रात्रिअंत ता 15 को सूर्योदय से रात्रि 9।4 बजे तक। ता 17 को रात्रि 8।57 बजे से रात्रिअंत ता 18 को रात्रि 9।36 बजे से रात्रिअंत ता 19 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 20 को सूर्योदय से रात्रि 12।22 बजे तक। ता 22 को रात्रि 4।47 बजे से रात्रिअंत ता 23 को सूर्योदय से रात्रि 7।25 बजे तक। ता 24 को सूर्योदय से प्रातः 7।21 बजे तक। ता 30 को सायं 6।31 बजे से रात्रिअंत तक।
द्विपुष्कर योग - ता. 16 को 8।47 रात से रात अंत तक। ता. 26 को 12।24 दिन से रात अंत तक। **त्रिपुष्कर योग** - ता. 2 को सूर्योदय से 10।10 दिन तक।
पुष्य नक्षत्र - ता 20 को सूर्योदय से 12।22 रात तक।

भोपाल

सूर्योदय	ता.	1-6.13	7-6.09	13-6.05	19-6.01	25-5.57	30-5,54
सूर्यास्त	ता.	1-5.47	7-5.51	13-5.55	19-5.59	25-6.03	30-6.06

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 3 सीता अष्टमी
ता. 6 विजया एकादशी व्रतं
ता. 8 प्रदोष व्रतं, महाशिवरात्रि
ता. 10 फाल्गुन अमावस्या
ता. 12 फुलरिया दोज
ता. 13 वैनायकी चतुर्थी व्रतं
ता. 17 होलाष्टक प्रारंभ
ता. 20 आमलकी एकादशी व्रतं
ता. 21 गोविंद द्वादशी व्रतं
ता. 22 प्रदोष व्रतं

ज्योतिष मठ संस्थान प्रकाशन
अथ वैदिक विवाह पद्धति

लेखक - पं.अयोध्या प्रसाद गौतम

ता. 24 होलिका दहन, व्रतं पूर्णिमा
ता. 25 स्नानदानपूर्णिमा, होलीउत्सव
ता. 26 वसन्तोत्सव
ता. 27 भाई दोज, चित्रगुप्त पूजा
ता. 28 श्री गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 30 रंग पंचमी
ता. 31 एकनाथ षष्ठी

जैन व्रत पर्व
ता. 16 रोहिणी व्रतं
ता. 26 षोडसकारण व्रत प्रारंभ

मीन संक्रांति फलं

ता. 14 को 3:3 दिन में मीन संक्रांति होगी। फाल्गुन शुक्ल पंचमी गुरुवार को भगवान सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेंगे। मीन संक्रांति बाल्यास्था में बैठी हुई स्थिति में अर्की है। संक्रांति के प्रभाव से धान्य, गल्ला, चावल आदि के दामों में कमी, आनंद योग व्याप्त, सर्वत्र शांति, खाद्य पदार्थों के मूल्य में गिरावट का रुख रहेगा। साक-तरकारी के भावों में घटा-बढ़ी, सोने-चांदी के भाव में मंदी का रुख रहेगा।

मास फल

इस माह कुंभ राशि पर सूर्य-बुध एवं शनि तथा मीन राशि पर सूर्य-बुध-राहु का त्रिग्रही योग का प्रभाव रहेगा। जिससे पूर्व दक्षिण के प्रांतों में धार्मिक सांप्रदायिक उपद्रव्य से जनधन की हानि हो सकती है। मंगल शनि की युति से राजनीतिक दलों को संघर्ष करना पड़ सकता है। यान दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि हो सकती है। विशिष्ट व्यक्ति का देहावसान संभव है। धार्मिक वाद-विवाद बढ़ेगा, किसी बड़ी साजिश का भंडाफोड़ होगा, आरोप-प्रत्यारोप का दौर बढ़ेगा।, संक्रामक रोग से हानि, अनेक क्षेत्रों में वर्षा, आंधी-तूफान संभव है।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें
प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068
प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

विषय विशेषज्ञों की सलाह

वर्तमान समय पर जीवन में संघर्ष तनाव, अशांति की स्थितियां हमारे अज्ञान के कारण हमें विचलित कर देती हैं। ऐसे में संबंधित विषयों के जानकारों से अगर हमें सटीक मार्गदर्शन मिल जाए तो हमारी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं। प्रस्तुत है इस वर्ष के विषय विशेषज्ञों की राय जो आपके जीवन में बदलाव लाने में सक्षम हैं।

तेजी से पैर पसार रहे मानसिक रोग

विश्व में मानसिक रोग तेजी से पैर पसार रहा है। यह किसी भी उम्र के व्यक्ति को किसी भी समय हो सकता है। यह मन की बीमारी है, बीमारी की जानकारी, लक्षण प्रकट होते ही मनोचिकित्सक के पास तुरंत ले जाएं। मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति आत्महत्या जैसे कदम उठा सकता है। मानसिक रोगी को झाड़-फूंक के चक्कर में न पड़ने दें। प्रमुख मानसिक रोगों में डिप्रेशन, उदासी मस्तिष्क के कुछ रसायनों की कमी के कारण होती है। मेनिया रोग अति उत्साह मष्तिस्क में कुछ विशेष रसायनों की वृद्धि के कारण होता है। वैसे यह अधिकतर वंशानुक्रम के कारण होता है। जो मनोचिकित्सक से सलाह लेने पर धीरे-धीरे दूर हो जाता है। स्किजोफ्रेनिया एक मनोविज्ञानिक रोग है इसमें मरीज के सोच-विचार मन और वास्तविक परिस्थितियों को आभास करने में अंतर हो जाता है। उन्हें कानों में आवाजें आने का भ्रम, नींद नहीं आने तथा भूलने जैसी स्थिति बन जाती है। एंक्ज्याइटी (घबराहट)- भी मानसिक रोगों में से एक प्रमुख रोग है। यह बीमारी विषम परिस्थितियों में उत्पन्न हो सकती है।

पेनिक डिस्आर्डर - कुछ रसायनों के एकाएक शरीर में बढ़ जाने से रोगी एकाएक घबराहट महसूस करता है हाथ पैर ठंडे पड़ जाते हैं पसीना आने लगता है।

फोबिया - अचानक भय यह भी मनोरोग की श्रेणी में आता है। वह व्यक्ति अनजाने भय से ग्रसित हो जाता है। इस रोग में व्यक्ति के दिमाग में बार-बार अनावश्यक विचार बनते-बिगड़ते रहते हैं। देवी-देवताओं के प्रति अपमानजनक सोच बढ़ने लगती है। जगह-जगह दर्द की शिकायत करते रहते हैं।

परिजन ये उपाय करें- अनुशासित जीवनशैली रखें। हैल्दी डाइट लें। कोरोना से बचाव के नियम का पालन जरूर करें। पीड़ितों की बातों को ध्यान से सुनें। उनकी बराबर सहायता करते रहें। उन्हें घबराहट होने पर लंबी-लंबी सांस लेने के लिए कहें। निगेटिव चीजों से उन्हें दूर ही रखें। रोजाना व्यायाम और अच्छी आदतों के लिए प्रेरित जरूर करें, तुरंत चिकित्सक से सलाह लें।

अधिक जानकारी के लिए डॉक्टर साहब से सलाह लें

डॉ. वैभव दुबे मो. 9424401688
www.mentalhealthmantra.com

स्किन पर पड़ने वाले निशान और उनका इलाज

एक निशान रेशेदार ऊतकों का एक क्षेत्र है जो चोट या जलन के बाद त्वचा को बदल देता है। आपके शरीर पर कहीं भी निशान पड़ सकते हैं। चोट लगने के बाद निशान ज़रूरी नहीं हो सकते हैं। सर्जरी के निशान, मुंहासे के निशान, खिंचाव के निशान, नाभि के निशान आदि हो सकते हैं। त्वचा के दाग-धब्बे ज्यादातर बाजार में उपलब्ध विभिन्न जैल और मलहम द्वारा इलाज किए जा सकते हैं। यदि वे हटते नहीं हैं, तो आप निशान के इलाज के लिए और अधिक गंभीर तरीकों से जा सकते हैं। आपके पास डर्माब्रेशन रासायनिक छिलके, लेजर रिसर्फेसिंग या प्लास्टिक सर्जरी के लिए जाने का विकल्प है।

डर्माब्रेशन में, आपकी त्वचा की ऊपरी परत को एक्सफोलिएट करने के लिए एक वायर्ड ब्रश या व्हील का उपयोग किया जाएगा। यह सतह के दागों को हटा देगा और गहरे निशान को कम ध्यान देने योग्य बना देगा। हालांकि, संवेदनशील त्वचा और ऑटोइम्यून समस्या वाले लोगों के लिए यह एक अच्छा विकल्प नहीं है। रासायनिक छिलके हल्के अम्ल से बने होते हैं। छिलके को त्वचा की ऊपरी परत पर लगाया जाता है जो एक नई परत को उजागर करने के लिए एक्सफ़ोलीएट और रोल करता है। रासायनिक छिलके तीन प्रकार के होते हैं। सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला एक गहरा छिलका है जो फिनोल का उपयोग करता है और त्वचा में गहराई तक जाता है।

सतही छिलके मामूली निशान के साथ जुड़े मलिनकिरण में सुधार करता है। मध्यम छिलके का उपयोग ज्यादातर एंटी एजिंग उपचारों के लिए किया जाता है क्योंकि इस छिलके में मौजूद ग्लाइकोलिक एसिड होता है। लेजर रिसर्फेसिंग त्वचा की ऊपरी परत को हटाने के लिए उच्च शक्ति वाले लेजर बीम का उपयोग करता है। लेजर रिसर्फेसिंग दो प्रकार की होती है। एरबियम लेजर रिसर्फेसिंग को चेहरे के दाग के लिए सबसे सुरक्षित माना जाता है जबकि कार्बन डाइऑक्साइड लेजर रिसर्फेसिंग शरीर के अन्य भागों के लिए है और अधिक प्रभावी है।

यदि आप अपने दाग से हमेशा के लिए छुटकारा पाना चाहते हैं तो प्लास्टिक सर्जरी एक और अच्छा विकल्प है। आपके निशान ऊतक को शल्य चिकित्सा रूप से हटा दिया जाएगा या एक स्केलपेल के साथ बदल दिया जाएगा। फिर, डॉक्टर स्थिति की गंभीरता और आपकी आवश्यकता के आधार पर आपके स्वरूप को कम करने के लिए आपके निशान, एपिडर्मिस या निशान को हटा देगा। यदि आपके पास चेहरे या शरीर के निशान हैं जो जैल और मलहम द्वारा ठीक नहीं किए जा सकते हैं; आप त्वचा विशेषज्ञ से परामर्श करने के बाद इनमें से किसी एक उपचार के लिए जा सकते हैं। किसी भी तरह के उपचार के लिए जाने से पहले सुनिश्चित करें कि आपके पास हाइपर सेंसिटिव स्किन नहीं है। उपचार से आपको कई दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ सकता है। रासायनिक छिलके आपकी त्वचा को थोड़ी जलन और लाल धब्बों के साथ छोड़ सकते हैं। लेजर रिसर्फेसिंग से संक्रमण, दाग और त्वचा के रंजकता में परिवर्तन हो सकते हैं। यदि आप डॉक्टर के निर्देशों का पालन करते हैं, तो इसके बारे में चिंतित होने की कोई बात नहीं है।

आपको हर समय अपनी त्वचा को गंदगी से साफ रखना चाहिए। इसे नियमित रूप से धोने के लिए माइल्ड क्लींजर का इस्तेमाल करें। धूप में बाहर निकलने से पहले अच्छी मात्रा में सनस्क्रीन लोशन लगाएं। वैसलीन और पेट्रोलियम जेली लगाने से अपने घावों पर पपड़ी बनना रोकें। डॉक्टर द्वारा निर्देशित दवाओं से बचें। वे उपचार के परिणामों को बनाए रखने में आपकी सहायता करेंगे। लेजर रिसुरफेसिंग को ठीक होने में 3-10 दिन लग सकते हैं। यदि आप प्लास्टिक सर्जरी के लिए जाते हैं, तो आपको अपनी दैनिक गतिविधियों को फिर से शुरू करने में लगभग 7-10 दिन लग सकते हैं। डर्माब्रेशन और रासायनिक छिलके के बाद, आप अपने घावों की उचित देखभाल करने के साथ-साथ एक या दो दिन में अपनी दिनचर्या की गतिविधियाँ करना शुरू कर सकते हैं। पेट्रोलियम जेली और वैसलीन को हाइड्रेटिंग प्रभाव के लिए जाना जाता है और निशान को खराब होने से रोकता है। शहद त्वचा की लालिमा को कम करने में मदद करता है। आसानी से बाजार में उपलब्ध ब्लीचिंग किट, निशान को कम करने में मदद कर सकते हैं। हालांकि, इन विधियों को 100 प्रतिशत प्रभावशीलता के लिए नहीं जाना जाता है।

अधिक जानकारी के लिए डॉक्टर साहब से सलाह लें

डॉ. चेतन शर्मा, स्किन परफेक्शन क्लीनिक जवाहर चौक, भोपाल
मो. 7770963303

पेट की खराबी से शुरु होती हैं 90 प्रतिशत बीमारियां

मानव शरीर में लगभग 90 प्रतिशत बीमारियां पेट से ही शुरु होती हैं, यानि अगर पेट साफ नहीं रहता, या पेट में कब्ज रहती है, तो उससे पूरे शरीर में गंदगी फैलती है और उसी से अलग-अलग तरह की छोटी-बड़ी बीमारियां भी जन्म लेती रहती हैं। वहीं, अगर पेट साफ रहता है, तो कोई बीमारी पनप ही नहीं पाती, क्योंकि जो शरीर अंदर से भी साफ रहता है, उसमें कोई बीमारी कैसे हो सकती है।

कब्ज क्या है?

कब्ज का मतलब पेट साफ न होने से ही है। जब पेट में कब्ज होती है, तब मलत्याग में बड़ी परेशानी होती है, क्योंकि ऐसे में मल बहुत सख्त हो जाता है, जिस वजह से ज्यादा जोर लगाना पड़ता है और घंटों बैठे रहना पड़ता है। कब्ज के रोगी को बार-बार शौच के लिए जाना पड़ता है और कभी-कभी तो दो-तीन दिनों तक शौंच ही नहीं हो पाता है।

कब्ज के लक्षण

आमतौर पर कब्ज रहने से सुस्ती, थकान, जी मिचलाना, हल्का बुखार, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, मल-मूत्र की समस्या, बदहजमी, पेट में दर्द, पेट में भारीपन, कमजोर आंतों, पेट में गैस, पेट में कीड़े, मुंह में छाले, मुंह से दुर्गन्ध, बहती नाक, खून की खराबी, त्वचा पर पिंपल्स आदि की समस्याएं हो जाती हैं।

कब्ज क्यों होता है?

आयुर्वेद के अनुसार, शरीर में हर चीज का संतुलन होना चाहिए। शरीर का संतुलन वात, पित्त और कफ दोषों पर निर्भर है। इनमें असंतुलन होने पर शरीर बीमारियों से घिर जाता है।

कब्ज होने के प्रमुख कारण

- दिनभर में पानी कम पीना या सेहतमंद तरल पदार्थों जैसे जूस-सूप आदि का सेवन कम करना,
- खाना खाने के बाद थोड़ा चहलकदमी न करना या तुरंत आराम से बैठ जाना,
- खाने के तुरंत बाद ठंडा पानी पी लेना,
- पहले वाला खाना पचे बिना ही फिर कुछ खा लेना,
- गरिष्ठ या देर से पचने वाले खाने का सेवन ज्यादा करना,
- खाने को अच्छे से चबा-चबाकर न खाना,
- रात में देर से भोजन करना,
- देर से सोना और देर से जागना,
- एल्युमिनियम जैसे बर्तनों में बना भोजन करना,
- ज्यादा व्रत रखना या बिल्कुल ही व्रत न रखना,

इन सबके साथ, बड़ी आंत में चोट या घाव, डायबिटीज के कारण पाचन की समस्या, आंत-लीवर और तिल्ली की बीमारी, डिप्रेशन (तनाव) आदि भी कब्ज के कारण बन सकते हैं।

कब्ज को दूर करने के उपाय

- सुबह उठकर गुनगुना पानी या गुनगुना नींबू पानी पीना चाहिए
- सुबह की हवा और धूप में बैठना चाहिए,
- कोई न कोई एक्सरसाइज या सूर्य नमस्कार करना चाहिए,
- कम से कम 5 मिनिट पेट को सुबह की धूप जरूर दिखाना चाहिए, इससे जठराग्नि तेज होती है, आंतों को बल मिलता है, पाचन शक्ति मजबूत होती है
- सुबह का नाश्ता जरूर लेना चाहिए। नाश्ता हल्का होना चाहिए,
- नाश्ते में तरल पदार्थों, जैसे मौसमी जूस को ज्यादा मात्रा में शामिल करना चाहिए,
- नाश्ता या खाना खूब चबा-चबाकर खाना चाहिए,
- खाने में रेशेयुक्त आहार (फाइबर) को ज्यादा से ज्यादा लेना चाहिए,
- खाने के आटे में चोकर जरूर होना चाहिए, यह मल को ढीला करता है और पेट की झाड़-पोंछकर सफाई करता है
- गेहूं के आटे में चने का आटा मिलाकर खाएं। मोटा आटा खाएं।
- खाने में रिफाइंड तेल और वनस्पति घी का कम से कम इस्तेमाल करना चाहिए। इनकी जगह सरसों का तेल, नारियल तेल, जैतून का तेल, शुद्ध घी आदि का इस्तेमाल करें।
- फास्ट-फूड का सेवन कम से कम करना चाहिए। मैगी, पिज्जा-बर्गर, मांस, पेप्सी, कोक, शराब आदि से बड़ी आंत सड़ जाती है।
- मैदा, चीनी और सफेद नमक कम से कम खाएं,
- खाना खाने से तुरंत पहले और तुरंत बाद (कम से कम 45 मिनट) एक गिलास पानी नहीं पीना चाहिए। खाने के बीच-बीच में थोड़ा-थोड़ा पानी पीया जा सकता है।
- रात को खाना खाने के बाद कम से कम 500 कदम चलना चाहिए,
- हफ्ते में एक उपवास या व्रत रखें। इससे हमारे शरीर की अंदर से मरम्मत हो जाती है।
- ताजा खाना खाने की ही कोशिश करें। फ्रिज का ठंडा खाना न खाएं।
- गरिष्ठ या देर से पचने वाले खाने का सेवन कम से कम करें । गरिष्ठ खाना खाने के बाद थोड़ी देर टहलें जरूर।

अधिक जानकारी के लिए डॉक्टर साहब से सलाह लें

डॉ. अनिल शर्मा 'मयंक'
प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक भोपाल
मो. 9826739015

ज्योतिष शास्त्र में पितृ दोष व निवारण

पितृ दोष दो प्रकार से प्रभावित करता है, अधोगति प्रभाव एवं ऊर्धवगति प्रभाव। अधोगति वाले पितरों के दोष का मुख्य कारण परिजनों द्वारा किया गया अतृप्त इच्छाएं, जायदाद का मोह और गलत लोगों द्वारा उपभोग होने से, विवाह में परिजनों द्वारा गलत निर्णय, परिवार के किसी सदस्य को व्यर्थ कष्ट देने पर पितृगण क्रोधित हो जाते हैं एवं परिवार जनों को अपनी शुभ ऊर्जाएं देना बंद कर देते हैं एवं अपनी इच्छा शक्ति से अशुभकारी फल प्रदान करते हैं।

उर्ध्व गति वाले पितृगणों से पितृदोष उत्पन्न नहीं होता उनका अपमान होने पर अथवा परिवार के पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन नहीं करने पर वह पितृदोष उत्पन्न करते हैं। इनके द्वारा उत्पन्न पितृदोष से व्यक्ति की आर्थिक उन्नति बिलकुल बाधित हो जाती है, पितृ दोष निवारण के लिए सबसे पहले ये जानना ज़रूरी है कि किस ग्रह के प्रभाव से किस प्रकृति का पितृ दोष उत्पन्न हो रहा है। पश्चात इस दोष के निवाणर्थ उपाय विधि करना चाहिए। जन्म पत्रिका में पितृ दोष लग्न ,पंचम ,अष्टम और द्वादश भाव में पितृदोष का विचार किया जाता है। ग्रहों में मुख्य रूप से चंद्रमा, गुरु, सूर्य, शनि और राहू -केतु की युतियों से पितृ दोष का विचार किया जाता है। इनमें से भी गुरु, शनि और राहु की भूमिका सभी प्रकृति के पितृ दोष में महत्वपूर्ण होती है। इनमें सूर्य ग्रह से पिता या पितामह , चंद्र ग्रह से माता या मातामह, मंगल ग्रह से भ्राता या भगिनी और शुक्र ग्रह से पत्नी का विचार किया जाता है। गुरु, शनि और राहु से पीड़ित होने पर पितृ दोष उत्पन्न होता है, रुद्राक्ष भी धारण कर ले तो पितृ दोष का निवारण हो जाता है। मंत्र जप और स्तोत्रों हवन, तर्पण, जलांजलि आदि कर्मकांड करने से हितकर होता है।

पांच प्रकार के ऋण

हमारे ऊपर मुख्य रूप से 5 ऋण होते हैं जिनका कर्म न करने (ऋण न चुकाने) पर हमें निश्चित रूप से श्राप मिलता है। ये ऋण हैं - मातृ ऋण, पितृ ऋण, समाज प्राणी, देव ऋण और ऋषि ऋण।

1. मातृ लोक ऋण - माता एवं माता पक्ष के सभी लोग जिनमें मां, मामी, नाना, नानी, मौसा, मौसी और इनके तीन पीढ़ी के पूर्वज होते हैं ,क्योंकि मां का स्थान परमात्मा से भी ऊंचा माना गया है। अत: यदि माता के प्रति कोई गलत शब्द बोलता है अथवा माता के पक्ष को कोई कष्ट देता रहता है, तो इसके फलस्वरूप उसको नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। इतना ही नहीं, इसके बाद भी कलह और कष्टों का दौर भी परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चलता ही रहता है।

2. पितृ लोक ऋण - पिता पक्ष के लोगों जैसे बाबा ,ताऊ ,चाचा, दादा-दादी और इसके पूर्व की तीन पीढ़ी का श्राप हमारे जीवन को प्रभावित करता है। पिता हमें आकाश की तरह छत्रछाया देता है। हमारा जिंदगी भर पालन -पोषण करता है और अंतिम समय तक हमारे सारे दुखों को खुद झेलता रहता है। पितृ-भक्ति करना मनुष्य का धर्म है, इस धर्म का पालन न करने पर उनका श्राप अगली पीढ़ी को झेलना पड़ता है। घर में दरिद्रता, संतानहीनता, संतान को विभिन्न प्रकार के कष्ट आना या संतान अपंग रह जाने से जीवन भर कष्ट की प्राप्ति होती है।

3. देव लोक ऋण - माता-पिता प्रथम देवता हैं, जिसके कारण भगवान गणेश महान बने 7 इसके बाद हमारे इष्ट भगवान शंकर जी, दुर्गा मां, भगवान विष्णु आदि आते हैं, जिनको हमारा कुल मानता आ रहा है। हमारे पूर्वज भी अपने अपने कुल देवताओं को मानते थे, लेकिन नई पीढ़ी ने बिलकुल छोड़ दिया है। इसी कारण भगवान /कुलदेवी /कुलदेवता उन्हें नाना प्रकार के कष्ट /श्राप देकर उन्हें अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं।

4. ऋषि लोक ऋण - जिस ऋषि के गोत्र में पैदा हुए, वंश वृद्धि की, उन ऋषियों का नाम अपने नाम के साथ जोड़ने में नई पीढ़ी कतराती है। उनके ऋषि तर्पण आदि नहीं करती है। इस कारण उनके घरों में कोई मांगलिक कार्य नहीं होते हैं। इसलिए उनका श्राप पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होता रहता है।

5. पृथ्वी लोक ऋण - माता-पिता के अतिरिक्त जिन अन्य मनुष्यों ने हमें प्यार दिया, दुलार दिया, हमारा ख्याल रखा, समय समय पर मदद की, गाय आदि पशुओं का दूध पिया जिन अनेक मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों ने हमारी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मदद की, उनका ऋण भी हमारे ऊपर हो गया।

पं. नारायण व्यास
आचार्य ज्योतिष मठ भोपाल
मो. 9826094150

मूल विचार

नवजात शिशु के जन्म के समय अगर अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती नक्षत्र पड़ रहा हो तब वह शिशु मूलक में जन्म लेता है। इनमें से अश्लेषा, मूल एवं ज्येष्ठा नक्षत्र के मूल पूर्ण मूलक होते हैं। मूलधारी नक्षत्रों में जन्म लेने वाले शिशु को मूल शांति तक निहारना पिता के लिए वर्जित है। पूर्ण मूलक नक्षत्रों की शांति 27वें दिन उसी नक्षत्र के आने पर की जाती है। साधारण मूल जैसे अश्विनी, रेवती, मघा की शांति 12वें, 8वें दिन भी कर सकते हैं।

मूल नक्षत्रों के चरणानुसार फलकथन सारणी

नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पितृ कष्ट	सुखी ऐश्वर्य	पद प्रतिष्ठा	मान-सम्मान
अश्लेषा	पितृ कष्ट	मातृ कष्ट	धन हानि	सुखकारी
मघा	मातृ कष्ट	पितृ कष्ट	शुभतापूर्ण	धन ज्ञानदायक
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	भाई को कष्ट	मातृ कष्ट	शिशु को कष्ट
मूल	शुभतापूर्ण	धन हानि	मातृ कष्ट	पितृ कष्ट
रेवती	राज सम्मान	पद प्रतिष्ठा	धन सुख प्राप्ति	अति कष्ट

जानें शिशु के मुंह में दांत निकलने का फल- प्रथम मास में स्वयं को हानि। दूसरे माह में भ्राता को हानि। तीसरे माह में बहन को परेशानी। चौथे में मातृ हानि। पाचवें में ज्येष्ठ हानि। छटवें में सुख प्राप्ति। सातवें में पितृ सुख। आठवें में पुष्ट प्राप्ति। नौवें लक्ष्मी प्राप्ति दसवें एवं ग्यारहवें में सुख प्राप्ति।

84 लाख योनि का क्रमानुक्रम एवं गणनानुक्रम

जलज जन्तु	900000	सप्त समुद्र
स्थावर जन्तु	2000000	1 लवण मय सिन्धु
कृमि (कीत पतंक)	1100000	2 क्षीर सिन्धु
पक्षिगण वर्ग	1000000	3 दधि सिन्धु
पशु योनि वर्ग	3000000	4 धृत सिन्धु
मानव वर्ण योनि	400000	5 इक्षुरसमय सिन्धु
एवं गणनानुक्रम	8400000	6 मधुमय सिन्धु
		7 अमृतमय सिन्धु

दिव्य ज्योतिष के प्रणेता
ज्योतिष महर्षि
पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी की स्मृति में आयोजित

राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन

में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

दिनांक : 13, 14 जुलाई 2024

आयोजक : ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल

संयोजक : ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

आयोजन समिति: पं. नारायण व्यास, पं. धनेश प्रपन्नाचार्य, पं. रामकिशोर वैदिक, श्रीमती रजनी निखिल, पं. सुबोध मिश्रा,

संपर्क: 9827322068, 9826973147, 9827012871, 830574084

प्रेरणा स्त्रोत **ज्योतिषाचार्य पं. श्री नारायण शंकर नाथूराम व्यास जी** प्रख्यात भविष्यवक्ता, कोतवाली, बाजार जबलपुर, **ज्योतिषाचार्य पं. श्री सूर्यकांत चतुर्वेदी जी,** रचयिता - भुवन विजय पंचांग, जबलपुर, **महाराज श्री वैभव भटेले,** प्रसिद्ध कथाकार-भोपाल, **डॉ. जे.पी. पालीवालजी**-पालीवाल हास्पिटल-भोपाल, **ज्योतिषाचार्य पं. श्री राजेश मिश्रजी,** पुष्पांजलि पंचांग-भोपाल, **प्रो. अनिल श्रीवास्तवजी,** इंदौर

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 अप्रैल की

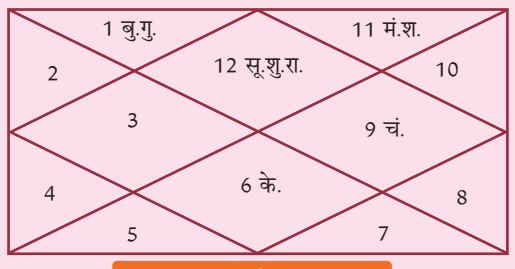

1 बु.गु.	12 सू.शु.रा.	11 मं.श.
2	3	10
9 चं.	4	6 के.
8	5	7

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- मीन में, ता. 13 को 11:9 रात से मेष में। **मंगल-** कुंभ में, ता. 23 को 10:43 रात से मीन में। **बुध-** मेष में, ता. 2 को दिन 2:55 से वक्री, ता. 9 को 11:10 रात से मीन राशि में, ता. 25 को 5:0 रात्रि अंत से मार्गी, **गुरु-** मेष में। **शुक्र-** मीन में, ता. 24 को 12:55 दिन से मेष में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल पिछले माह से जारी मूल ता. 1 को 6।45 सायं तक। ता. 8 को 9।43 दिन से ता. 10 को 6।48 प्रातः तक। ता. 17 को 7।43 प्रातः से ता. 19 को 12।1 दिन तक। ता. 26 को 2।13 रात से ता. 28 को 2।39 रात तक।

गुरु तारा पूर्व दिशा में उदित, ता. 23 को दिन में शुक्र अस्त

ज्योतिष मठ संस्थान

गौतम पंचांग

सूर्य उत्तरायन

बसंत/ग्रीष्म ऋतु

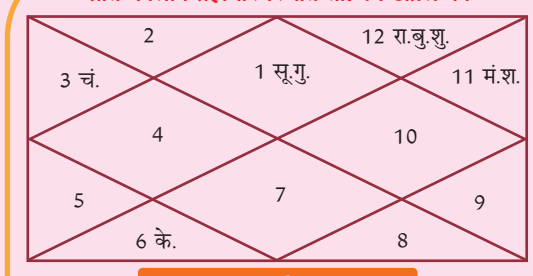

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 14 अप्रैल की

2	1 सू.गु.	12 रा.बु.शु.
3 चं.	4	11 मं.श.
10	5	7
9	6 के.	8

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा धनु राशि का. ता. 2 को 12।6 बजे रात से मकर का। ता. 4 को 3।27 बजे रात से कुंभ का। ता. 7 को 5। 51 बजे प्रातः से मीन का। ता. 9 को 8।10 बजे प्रातः से मेष का। ता. 11 को 11। 33 बजे दिन से वृष का। ता. 13 को 4। 37 बजे सायं से मिथुन का। ता. 15 को 11। 59 बजे रात से कर्क का। ता. 18 को 9।42 बजे दिन से सिंह का। ता. 20 को 9। 17 बजे रात से कन्या का। ता. 23 को 8। 54 बजे प्रातः से तुला का। ता. 25 को 6। 58 बजे सायं से वृश्चिक का। ता. 27 को 2।40 बजे रात से धनु का। ता. 30 को 8।3 बजे प्रातः से मकर राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2530
श्री महर्षि संवत 107

अप्रैल 2024

संवत् 2080-81
चैत्र-वैसाख मास

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	7	4।16	दिन	चैत्र कृष्णपक्ष
2	8	3।4	दिन	
3	9	1।30	दिन	
4	10	11।35	दिन	
5	11	9।27	दिन	
6	12 13	7।9	प्रातः	
7	14	2।20	रात	
8	30	12।0	रात	
9	1	9।49	रात	चैत्र शुक्लपक्ष
10	2	7।51	रात	
11	3	6।11	सायं	
12	4	4।54	सायं	
13	5	4।3	दिन	
14	6	3।40	दिन	
15	7	3।46	दिन	
16	8	4।24	दिन	
17	9	5।30	सायं	
18	10	7।2	रात	
19	11	8।53	रात	
20	12	10।54	रात	
21	13	12।57	रात	
22	14	2।51	रात	
23	15	4। 28	रात	
24	1	दिन	रात	वैसाख कृष्णपक्ष
25	1	5।35	प्रातः	
26	2	6।17	प्रातः	
27	3	6।29	प्रातः	
28	4 5	6।11	प्रातः	
29	6	4।12	रात	
30	7	2।36	रात	

पिछले पेज अवश्य पढ़ें

ता. 8 सोमवती अमावस्या

सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहते हैं। इस दिन विवाहित स्त्रियों द्वारा इस दिन अपने पतियों के दीर्घायु कामना के लिए व्रत का विधान है। इस दिन मौन व्रत रहने से सहस्र गोदान का फल मिलता है। शास्त्रों में इसे अश्वत्थ प्रदक्षिणा व्रत की भी संज्ञा दी गयी है।

ता. 30 गुरु अर्जुनदेव ज्योति जोत

गुरु अर्जुन देव को बड़े कष्ट पूर्वक ज्योति जोत मिलाया गया था। यह सिखों का प्रमुख पर्व है।

शिव वास अग्नि वास

ता. 2, 6, 10, 14, 20, 21 को शिववाश एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

पंचक

तारीख 4 को 3 बजकर 27 मिनिट रात से तारीख 9 को 8 बजकर 10 मिनिट प्रातः तक पंचक रहेंगे।

वार					
SUNDAY रवि	पंचक (ऊपर देखें)	**7** शिव चतुर्दशी व्रतं; पूर्व भाद्रपद 11।22 दिन; पंचक; चैत्र कृष्ण 14	**14** सूर्य षष्ठी व्रतं; आर्द्रा 5।8 रात; खरमास समाप्त; चैत्र शुक्ल 6	**21** प्रदोष व्रतं; उत्तरा फा. 5।19 सायं; मित्र योग; चैत्र शुक्ल 13	**28** सिद्धि योग; मूल 2।39 रात; गुरु तेग बहादुर जयंती; वैसाख कृष्ण 4, 5
MONDAY सोम	**1** भानु सप्तमी; मूल 6।45 सायं; [illegible] योग; चैत्र कृष्ण 7	**8** सोमवती अमावस्या; उत्तर भाद्रपद 9।43 दिन; सूर्य ग्रहण विदेशों में; पंचक; चैत्र कृष्ण 30	**15** महानिशा पूजा; पुनर्वसु दिनरात; धूम्र योग; चैत्र शुक्ल 7	**22** रेणुका चतुर्दशी; हस्त 7।39 रात; वज्र योग; चैत्र शुक्ल 14	**29** पूर्वाषाढ़ा 2।10 रात; उत्पात योग; वैसाख कृष्ण 6
TUESDAY मंगल	**2** शीतला अष्टमी; पूर्वाषाढ़ 6।12 सायं; मित्र योग; चैत्र कृष्ण 8	**9** विक्रम नववर्ष प्रा.; रेवती 8।10 दिन; पंचक समाप्त, ज्योतिष दिवस; चैत्र शुक्ल 1	**16** महाष्टमी, भवानी उत्पत्ति; पुनर्वसु 6।11 प्रातः; सुस्थिर योग; चैत्र शुक्ल 8	**23** स्नानदान व्रत पूर्णिमा; चित्रा 9।55 रात; हनुमान प्रकटोत्सव; चैत्र शुक्ल 15	**30** मानस योग; उत्तराषाढ़ा 1।21 रात; गुरु अर्जुन देव जयंती; वैसाख कृष्ण 7
WEDNESDAY बुध	**3** उत्तराषाढ़ 5।17 सायं; वज्र योग; चैत्र कृष्ण 9	**10** चैटीचंड, सिंघारा दूज; अश्वि, भर 6।48 रात्रि अंत; चंद्रदर्शन; चैत्र शुक्ल 2	**17** राम नवमी; पुष्य 7।43 प्रातः; मातंग योग, जवारे विस.; चैत्र शुक्ल 9	**24** धूम्र योग; स्वाती 11।49 रात; सत्यसाईं पुण्यतिथि; वैसाख कृष्ण 1	भद्रा (नीचे देखें)
THURSDAY गुरु	**4** श्रवण 4।4 दिन; ध्वज योग; चैत्र कृष्ण 10	**11** सौभाग्य सुंदरी गणगौर; कृतिका 4।53 रात अंत; ईदुल-फितर; चैत्र शुक्ल 3	**18** नवरात्र व्रत की पारणा; श्लेषा 9।42 दिन; अमृत योग; चैत्र शुक्ल 10	**25** आशो दोज; विशाखा 1।16 रात; प्रवर्धमान योग; वैसाख कृष्ण 1	
FRIDAY शुक्र	**5** एकादशी व्रतं सर्वे.; धनिष्ठा 2।37 दिन; चैत्र कृष्ण 11	**12** गणेश चतुर्थी व्रतं; रोहिणी 4।32 रात; मित्र योग, यमघंट योग; चैत्र शुक्ल 4	**19** एकादशी व्रतं सर्वे.; मघा 12।1 दिन; काण योग; चैत्र शुक्ल 11	**26** अनुराधा 2।13 रात; राक्षस योग; वैसाख कृष्ण 2	
SATURDAY शनि	**6** प्रदोष व्रतं; शतभिषा 1।02 दिन; पंचक, वारुणी पर्व; चैत्र कृष्ण 12,13	**13** राम राज्योत्सव; मृगशिरा 4।36 रात अंत; वज्र योग; चैत्र शुक्ल 5	**20** मदन द्वादशी; पूर्वा फा. 2।33 दिन; लुंबक योग; चैत्र शुक्ल 12	**27** गणेश चतुर्थी व्रतं; ज्येष्ठा 2।40 रात; चंद्रोदय 9.50 रात्रि; वैसाख कृष्ण 3	

भद्रा

ता. 3 को 12।38 बजे रात्रि से ता. 4 को 11।35 बजे दिन ता. 7 को सूर्योदय से 3।35 बजे दिन ता. 12 को सूर्योदय से 4।54 बजे दिन ता. 15 को 3।46 बजे दिन से 4।3 बजे रात्रि अंत ता. 19 को 7।56 बजे प्रातः से 8।53 बजे रात्रि ता. 22 को 2।51 बजे रात्रि से ता. 23 को 3।42 बजे दिन तक, ता. 26 को 6।29 बजे सायं से रात्रिअंत। ता. 27 को सूर्योदय से 6।29 बजे प्रातः ता. 29 को 4।2 बजे रात्रिअंत से ता. 30 को 3।26 बजे दिन तक भद्रा रहेगी।

मुहूर्त

विवाह- ता. 18, 19, 20, 21, 22
नामकरण- ता. 4, 15, 18, 19, 25
कर्णभेद - ता. 25, **अक्षरारंभ-** ता. 25
अन्नप्राशन- ता. 4, 15, 25, 26
सीमांत पुंसवन- ता. 28, 30
नवीन वस्त्र- ता. 3, 13, 16, 25, 30
प्रसूति स्नान- ता. 17, 27, 30
गृहारंभ- ता. 25,
व्यापार आरंभ- ता. 3, 12, 13, 16, 25, 26, 28 **संपदा क्रय-** ता. 3
वाहन क्रय- ता. 3, 4, 11, 13, 15, 25
देव प्रतिष्ठा- ता. 15
शल्यक्रिया- ता. 4, 11, 16
वाटिका रोपण- ता. 12, 25, 28
औषधि सेवन- ता. 2, 3, 4, 15, 25, 28
यात्रा- ता. 3, 4, 13, 15, 25
धान्य छेदन- ता. 2, 3, 10, 11, 19
उपनयन- ता. 25
नवान्य भक्षण-ता. 25
गृह प्रवेश- ता. 15, 20
वस्तु विक्रय - ता. 5, 10
नव निर्माण- ता. 11, 25, 28
पशु क्रय-विक्रय- ता. 11, 15
वस्तु क्रय - ता. 4, 11, 18, 29
शस्त्र निर्माण- ता. 2, 5, 14, 28
शिल्प विद्या - ता. 2, 3, 12, 15, 25, 28, 29
वधु प्रवेश - ता. 5

राशिफल

मेष - सफलता, धन लाभ, व्यर्थ विवाद।
वृष- प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
मिथुन - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
कर्क - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
सिंह - मतभेद बढ़ेगा, मेहमान, आगमन।
कन्या - यात्रा, परेशानी, कष्ट, शुभ प्रसंग।
तुला - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
वृश्चिक - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
धनु - श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
मकर- धन लाभ, मतभेद, शुभ समाचार।
कुम्भ- स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
मीन- जायजाद वृद्धि, चिंता निवारण।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 1 वित्तीय वर्ष प्रारंभ, मूर्ख दिवस
ता. 7 विश्व स्वास्थ्य दिवस
ता. 9 गौतम ऋषि जयंती
ता. 10 झूलेलाल जयंती
ता. 13 निषाद राज जयंती
ता. 14 डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती
ता. 21 महावीर जयंती (जैन)
ता. 22 विश्व पृथ्वी दिवस

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता. 7 को 11।22 बजे दिन से रातअंत तक। ता. 9 को 8।10 दिन से रात्रि अंत कक। ता. 15 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता 21 को सूर्योदय से 5।9 बजे सायं तक। ता 25 को 1।16 बजे रात से ता 26 को 2।13 बजे रातअंत तक। ता 28 को सूर्योदय से 2।39 बजे रातअंत तक।

अमृतसिद्धि योग- ता 9 को 8।10 बजे प्रातः से रातअंत तक। ता 21 को 5।9 बजे सायं से रातअंत तक।

रवियोग- ता. 1 को सूर्योदय से सायं 6।45 बजे तक। ता. 11 को सूर्योदय से रात्रि 4।53 बजे तक। ता 12 को रात्रि 4।32 बजे से रात्रिअंत ता 13 को सूर्योदय से रात्रि 4।36 बजे तक। ता 14 को सूर्योदय से रात्रि 5।8 बजे तक। ता 17 को प्रातः 7।43 बजे से रात्रिअंत ता 18 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 19 को सूर्योदय से दिन 12।1 बजे तक। ता 21 को सायं 5।9 बजे से रात्रिअंत ता 22 को सूर्योदय से रात्रि 7।39 बजे तक। ता 29 को रात्रि 2।10 बजे से रात्रिअंत ता 30 को सूर्योदय से रात्रि 1।21 बजे तक।

त्रिपुष्कर योग - ता 20 को 2।33 दिन से 10।54 रात तक। ता. 30 को सूर्योदय से 1।21 रात तक। **पुष्य नक्षत्र** - ता. 16 को सूर्योदय से रात्रि अंत क।

भोपाल

सूर्योदय	ता.	1-5.53	7-5.48	13-5.45	19-5.41	25-5.37	30-5.34
सूर्यास्त	ता.	1-6.07	7-6.12	13-6.15	19-6.19	25-6.23	30-6.26

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

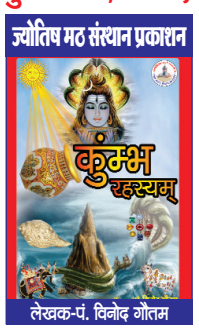

ता. 1 भानु सप्तमी
ता. 2 शीतला अष्टमी (बसौरा)
ता. 5 पापमोचिनी एकादशी
ता. 6 प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व
ता. 7 मासिक शिवरात्रि चतुर्दशी व्रतं
ता. 8 सोमवती स्नानदान अमावस्या
ता. 9 चैत्र नवरात्रि, घटस्थापना, गुड़ी पड़वा, बैठकी
ता. 10 चेटी चंड, सिंघारा दोज
ता. 11 गणगौर तीज सौभाग्य सुंदरी व्रतं
ता. 12 वैनायकी चतुर्थी व्रतं

ता. 13 रामराज्योत्सव
ता. 14 सूर्य षष्ठी व्रतं
ता. 16 दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी व्रतं
ता. 17 राम नवमी, जवारे विसर्जन
ता. 18 नवरात्रि पारणा
ता. 19 कामदा एकादशी
ता. 20 मदन द्वादशी
ता. 21 प्रदोष व्रत
ता. 22 रेणुका चतुर्दशी
ता. 23 हनुमान प्रकटो., पूर्णिमा व्रत
ता. 27 संकष्टी चतुर्थी व्रतं

मेष संक्रांति फलं

ता. 13 को 11:9 रात में मेष संक्रांति प्रारंभ होगी। भगवान सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति वराह वाहन पर सवार वृष उपवाहन कुमारी अवस्था की है। संक्रांति के प्रभाव से सभी खाद्यान्नों में महंगाई होगी। यह संक्रांति सैनिक वर्ग को सुखदायी है, साथ ही राक्षासी संज्ञक होने से दुष्ट वर्ग को सुखकारी है।

मास फल

इस माह मीन राशि में चतुर्ग्रही योग का प्रभाव रहेगा। एक राशि में 4-5 ग्रहों का जमावड़ा शुभ नहीं होता। सूर्य, चंद्र, राहु-शुक्र का ग्रहण दोष एवं मंगल शनि की युति का प्रभाव अशांति कारक है। गुरु बुध की युति धार्मिक उन्माद बढ़ाएगी। राजनेताओं के आरोप-प्रत्यारोप से सामाजिकता पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। शेयर धातु एवं खाद्यान्नों के प्रभाव सामान्य रहेंगे। प्राकृतिक प्रकोप एवं गर्मी के प्रकोप का प्रभाव परिलक्षित होगा।

इस पंचांग में वर्णित पिछले पृष्ठ का ज्ञान अवश्य पढ़ें।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

आवश्यक मुहूर्त सूत्र

पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन मुहूर्त विचार

गर्भ से दूसरे या तीसरे मास में पुंसवन तथा छठे या आठवें मास में मासपति के बलवान रहने पर सीमन्तोन्नयन संस्कार शुभ होता है इसमें गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार नहीं होता है।

शुभ वार सू.मं. एवं बृ. वारों में मतान्तर से बुध एं चंद्र तथा शुक्र वारों में दम्पति के चंद्र तथा तारा के शुद्ध रहने पर पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र मृ. पुष्य, मूल, श्रवण, पुन., हस्त, रेवती, रोहणी तथा तीनों उत्तरा नक्षत्रों में पुरुष के जन्म नक्षत्र को छोड़कर शुभ होता है।

शुभ तिथियां शुक्ल पक्ष की 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्ण पक्ष की उपर्युक्त दशमी पर्यन्त, तिथियां पूर्वाह्न में शुभ होती है।

लग्न शुद्धि ये दोनों संस्कार पुरुष ग्रहों के लग्न एवं नवमांश में , लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10 स्थानों में शुभ एं 3, 6, 11 में पापग्रहों की स्थिति में तथा चंद्रमा के 1, 6, 8, 12 से अन्यत्र रहने पर शुभ होते हैं।

नामकरण मुहूर्त विचार

बृहस्पति के मत से सूतक की समाप्ति पर अपने कुल के अनुसार नामकरण करना चाहिए। अथवा वर्णक्रम से 12, 16, 20 एवं 22वें दिन भी नामकरण शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र मृ.रे.चि. अनु. उ3. रो. ह. पुन. पुष्य, अश्वि. अभि. स्वा. श्र. ध. श. शतभिषा।

शुभ वार चंद्र, बुध, गुरु. शुक्र।

शुभ तिथियां 1, 2, 3, 5, 7, 11, 12, 13 तिथियां भद्रादिदोष से रहित रहने पर शुभ हैं।

शुभ लग्न 2, 5, 8, 11 लग्न, अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है।

लग्न शुद्धि लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10 स्थान में शुभ ग्रह एवं 3, 6, 11वें पापग्रह हों तथा 6, 8, 12 ग्रह रहित हों तो पिता-पुत्र का तारा बल विचारकर दिन से पूर्वार्द्ध में नामकरण शुभ तथा मध्याह्न में मध्यम होता है।

विशेष- व्यतिपात, संक्रांति, अमावस्या, वैधृति, ग्रहण एवं श्राद्ध के दिन, पक्ष की छिद्र एवं रिक्ता, पूर्णा तिथियां, शकुनी, किन्स्तुघ्न, विष्टि करणों को छोड़कर अन्य उपर्युक्त तिथियां ही नामकरण में ग्राह्य हैं। विहितकालतिक्रमण के बाद गुरु-शुक्र के अस्तादि से रहित उत्तरायण में शुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त विचार

छठे से आरंभ कर सम मासों में बालकों तथा पांचवें से आरंभ कर विषम मासों में बालिकाओं को अन्नप्राशन करना चाहिए।

शुभ नक्षत्र (सप्तशलाका से विद्ध एवं ग्रहण नक्षत्रों को छोड़कर) रो. उ3. मृ.रे. चि. अनु. ह. पुष्य, अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. शुभ है।

शुभ तिथियां 2, 3, 5, 7, 10, 13, 15 शुभ तथा अन्य सम।

वार चं. बु. बृ. शु. ये श्रेष्ठ तथा अन्य अशुभ।

लग्नशुद्धि जन्म लग्न से आठवें लग्न-राशि एवं नवमांश को छोड़कर 2, 3, 4, 5, 6, 7, 10, 11 लग्नों में शुभ होता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त विचार हेतु सूत्र

सौम्यायन तथा कन्यार्क रहने पर अश्विन में बुध के बलवान रहने पर गणेश तथा सरस्वती का पूजन कर विद्यारंभ शुभ होता है।

शुभ तिथि शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 6, 10, 12 तथा कृष्ण पक्ष की 2, 3, 5 तिथियां शुभ हैं।

शुभ वार बु.सू.बृ. तथा शुक्रवार शुभ हैं।

शुभ नक्षत्र अश्वि. पु.आ.अनु.मृ.पुन. ह.चि.स्व. र.ध.मू. पू3. श्लेषा, शत. शुभ हैं।

लग्न शुद्धि 2, 3, 6, 9, 12 इन लग्नों में, लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 9, 10वें शुभ ग्रह, 3, 6, 11वें पाप ग्रहों तथा आठवां ग्रह वर्जित (शुद्ध) हो तो उत्तम होता है।

कर्णवेध मुहूर्त ज्ञान

जन्म दिन से 12 या 16वें दिन तथा उसके बाद 6, 7, 8वें महीने अथवा विषम वर्ष में कर्णवेध शुभ होता है। कर्णवेध में समवर्ष, चैत्र, पौष, अधिक जन्म तथा चातुर्मास, रिक्ता एवं अमावस्या तिथि और जन्मतारा का त्याग कर देना चाहिए।

शुभ नक्षत्र पु. अश्वि. ह. पु. अ. मृ. चि. अनु. रे. श्र. ध. नक्षत्र, चन्द्रबल रहने पर शुभ होते हैं। अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. शुभ है।

वार चं. बु. बृ. तथा शुक्रवार उत्तम हैं।

शुभ तिथियां 1, 2, 3, 5, 7, 10, 12, 13, शुक्ल पक्ष में तथा 1, 2, 3, 5, 7, 10 कृष्ण पक्ष में भद्रादि कुयोग के नहीं रहने पर शुभ होती है।

शुभ लग्न 2, 3, 4, 6, 7, 9, 12 इन राशियों के लग्न तथा नवमांश शुभ है।

लग्नशुद्धि लग्न से 1, 3, 4, 5, 7, 10 स्थानों में शुभ ग्रहों तथा 3, 6, 11वें पाप ग्रहों की स्थिति में अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है। लग्नस्थ गुरु कर्णभेद में विशेष शुभकारक होता है।

मुंडन मुहूर्त ज्ञान

जन्मकाल से तीसरे से विषम वर्षों तथा चैत्र रहित उत्तरायण सूर्य के मासों में शुभ है। मनु के अनुसार प्रथम वर्ष में भी शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र ज्ये. मृग. रे. चित्रा, हस्त, अश्वि. पुष्य अश्वि. पुष्य, अश्वि., स्वाती, पुन. श्रवण, धनि., शत. इन नक्षत्रों में चंद्रमा तथा तारा के अनुकूल रहने पर शुभ।

वार चं. बु. गु. शु. भद्रादि कुयोग रहित हैं।

शुभ तिथियां 2, 3, 5, 7, 11, 13 शुक्ल पक्ष की ये तिथियां पूर्वाह्न में शुभ होती हैं।

शुभ लग्न 2, 3, 4, 6, 7, 9, 12 लग्न तथा इनके नवमांश शुभ हैं।

यज्ञोपवीत मुहूर्त बोधक ज्ञान

गुरु, शुक्र के वृद्ध-अस्त एवं शिशुत्व के अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के माघादि पांच मासों में सूर्य, चंद्र एवं गुरु की शुद्धि वश व्रतबंध शुभ माना जाता है। चैत्र मास में मीन राशि का सूर्य रहने पर भी ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत प्रशस्त है।

शुभ नक्षत्र अश्वि., ह., पुष्य, उ3. रो. श्ले., स्वा., पुन. श्रव. ध. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा3. रेव. तथा आर्द्रा, बेध रहित नक्षत्र शुभ हैं।

शुभ तिथियां 2, 3, 5, 10, 11, 12 शुक्ल पक्ष तथा 2, 3, 5 कृष्ण पक्ष भद्रादि रहित तिथियां मध्याह्न के उपरांत शुभ हैं।

शुभ वार सू. चं. बु. बृ. शु. इन वारों में रोगबाण के नहीं रहने पर शुभ।

लग्न शुद्धि व्रतबंध में 3, 6 में सभी पापग्रह, 2, 7, 3, 10वें चंद्रमा 1, 4, 5, 7, 9, 10 के शुभ ग्रह तथा 11वें सभी ग्रह शुभ होते हैं। व्रतबंध लग्न से 6, 8 में चं.शु.बृ. तथा लग्नेश शुभ नहीं होते। चंद्र एवं शुक्र 12वें में अशुभ, 1, 5, 8 में पापग्रह अशुभ, 6, 8, 12 शुभ ग्रह अशुभ तथा 3, 6, 11 के पापग्रह शुभ होते हैं। पूर्ण चंद्रमा वृष एवं कर्क राशि का होकर लग्न में श्रेष्ठ होता है अन्यथा नहीं, लग्न में सूर्य भी शुभ है, परन्तु चन्द्र नवमांश न हो।

प्लाट, जमीन जायदाद खरीदने-बेचने का मुहूर्त विचार

शुभ नक्षत्र - अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।

श्रेष्ठ तिथियां -2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15

श्रेष्ठ बार- रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार

वर्जित समय - शुक्रवार का दिन, धनु-मीन की संक्रांति, पितर पक्ष, होलाष्टक,

मुहूर्त सूत्र

गुरु अस्त, शुक्र अस्तकाल।

चुनाव में नामांकन मुहूर्तकाल ज्ञान

दोनों पक्ष की शुभ तिथियां-2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, 15. **शुभवार**-रवि, सोम, बुध, शुक्रवार। **सूर्य की होरा**-टेंडर लेने, चुनाव लड़ने, नौकरी आदि के परचे जमा करने, राजकाज का चार्ज लेने, शपथ ग्रहण करने में सर्वश्रेष्ठ रहती है। **शुभ नक्षत्र**-अश्विनी, रोहणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा. हस्त, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण धनिष्ठा, उ.भा. और रेवती। **शुभ लग्न**-जिस लग्न से नवम एवं दशम भाव प्रभावशाली हो और लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो स्वयं की राशि से चंद्रमा शुभ स्थान में हो। ऐसे समय पर स्थिर लग्न देखकर चुनाव में नामांकन भरना चाहिए।

गृहारंभ मुहूर्त

शुभ नक्षत्र मृगशीर्ष, पुष्य, अनुराधा उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शततारका, चित्रा, हस्त, स्वाती, रोहिणी, रेवती ये 13 नक्षत्र गृहारंभ के लिए शुभ होते हैं।

वार सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार ये पांच वार गृहारंभ के लिए शुभ होते हैं।

मास वैशाख, श्रावण, माघ, पौष, फाल्गुन ये पांच महीने गृहारंभ के लिए उत्तम शुभ फलदायी होते हैं।

शुभ लग्न वृषभ, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन ये 8 लग्न गृहारंभ के लिए शुभ फलदायी होते हैं।

शुभ ग्रह गृहारंभ के समय 8वें एवं 12वें स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10वें स्थानों में शुभ ग्रह एवं 3, 4, 11वें स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त

शुभ नक्षत्र उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी, मार्गशीर्ष, चित्रा, अनुराधा, रेवती ये 8 नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश के लिए शुभ होते हैं।

वार सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार ये पांच वार गृह प्रवेश के लिए शुभफलदायी होते हैं।

शुभ तिथियां 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 13 ये तिथियां गृह प्रवेश के लिए शुभ रहती हैं।

शुभ लग्न वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ ये 4 लग्न गृह प्रवेश के लिए उत्तम हैं। मिथुन, कन्या, धनु, मीन ये चार लग्न मध्यम हैं।

जीर्ण पुराने या किराये के मकान में प्रवेश मुहूर्त

शुभ नक्षत्र शततारका, पुष्य स्वाती, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मार्गशीर्ष, रेवती उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी ये 12 नक्षत्र पुराने या किराये के मकान में प्रवेश के लिए शुभ होते हैं।

वार सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार ये पांच वार पुराने या किराये के मकान में प्रवेश के लिए शुभ होते हैं।

शुभ तिथियां 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13 ये तिथियां पुराने या किराये के मकान में प्रवेश के लिए शुभ होते हैं।

मास कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास पुराने या किराये के मकान में प्रवेश के लिए शुभ रहते हैं।

व्यापार/दुकान प्रारंभ करने का मुहूर्त

शुभ नक्षत्र रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, पुष्य, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, अश्विनी इन दस नक्षत्रों में दुकान प्रारंभ करना शुभ है।

वार सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, इन वारों में दुकान प्रारंभ करना शुभफलदायी होता है।

तिथियां 4, 9, 14 ये रिक्ता तिथियां एवं अमावस्या छोड़कर बाकी सभी तिथियां दुकानारंभ के लिए शुभ हैं।

नौकरी पद प्रतिष्ठा का मुहूर्त

शुभ नक्षत्र ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, मूल, अश्लेषा, मघा ये 9 नक्षत्र नौकरी प्रारंभ करने के लिए शुभ हैं।

वार रविवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, ये 4 दिन नौकरी प्रारंभ करने के लिए शुभ हैं।

तिथियां 1, 5, 6, 8, 10, 13, 15 ये तिथियां नौकरी प्रारंभ करने के लिए शुभ हैं।

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

शुभ नक्षत्र अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रेवती 12 नक्षत्रों में प्रतिष्ठा करना श्रेयस्कर है।

वार सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार इन दिनों में प्रतिष्ठा करें।

तिथियां शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा एवं कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और पंचमी ये तिथियां प्रतिष्ठा के लिए शुभ है।

वस्तु खरीदी के लिए मुहूर्त

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, पुष्य, हस्त,अभिजीत इन नक्षत्रों में 4, 9, 14 तिथियों को मंगलवार एवं कुंभ लग्न छोड़कर अन्य तिथि, दिन व लग्नों में चन्द्रमा और शुक्र लग्न में हो एवं 8, 12 स्थानों में पापग्रह न हो एवं 2, 10, 11 स्थानों में शुभ ग्रह हो तो वस्तु खरीदना शुभ है।

वस्तु विक्रय के लिए मुहूर्त

पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, विशाखा, कृतिका, अश्लेषा, भरणी इन नक्षत्रों में कुंभ लग्न छोड़कर किसी भी लग्न के 1, 4, 5, 7, 9, 10 स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा 2, 6, 11 स्थान में अशुभ ग्रह ऐसे लग्न में 1, 2, 5, 10, 11, 15 एवं कृष्ण पक्ष की 1, 2, 5 इन तिथियों में वस्तु का विक्रय करना श्रेयस्कर है।

कालसर्प शांति विधि के लिए मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती इन 16 नक्षत्रों में से किसी भी दिन तथा प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, अमावस्या, शुक्ल पक्ष की द्वितीया तथा पंचमी, श्रावण कृष्ण एवं शुक्ल पंचमी (नागपंचमी तथा शिवरात्रि) कालसर्प योग शांति विधि के लिए शुभ मुहूर्त है।

शल्यक्रिया (ऑपरेशन) के लिए मुहूर्त

मेष, कर्क, तुला, मकर, वृषभ, सिंह, कुंभ ये सात लग्न शल्य क्रिया के लिए शुभ हैं। शल्य क्रिया के समय रवि, मंगल एवं गुरु केंद्र स्थानों में हों, चंद्र बलवान एवं शुभ स्थान में हो। इष्टकालीन लग्नेश शुभ स्थानों में होकर उसकी दृष्टि लग्न पर हो। सोमवार, मंगलवार में शुभयोग हो। अशुभ योग कभी न हो। रवि एवं सोम, रवि एवं लग्नेश का भी शुभयोग हो। अष्टम स्थान में एवं षष्ठ स्थान में लग्नेश, रवि एवं चंद्र न हो। जिसका ऑपरेशन करना हो उसके लग्न से ऑपरेशन का लग्न अष्टम न हो। शरीर के जिस अंग का ऑपरेशन करवाना हो उस हिस्से को जन्मांग में दर्शाया जाना हो, उस हिस्से में चंद्र या पापग्रह नहीं हो। ऑपरेशन दिन में ही करवाया जाना चाहिए।

सर्वारंभ मुहूर्त

सभी कार्यों का आरंभ करने के लिए अपने जन्मांग के लग्न से बारहवां और आठवां स्थान शुद्ध होना चाहिए। इन दो स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। जन्म राशि से तीसरा, छठा, दसवां, ग्यारहवां लग्न हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभ ग्रह युक्त हों, चंद्रमा जन्म लग्न या जन्म राशि के तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें स्थान में होने पर कोई भी कार्य प्रारंभ किया जाना शुभ माना जाता है।

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम, ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com
पंजीयन क्रमांक 01/01/26063/12

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 मार्च की

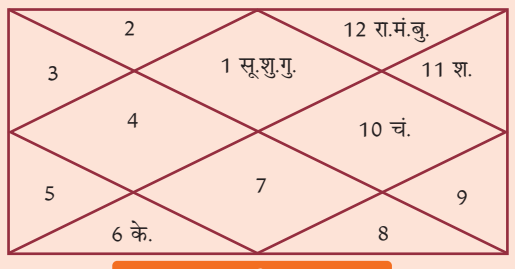

2	1 सू.शु.गु.	12 रा.मं.बु.	11 श.
3	4	10 चं.	9
5	7	6 के.	8

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- मेष में, ता. 14 को 9:29 रात से वृष में। **मंगल -** मीन में, **बुध-** मीन में, ता. 8 को 1:16 रात से मेष में। ता. 31 को 11:59 रात से वृष में। **गुरु-** मेष में, ता. 1 को 4:20 सायं से वृष में, **शुक्र-** मेष में, ता. 19 को 4:36 दिन से वृष में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 5 को 5।53 सायं से ता. 7 को 2।55 दिन तक। ता. 14 को 3।11 दिन से ता. 16 को 7।18 रात तक। ता. 24 को 9।49 दिन से ता. 26 को 10।28 दिन तक।

गुरु पूर्व में उदित ता. 6 को रात्रि अंत से पश्चिम में अस्त, शुक्र पूर्व महीने से अस्त

ज्योतिष मठ संस्थान

गौतम पंचांग

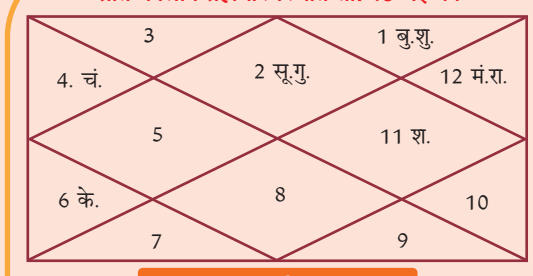

सूर्य उत्तरायण

ग्रीष्म ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 15 मई की

3	2 सू.गु.	1 बु.शु.	12 मं.रा.
4. चं.	5	11 श.	10
6 के.	8	7	9

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा मकर राशि का, ता. 2 को 11।32 बजे दिन से कुंभ का। ता. 4 को 2।0 बजे दिन से मीन का। ता. 6 को 4।19 बजे दिन से मेष का। ता. 8 को 7।34 बजे रात से वृष का। ता. 10 को 12।23 बजे रात से मिथुन का। ता. 13 को 7।30 बजे प्रातः से कर्क का। ता. 15 को 5।3 बजे सायं से सिंह का। ता. 17 को 4।29 बजे रात से कन्या का। ता. 20 को 4।9 बजे दिन से तुला का। ता. 22 को 2।28 बजे रात से वृश्चिक का। ता. 25 को 10।22 बजे दिन से धनु का। ता. 27 को 3।58 बजे दिन से मकर का। ता. 29 को 7।37 बजे रात से कुंभ का। ता. 31 को 10।9 बजे रात से मीन राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2530-31
श्री महर्षि संवत 107

मई 2024

संवत् 2081
वैसाख-ज्येष्ठ मास

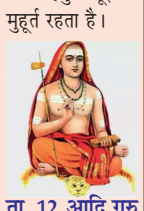

ता. 10 अक्षय तृतीया/श्री परशुराम प्रकटोत्सव
इस दिन भगवान परशुराम का अवतरण हुआ था। अक्षय तृतीया को किए गए कार्य अक्षय रहते हैं। इस दिन मांगलिक कार्यों हेतु अबूझ मुहूर्त रहता है।

ता. 12 आदि गुरु शंकराचार्य जयंती
आदि गुरु शंकराचार्य भगवान शिव अवतार के थे। उन्होंने अद्वैत वेदांत के दर्शन का विस्तार किया। उन्होंने उपनिषदों, भगवद गीता और ब्रह्मसूत्रों के प्राथमिक सिद्धांतों जैसे हिंदू धर्मग्रंथों की व्याख्या एवं पुनर्व्याख्या की। उन्होंने भारत में चार मठों की स्थापना भी की।

शिव वास अग्नि वास
ता. 1, 8, 12, 17, 20, 24, 28 को शिववाश एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	8	12।35	रात	वैसाख कृष्णपक्ष
2	9	10।27	रात	
3	10	8।7	रात	
4	11	5।41	सायं	
5	12	3।14	दिन	
6	13	12।52	दिन	
7	14	10।38	दिन	
8	30	8।38	प्रात:	
9	1	6।56	प्रात:	वैसाख शुक्लपक्ष
10	2 3	5।35	प्रात:	
11	4	4।21	रात	
12	5	4।25	रात	
13	6	5।0	रात	
14	7	दिन	रात	
15	7	5।58	प्रात:	
16	8	7।28	प्रात:	
17	9	9।18	दिन	
18	10	11।18	दिन	
19	11	1।18	दिन	
20	12	3।10	दिन	
21	13	4।45	सायं	
22	14	5।54	सायं	
23	15	6।35	सायं	
24	1	6।47	रात	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
25	2	6।28	सायं	
26	3	5।40	सायं	
27	4	4।25	दिन	
28	5	2।47	दिन	
29	6	12।51	दिन	
30	7	10।40	दिन	
31	8	8।18	प्रात:	

SUNDAY रवि	**भद्रा** ता. 3 को 9।19 बजे दिन से 8।7 बजे रात्रि ता. 6 को 12।52 बजे दिन से 11।49 बजे रात्रि ता. 11 को 4।33 बजे दिन से 4।21 बजे रात्रि अंत, ता. 15 को 5।58 बजे प्रातः से 6।49 बजे सायं तक ता.18 को 12।25 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 19 को सूर्योदय से 1।18 बजे दिन ता. 22 को 5।54 बजे सायं से ता. 23 को 6।19 बजे प्रातः ता. 26 को 6।9 बजे प्रातः से 5।40 बजे सायं ता. 29 को 12।53 बजे दिन से 11।51 बजे रात्रि तक।	**5** प्रदोष व्रतं उत्तर भाद्रपद 5।53 सायं पंचक वैसाख कृष्ण 12	**12** ध्वांक्ष योग आर्द्रा 12।49 दिन आदि शंकराचार्य जयंती वैसाख शुक्ल 5	**19** एकादशी व्रतं सर्वे. हस्त 2।56 रात मानस योग वैसाख शुक्ल 11	**26** गणेश चतुर्थी व्रतं मूल 10।28 दिन सिद्धि योग, चंद्रो.9।55 रात ज्येष्ठ कृष्ण 3
MONDAY सोम		**6** शिव चतुर्दशी व्रतं रेवती 4।19 दिन मातंग योग, पंचक स. वैसाख कृष्ण 13	**13** धूम्र योग पुनर्वसु 1।46 दिन रामानुजाचार्य जयंती वैसाख शुक्ल 6	**20** प्रदोष व्रतं चित्रा 5।16 रात अंत परशुराम रुक्मणि द्वादशी वैसाख शुक्ल 12	**27** पूर्वाषाढ़ 10।05 दिन उत्पात योग ज्येष्ठ कृष्ण 4
TUESDAY मंगल		**7** स्नानदान अमावस्या अश्विनी 2।55 दिन वैसाख कृष्ण 14	**14** गंगा सप्तमी पुष्य 3।11 दिन चित्रगुप्त प्रकटो. वैसाख शुक्ल 7	**21** नरसिंह चतुर्दशी स्वाती दिनरात नरसिंह अवतार वैसाख शुक्ल 13	**28** उत्तराषाढ़ 9।19 दिन मानस योग ज्येष्ठ कृष्ण 5
WEDNESDAY बुध	**1** शीतला अष्टमी श्रवण 12।10 रात छत्र योग वैसाख कृष्ण 8	**8** शतुवाई अमावस्या भरणी 1।45 दिन श्राद्ध अमावस वैसाख कृष्ण 30	**15** श्लेष 5।3 सायं राक्षस योग, केवट जयंती वैसाख शुक्ल 7	**22** व्रत की पूर्णिमा स्वाती 7।15 प्रातः धूम्र योग वैसाख शुक्ल 14	**29** छत्र योग श्रवण 8।14 दिन पंचक प्रारंभ ज्येष्ठ कृष्ण 6
THURSDAY गुरु	**2** श्री वत्स योग धनिष्ठा 10।46 रात पंचक प्रारंभ वैसाख कृष्ण 9	**9** लुंबक योग कृतिका 12।54 दिन गुरु अंगदेव जयंती वैसाख शुक्ल 1	**16** सीता नवमी मघा 7।18 रात जानकी जयंती वैसाख शुक्ल 8	**23** स्नानदान पूर्णिमा विशाखा 8।45 दिन बुध जयंती वैसाख शुक्ल 15	**30** धनिष्ठा 6।53 प्रा.त श्रीवत्स योग, पंचक ज्येष्ठ कृष्ण 7
FRIDAY शुक्र	**3** सौम्य योग शतभिषा 9।12 रात पंचक वैसाख कृष्ण 10	**10** अक्षय तृतीया रोहिणी 12।25 दिन परशुराम प्रकटोत्सव वैसाख शुक्ल 2, 3	**17** पूर्वा फा. 9।49 रात सिद्धि योग वैसाख शुक्ल 9	**24** अनुराधा 9।49 दिन मां आनंदमयी जयंती ज्येष्ठ कृष्ण 1	**31** पंचक, सौम्य योग शत, पूभा 5।21 प्रातः रानी अहिल्याबाई जयंती ज्येष्ठ कृष्ण 8
SATURDAY शनि	**4** वरुथनी एकादशी व्रतं पूर्व भाद्रपद 7।32 रात कालदंड योग, पंचक वैसाख कृष्ण 11	**11** गणेश चतुर्थी व्रतं मृगशिर 12।26 दिन वज्र योग वैसाख शुक्ल 4	**18** उत्तरा फा. 12।23 रात उत्पात योग वैसाख शुक्ल 10	**25** नवतपा प्रारंभ ज्येष्ठा 10।22 दिन नारद-आल्हा जयंती ज्येष्ठ कृष्ण 2	**पंचक** ता. 2 को 11 बजकर 32 मिनिट दिन से ता. 6 को 4 बजकर 19 मिनिट दिन तक। ता. 29 को 7।37 रात से पंचक शुरु होंगे।

मुहूर्त

विवाह- गुरु-शुक्र अस्त विवाह मुहूर्त नहीं।
नामकरण- ता. 6, 9, 10, 20, 24, 27, 29, 30
अन्नप्राशन- ता. 3, 9, 10, 23, 29, 30
सीमांत पुंसवन- ता. 10, 26, 28
नवीन वस्त्र- ता. 9, 10, 23, 24, 29
प्रसूति स्नान- ता. 2, 9, 23, 28
व्यापार आरंभ-ता. 9-10, 13, 20, 24, 27
वाहन क्रय- ता. 1, 10, 23, 24, 29
शल्यक्रिया- ता. 9, 14, 23
वाटिका रोपण- ता. 9, 10, 23, 24, 25
औषधि सेवन- ता. 1, 10, 20, 23, 24, 25, 29
यात्रा- ता. 10, 14, 23, 24
धान्य छेदन-ता. 10, 20, 24, 26, 29, 31
नवान्य भक्षण-ता. 10, 20, 23
वस्तु विक्रय - ता. 17, 20, 23, 31
शस्त्र निर्माण- ता. 25, 26
पशु क्रय-विक्रय- ता. 23, 24, 29
आभूषण निर्माण ता. 14, 28
नव निर्माण- ता. 10, 17, 23, 31
शिल्प विद्या-ता. 9, 10, 20, 23, 27, 31

विविध मुहूर्त स्थूल ज्योतिषीय गणना के आधार पर दिए जाए हैं। मुहूर्तो में समय एवं लग्न का निर्धारण करें, समय शुद्धि पश्चात मुहूर्त का उपयोग करें।

राशिफल

मेष - मतभेद बढ़ेगा, मेहमान आगमन।
वृष- व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
मिथुन - स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
कर्क - प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
सिंह - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कन्या - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
तुला - चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
वृश्चिक - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
धनु - प्रतिष्ठा में वृद्धि, भूमि लाभ, यात्रा।
मकर- शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
कुम्भ- लाभ, श्रम अधिक, बेवजह तनाव।
मीन- पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 4 वल्लभाचार्य जयंती
ता. 12 आदिशंकराचार्य जयंती
ता. 13 श्री रामानुजाचार्य जयंती
ता. 15 अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस
ता. 16 वगलामुखी जयंती।
ता. 21 नृसिंह जयंती
ता. 25 नारद जयंती।
ता. 17 विश्व दूरसंचार दिवस

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 5 को सूर्योदय से 5।53 बजे सायं तक। ता. 7 को सूर्योदय से 2।55 दिन, ता 8 को 1।44 बजे दिन से रातअंत तक। ता 13 को 1।46 बजे दिन से रातअंत तक। ता 14 को 3।11 बजे दिन से रातअंत तक। ता. 19 को सूर्योदय से 2।56 रात, ता 23 को 8।45 बजे प्रातः से रातअंत तक। ता 24 को सूर्योदय से 9।49 बजे दिन तक। ता 26 को सूर्योदय से 10।28 बजे दिन तक।

अमृतसिद्धि योग- ता 7 को सूर्योदय से 2।55 बजे दिन तक। ता 19 को सूर्योदय से 2।56 बजे रातअंत तक। **रवियोग-** ता 10 को दिन 12।25 बजे से रात्रिअंत ता 11 को सूर्योदय से दिन 10।21 बजे तक। ता 12 को सूर्योदय से दिन 12।49 बजे तक। ता 13 को दिन 1।46 बजे से रात्रिअंत ता 14 को सूर्योदय से दिन 3।11 बजे तक। ता 16 को रात्रि 7।18 बजे से रात्रिअंत ता 17 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 18 को सूर्योदय से रात्रि 12।23 बजे तक। ता 20 को रात्रि 5।16 बजे से रात्रिअंत ता 21 को सूर्योदय से रात्रि 7।21 बजे तक। ता 22 को सूर्योदय से प्रातः 7।15 बजे तक। ता 29 को प्रातः 8।14 बजे से रात्रिअंत ता 30 को सूर्योदय से प्रातः 6।53 बजे तक। **त्रिपुष्कर योग-** ता. 4 को 5।41 शाम से 7।32 रात तक।

पुष्य नक्षत्र - ता. 13 को 1।46 दिन से ता. 14 को 3।11 दिन तक।

भोपाल

	ता.						
सूर्योदय	ता.	1-5.34	7-5.30	13-5.27	19-5.25	25-5.22	30-5.21
सूर्यास्त	ता.	1-6.26	7-6.30	13-6.33	19-6.35	25-6.38	30-6.29

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 1 शीतला अष्टमी व्रतं
ता. 4 वरुथिनी एकादशी
ता. 5 प्रदोष व्रत (कृष्ण)
ता. 6 मासिक शिवरात्रि चतुर्दशी व्रतं
ता. 7 श्राद्ध अमावस्या
ता. 8 शतुवाई, स्नादान अमावस्या
ता. 10 अक्षय तृतीया
ता. 11 वैनायकी चतुर्थी व्रतं
ता. 14 गंगा सप्तमी
ता. 16 जानकी जयंती, चण्डिकानवमी

ता. 19 मोहिनी एकादशी व्रतं
ता. 20 प्रदोष व्रत
ता. 22 नरसिंह चतुर्दशी
ता. 23 स्नानदान व्रत पूर्णिमा व्रत
ता. 25 नवतपा प्रारंभ
ता. 26 श्री गणेश चतुर्थी व्रतं

जैन व्रत पर्व
ता. 10 रोहिणी व्रत, वर्षी तप पारणा अक्षय तृतीया
ता. 7, 22 पाक्षिक प्रतिक्रमण

वृष संक्रांति फलं

ता. 14 को 9:29 रात में वृष संक्रांति होगी। भगवान सूर्य वृष राशि में प्रवेश कर महोदरी संज्ञक संक्रांति का निर्माण करेंगे। यह संक्रांति घोटक वाहन पर सवार, सिंह उपवाहन लिए कृष्ण वस्त्र धारण किए हुए वृद्धावस्था में बैठी हुई स्थिति में प्रवेश कर रही है। इस संक्रांति के प्रभाव से अन्नादि के भाव स्थिर सूचक रहेंगे। यह संक्रांति चंडाल वर्ग को सुखद चोर तस्कर, ठगों को भी शुभकारी है।

मास फल

इस माह सूर्य गुरु शुक्र का त्रिग्रही योग तथा मंगल राहु की युति का प्रभाव अशांति एवं तटीय क्षेत्रों में तनाव की स्थिति निर्मित कर सकता है। देश में सत्ता-संघर्ष के साथ आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी रहेगा। केंद्रीय मंत्रिपरिषद में बदलाव देखने को मिलेंगे। सभी खाद्य पदार्थों में तेजी के साथ शेयर सोना, चांदी आदि गोता लगाकर सुधरते नजर आएंगे। वाहन दुर्घटनाओं में वृद्धि का संकेत ग्रह दे रहे हैं।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

तंत्र, मंत्र, यंत्र

बालाप्रसाद विश्वकर्मा
तांत्रिक मार्तण्ड नागौद सतना, (मप्र),
मो. 9407063626

श्रीमती इंदिरा पाठक
तंत्रज्ञ देवी उपासक अमानगंज-पन्ना (मप्र),
मो. 9424671257

तंत्र रहस्यम्

गोक्षीधारधवल घनसुन्दर खं, चिन्तामणि चतुर्वेदमयं जनेशः।
गंधप्रियं चिन्मघं चिर्जीवितं त्यं, नमामि निखिलेश्वर पाद निर्मिलम।।

तांत्रिक षट्कर्म—

'तन्यते विस्तार्यते ज्ञानमनेन इति तन्त्रं'

अर्थात जिसके आधार पर ज्ञान का विस्तार किया जाता है उसे तंत्र कहते हैं, सदगुरुदेव के अनुसार तंत्र शब्द की उत्पत्ति 'तनु धातु' से एवं औणार्दिक 'ष्ट्रन' प्रत्यय के योग से हुई है . शक्ति और तंत्र को अलग नहीकिया जा सकता ये एक-दूसरे के पर्याय हैं क्योंकि इनमें पूर्ण रूप से सम्बन्ध है तंत्र के बिना शक्ति प्राप्त नहीं की जा सकती और वहीँ शक्ति तंत्र आधीन होती है अत: जिस साधक या शिष्य को शक्तिसंपन्न बनाना है तो उसे तंत्र अपनाना ही होगा।

यदि किसी साधक ने तंत्र क्षेत्र का नाम सुना हो और उसे षट्कर्म के बारे में न पता हो ऐंसा हो ही नहीं सकता क्योंकि ये तंत्र की अति आवश्यक विधा है हालाँकि ये भी सत्य है कि इसका उपयोग सामाजिक कार्यों के लिए जैसा होना चाहिए था वैसा हुआ नहीं है क्योंकि इसके कई अर्थों के अनुसार इसे जन सामान्य में मैली विद्या जैसी मानी जाती है , किन्तु वास्तविकता में ऐंसा है नहीं ये एक अति उच्च और विशिष्ट विद्या का स्वरुप है जिसके अनेकों आयाम हैं । पर अभी तो आवश्यक ये है कि हम यह जान सके कि तांत्रिक षट्कर्म है क्या ?

वशीकरण या आकर्षण, शांति, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण ये छः प्रकार के कर्म या साधनाओं के वर्गीकृत के सम्मिलित स्वरुप को षट्कर्म कहते हैं और इनका सामान्य सा अर्थ है।

1- **वशीकरण**- अर्थात किसी को भी अपनी आज्ञानुसार चलाना यानि वह आपकी प्रत्येक बात को माने । आपका रंग रूप कैसे भी हो किन्तु आपका आकर्षण इतना हो कि प्रत्येक व्यक्ति आपकी बात सुने आप जहाँ भी जाएँ सबकी आँखे आप पर हों और आप आकर्षण का केंद्र हों ।

2- **शांति कर्म** का साधारण सा अर्थ है, साधक पर किसी भी बुरे ग्रह या ग्रहों की अशुभ अशुभता का या जो देवी-देवता जिनमें कुल देवी देवता से लेकर अनेकों ग्राम देवता और अन्य भी हो सकते हों उनके क्रोध और दुस्प्रभाव का प्रभाव का शमन हों सके ये क्रम शांति कर्म के अंदर आते हैं

3- **विद्वेषण** का सामान्य अर्थ कि किन्ही दो व्यक्तियों के बीच मतभेद पैदा करना या झगडा करवाना ।

4-**उच्चाटन,** मतलब जी या मन का उचाट होना अर्थात जिस व्यक्ति पर ये प्रयोग किया जाता है उसे उसके इक्छित विषय से उसके मन-मस्तिष्क के विचारों को हटा देना।

5-**स्तम्भन** का साधारण अर्थ है की किसी की गति कैसी भी रोक देना ।

6-**मारण**- अर्थात प्रयोग द्वारा किसी को भी मार देना मृत्यु देना ।

किसी भी व्यक्ति को या साधक को तब तक तांत्रिक कहलाने का अधिकार नहीं है जब तक वो इन कर्मों की सिद्धि को पूर्णता के साथ सिद्ध न कर ले इस विधा को किसी अन्य दृष्टिकोण से न देखकर केवल इतना समझ लें कि मारण मोहन जो जाने वो सारा ब्रह्मांड पछाड़े।

प्रभावशाली मंत्र

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्
उर्वारुक मिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरैण्यम भर्गो देवस्य
धी महि धियोयोनः प्रचोदयात्

सौभाग्य मंत्र

ॐ देहि सौभाग्य आरोग्यम् देहि मे परमं सुखम्।
रूपम देहि जयं देहि यशोदेहि द्विशो जाहि।।

सिद्धि मंत्र

ॐ सर्वे ग्रहाणांबै भौवायनाः चेतनाः चरणः चरन्ति,
प्राणायनो मतिष्तस्यैः मंथिनत्वात् मिमिक्षत्

नवार्ण मंत्र

ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चैः

नवरात्रि विशेष

हिंदू धर्म के अनुसार, एक वर्ष में चार नवरात्र होती है। वर्ष के प्रथम मास अर्थात चैत्र में प्रथम नवरात्र होती है। चौथे माह आषाढ़ में दूसरी नवरात्र होती है। इसके बाद अश्विन मास में प्रमुख नवरात्र होती है। इसी प्रकार वर्ष के ग्यारहवें महीने अर्थात माघ में भी गुप्त नवरात्र मनाने का उल्लेख एवं विधान देवी भागवत तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। अश्विन मास की नवरात्र सबसे प्रमुख मानी जाती है। इस दौरान गरबों के माध्यम से माता की आराधना की जाती है। दूसरी प्रमुख नवरात्र चैत्र मास की होती है। इन दोनों नवरात्रियों को क्रमशः शारदीय व वासंती नवरात्र के नाम से भी जाना जाता है। इसके अतिरिक्त आषाढ़ तथा माघ मास की नवरात्र गुप्त रहती है। इसके बारे में अधिक लोगों को जानकारी नहीं होती, इसलिए इन्हें गुप्त नवरात्र कहते हैं।

तंत्र साधना रहस्य

कपाल भैरवी, गुरु प्रदत्तीय सिद्ध अनुष्ठान हेतु चार देवियों के आवाहन पूजन अनुष्ठान का महत्व है।

1 **बगलांनुमुखी**- इन देवी की पूजा-अनुष्ठान शत्रुओं से विजय प्राप्ति हेतु करनी चाहिए।

2.अकालानुमुखी-अकाल घटना अथवा अकाल मृत्यु की संभावना को समाप्त करने के लिए इन देवी की पूजा अनुष्ठान किया जाता है।

3. मोक्षानुमुखी - जब अकाल मृत्यु के पश्चात मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है और वह पृथ्वी पर मोक्ष की कामना से भटकता रहता है। मोक्ष प्राप्त कराने हेतु मोक्षानुमुखी देवी की आराधना करें।

4. प्रेतानुमुखी- जब किसी महल अथवा सुनसान भवन स्थान आदि में प्रेत का वास हो जाता है, ऐसी स्थिति में भवन स्वामी को परेशानी का सामना करना पड़ता है। नकारात्मक ऊर्जा को खदेड़ने के लिए प्रेतानुमुखी देवी का आवाहन किया जाता है।

तंत्र साधना हेतु दीक्षा परम आवश्यक है। बिना ज्ञानी गुरु की दीक्षा के तंत्र साधना में बाधाएं आती हैं।

1 स्पर्श दीक्षा, 2 दृग दीक्षा , 3 वेध दीक्षा , 4 क्रिया दीक्षा , 5 वर्ण दीक्षा, 6 कला दीक्षा, 7 शाम्भवी दीक्षा और, 8 वाग् दीक्षा। काल का कलन (नाश) करने के कारण इन्हें काली कहा जाता है।

देवी तंत्र की शक्तिशाली माता काली हैं। काली सर्व प्रथम है इसलिए इन्हें आध्या (आद्या) भी कहा जाता है। काली के वैसे तो अनन्त भेद है , पर मुख्य भेद आठ ही है- 1 चिन्तामणि काली, 2 स्पर्शमणि काली, 3 सन्ततिप्रदा काली, 4 सिद्धि काली, 5 दक्षिणा काली, 6 कामकला काली, 7 हंस काली, 8गुह्य काली।

काली तंत्र के मतानुसार- साधक कालिका के चरण कमलों की पूजा करके आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, बल, पुष्टि, महद् यश (कीर्ति), कवित्व शक्ति, भोग और मोक्ष प्राप्त करनें में समर्थ होते है।

साधक की साधना का फल उसकी भक्ति की शक्ति के अनुरूप ही प्राप्त होता है। साधना के समय पूर्ण श्रद्धा भक्ति एवं विश्वास से पूरे शरीर, मन को स्थिर करने के पश्चात गुरु स्मरण करके साधना की शुरुआत करें। कई बार साधना के समय विघ्न-बाधाएं एवं देरी से विश्वास में कमी न होने दें। ऐसा होने पर पुनः नई गति एवं शक्ति से साधना प्रारंभ करें।

सिद्धि प्राप्ति के पश्चात इसका दुरुपयोग न करें। उपयोग स्वरूप परोपकार एवं सिद्धिफल की प्राप्ति हेतु ही करें।

जीवन में जरूरी है आयुर्वेद

हम वर्षों से आपको आराम देने का कार्य करते आ रहे हैं। हमने देखा है कि जब आप कार्य करके थक जाते हैं पश्चात आपको ऐसा लगता है कि कोई सहारा देकर हाथ पैर हथेली का दर्द दूर कर दे। ऐसे में आपको एक विशेष प्रशिक्षित विषय-विशेषज्ञ की आवश्यकता होगी। जो आपकी संपूर्ण शरीर की पीड़ा को दूर कर सके। थोड़ा मालिस, थोड़ा तकनीकी व्यायाम आदि के द्वारा प्राप्त सुख अगर आप ऐसे किसी सुख की अपेक्षा करते हैं तो हमसे संपर्क करें।

भाग-दौड़ और तनाव, गृहस्थ जीवन में समय की कमी होने की वजह से लोगों का ध्यान परंपरागत आयुर्वेदिक नुस्खों से दूर हो गया है और धीरे-धीरे रसायनयुक्त घातक उत्पादों ने घर-घर तक अपने पैर पसार लिए हैं। जिस कारण शरीर में बीमारियों को आमंत्रण निमंत्रण देने जैसी स्थिति बनती है। किन्तु आज दुनियाभर के लोग अपनी परंपरागत आयुर्वेदिक नुस्खों को अपनाकर शरीर स्वस्थ बनाकर चेहरों के सौन्दर्य को निखार रहे हैं। संतोष योगी जी जिनका अपना अनुभव फिल्मी जगत के कलाकारों के बीच रहकर हुआ। अपने अनुभव के अनुसार कलाकार खुद आयुर्वेदिक नुस्खे अपनाकर अपने शरीर को कांतिमय बना रहे हैं, लेकिन वही कलाकार रासायनिक क्रीमों का प्रचार धड़ल्ले से करते हैं, परन्तु उपयोग नहीं करते। भारतीय औषधियों को अपने जीवन में शामिल कर उसका उपयोग कैसे किया जाए यह जानना बड़ी उपलब्धि है। योगीजी के अनुसार चेहरे की सुन्दरता के लिए दो टमाटर का रस और आधा चम्मच शहद मिलाकर चेहरे पर लगाया जाए और 20 मिनट के बाद धो लिया जाए तो तुरंत फर्क नजर आएगा। चेहरे में तेज एवं निखार दिखाई देगा। अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए संपर्क करें।

संतोष योगी, सौन्दर्य, मालिस विशेषज्ञ इंदौर, मुंबई
मो. 883939328460, 9630731410

शुभफलदायी होते हैं मुहूर्त

मुहूर्त हमारे कार्यों को बल प्रदान करते हैं। श्रेष्ठ मुहूर्त में किए गए कार्यों की सफलता हजार गुना बढ़ जाती है तथा कार्य सुगमता से संपन्न हो जाता है। शास्त्रानुसार अबूझ मुहूर्तों में प्रातःकाल, सूर्योदयकाल का समय एवं दोपहर को अभिजित काल का समय तथा सायंकाल में प्रदोषकाल, गौधूलि बेला का समय एवं रात्रि में महानिशाकाल का समय विशेष तौर पर मुहूर्त की श्रेणी में आता है। प्रातःकाल का मुहूर्त ऋषियों के लिए दोपहर का मुहूर्त व्यापारियों के लिए एवं सायंकाल का मुहूर्त ग्रहस्थों के लिए तथा महानिशाकाल का मुहूर्त तांत्रिक, अघोरियों के लिए सुनिश्चित किया गया है। इसके अतिरिक्त मुहूर्त के अभाव में शुभ, लाभ, चर एवं अमृत का चौघड़िया सफलताकारी होता है। राहुकाल देखकर समय त्याज्य कर कार्य आरंभ करना चाहिए। अति आवश्यक यात्रा एवं विशेष परिस्थितियों में मुहूर्ताभाव होने पर पूर्व दिन के मुहूर्त में कार्य का शुभारंभ करके निश्चित समय पर कार्य करने से सफलता प्राप्त होती है।

-जयगुरुदेव, जय महर्षि

24 के मुकाबले सस्ता होता है 18 कैरेट का गोल्ड

कई लोग निवेश के लिए सोना खरीदते हैं या फिर घर-परिवार में मांगलिक कार्यक्रमों के लिए भी सोना खरीदते हैं, और कुछ लोग इसलिए खरीदते हैं कि बुरे वक्त में वे इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। लेकिन यदि सोना खरा न हो तो यह इत्मिनान चिंता में बदल सकता है। सोना नकली या कम शुद्धता वाला हो तो इसकी बिक्री बेहद कम भाव पर होगी। ऐसा सोना गिरवी रखकर लोन भी नहीं लिया जा सकता। 24 कैरेट और 18 कैरेट सोने की कीमत में अमूमन 25 प्रतिशत का अंतर होता है। जैसे अभी 24 कैरेट सोना 50,440 रुपए प्रति 10 ग्राम है, जबकि 18 कैरेट सोने की कीमत 37,829 रुपए ही है। इस लिहाज से सोना खरीदने से पहले शुद्धता पक्की करने जैसी बुनियादी बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। साथ में प्यूरिटी कोड, टेस्टिंग सेंटर मार्क, ज्वैलर का मार्क और मार्किंग की डेट भी जरूर देख लें। सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई स्रोतों (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है।

सोना खरीदते वक्त कैश पेमेंट बड़ी गलती साबित हो सकती है। यूपीआई और डिजिटल बैंकिंग के जरिये पेमेंट करना अच्छा रहता है। आप चाहें तो डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से भी पेमेंट कर सकते हैं। इसके बाद बिल लेना न भूलें। यदि ऑनलाइन ऑर्डर किया है तो पैकेजिंग जरूर चेक करें। ठगी से बचने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि सोना हमेशा भरोसेमंद ज्वेलर से ही खरीदें। ऐसे ज्वेलर्स टैक्स जैसे वैधानिक अनिवार्यता का सही तरीके से पालन करते हैं। चूक होने पर उन्हें ब्रांड वैल्यू गिरने की चिंता रहती है।

कई लोग सोने को निवेश की तरह देखते हैं। ऐसे में जरूरी है कि आपको सोने की रिसेल वैल्यू के बारे में पूरी जानकारी हो। साथ ही संबंधित ज्वेलर की बायबैक पॉलिसी पर भी स्टोर कर्मचारियों से बातचीत कर लें। 3 से 30 प्रतिशत तक हो सकती है बनवाई- सोने के गहने खरीदते समय बनवाई या मेकिंग चार्ज का जरूर ध्यान रखें। मशीन से तैयार गहनों का मेकिंग चार्ज 3-25 प्रतिशत होता है। शुद्ध सोने के सिक्कों का मेकिंग चार्ज सबसे कम होता है। कुछ कारीगर बारीक डिजाइन वाले गहने भी तैयार करते हैं। इनकी बनवाई 30 प्रतिशत तक हो सकती है। इस मामले में मोल-भाव की गुंजाइश भी होती है।

देवेश सोनी
श्री याशिका ज्वेलर्स, चिंतामन चौक भोपाल मो. 9907466213

सही हो बिल्डिंग मटेलियल

सर्वप्रथम भवन निर्माण की भूमि का भूमि पूजन करने के पश्चात किसी जानकार अथवा बिल्डिंग मटेरियल सप्लायर से भूमि में निर्माण संबंधी सामान की कीमतों का इस्टीमेट बनवा लें। देखने में आया है कि कई बार पूर्व में अनुमान के मुताबिक सामान की सप्लाई अधिक होती है। इस कारण मकान निर्माण करते समय आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। जिससे भवन निर्माण या तो आधा-अधूरा अथवा समझौतापूर्ण आर्थिक अभाव में पूर्ण होता है। आजकल सीमेंट आदि में मिलावट हो रही है। जिससे भवन कमजोर हो जाता है। इसके लिए किसी अच्छी कंपनी का सीमेंट ही लेना चाहिए। गिट्टी रेत की क्वालिटी अच्छी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त छपाई में लगने वाले केमीकल्स, सीमेंट को परखने के पश्चात ही पूर्ण छपाई करें। पुट्टी, पुताई, रंग-रोगन आदि का चुनाव पहले ही कर लें। छत की ढलाई के पूर्व बिजली के पाइप अवश्य डलवा लें। खिड़की ग्रिल आदि के कार्य अपनी देखरेख में करें। परदे के क्लेम, राड आदि मजबूत लें। टाइल्स लेटरिंग शीट, पत्थर आदि लेते समय क्वालिटी एवं बजट का ख्याल रखें। ब्रांडेड कंपनियों से मिलते-जुलते नाम की कंपनियों का सामान ना ही लें। भवन बनाते समय पानी का निकास सीवेज व्यवस्था के अतिरिक्त नल के पाइपों की लीकेज, छपाई, टाइल्स लगने के पूर्व चेक कर लें। ऊपर फ्लोर में पानी निकास के लिए ढलान पर्याप्त रखें। सीलन से बचाने के लिए केमीकल का प्रयोग करें। पानी की टंकी पाइप आदि की फिटिंग करते समय ध्यान रखें कि बिजली की फिटिंग के आसपास यह न हो। भवन को समय-समय पर चेक करते रहें।

त्रिलोक नारायण त्रिपाठी
लकी ट्रेडिंग कंपनी, पंट्रोल पंप के आगे महादेवा रोड, धवारी, सतना (मप्र.) मो. 9753742956,

भवन निर्माण और तकनीकी वास्तु शास्त्र

आज के वातावरण के अनुसार सभी लोग वातानुकूलित वास्तु के अनुसार घर का नक्शा बनवाकर मकान निर्माण कराते हैं। जिससे भविष्य में मकान में इंजीनियरिंग का फायदा तो मिलता ही है, वास्तुपूर्ण होने से भवन भी सुखदायी हो जाता है। अत: भवन निर्माण के पहले सोच-समझकर किसी अच्छे तकनीकी इंजीनियर आर्किटेक्ट वास्तुविद से सलाह मशविरा अवश्य कर लें।

मकान में कहां-क्या ?

पूर्व दिशा में मुख्य द्वार एवं स्नानगृह, आग्नेय दिशा में रसोई, भंडारगृह, दक्षिण दिशा में शयनकक्ष एवं शौचालय, नैऋत्य में मास्टर बेडरूम, फालतू सामान, पश्चिम दिशा में भोजन कक्ष, वायव्य दिशा मे कुआंरी लड़कियों के लिए शयनकक्ष, उत्तर दिशा में धन, तिजोरी, बालकनी या मुख्य द्वार। ईशान में पूजाघर, अध्ययनकक्ष, जल संग्रह होना चाहिए।

कारखाने में कहां-क्या ?

पूर्व में मुख्य द्वार, खुली जगह। अग्निकोण में ट्रांसफार्मर, वायलर। दक्षिण में मशीनरी, मार्केटिंग मैनेजर, नैऋत्य में भारी मशीनरी। पश्चिम में कच्चा माल एवं कर्मचारियों के लिए कैंटीन, वायव्य में पक्का माल, उत्तर में मुख्य दरवाजा, कैशियर के कागजात, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा, ईशान में जल स्टोर, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा होना चाहिए। कर्मचारी आवास पश्चिम में बनाएं।

गृह निर्माण हेतु वास्तु चक्र

देवगृह पूजास्थल	प्रसूति गृह	सर्व वस्तुस्थान	स्नान गृह	गोरस कक्ष	रसोई घर
चिकित्सा रोगी कक्ष	पूर्व				घृत स्थान
कोषागार	उत्तर	ब्रह्म स्थान	दक्षिण		शयन कक्ष
पेयजल					
मनोरंजन स्थल	पश्चिम				शौचा-लय
पशुशाला, वाहन,भंडार	कोप भवन	भोजन कक्ष	अध्ययन कक्ष		स्नान घर

प्रमुख वास्तुदोष

- नैऋत्य दिशा में गड्ढा- यदि नैऋत्य दिशा में गड्ढा हो तो परिवार के मुखिया की आसमयिक मृत्यु, नींद न आना, व्यवसाय में हानि एवं कई मुसीबतें आती हैं।
- ईशान दिशा में टायलेट - ऐसी स्थिति में बुद्धि ठीक से काम नहीं करती व ज्यादातर गलत निर्णय लेने से परेशानियां आती रहती हैं। गृहस्थी में नाना प्रकार की दिक्कतें आती हैं।
- उत्तर दिशा में मिट्टी का टीला होना - इसके कारण सब सुखों का नाश हो जाता है। कुटुम्ब में परस्पर झगड़े होते हैं। बच्चों की पढ़ाई में अनेक विघ्न आते हैं। पूरे परिवार में मानसिक क्लेश का वातावरण रहता है।

वास्तुदोष शांति के उपाय

- मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह स्वास्तिक या गणेश जी की तस्वीर का उपयोग करना चाहिए।
- प्रतिदिन अग्निहोत्र करना चाहिए।
- प्रतिदिन गाय, कौआ, कुत्ते को यथा शक्ति खाने को देना।
- वर्ष में एक वार अमावस्या के दिन दही-चावल एवं नारियल पूरे घर में उतार कर बाहर फेंक देना चाहिए। यह वली का स्वरूप है।
- वर्ष में एक बार हवन-पूजन करवाना चाहिए।
- घर को सदा स्वच्छ रखना चाहिए।
- घर के प्रत्येक सदस्य को परस्पर आदर करना चाहिए।
- घर के सभी जनों को अपना (स्वयं का) वास्तु ठीक रखना चाहिए।

अमित गर्ग
आर्किटेक्टर, सतना
मो. - 8770828676

नोट-भवन मकान के वास्तुदोष को दूर करने के लिए सबसे प्रथम अपना खानपान, दिनचर्या आदि को सुधारकर स्वयं का वास्तुदोष ठीक करना चाहिए। कहते हैं कि अगर आपका स्वयं का वास्तु अच्छा नहीं है तो आपको अच्छे वास्तुकृत भवन में भी सुख-शांति प्राप्त न.हीं है। परन्तु यदि आप स्वयं का वास्तु अच्छा है तो मरघट में भी निवास करने पर आपको सुख-शांति प्राप्त होगी।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 जून की

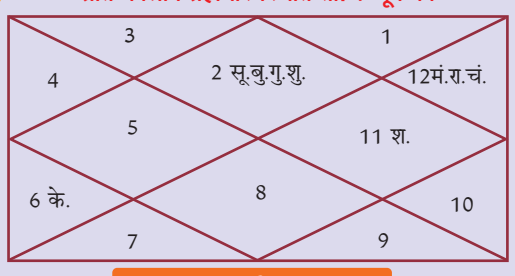

3	2 सू.बु.गु.शु.	1	12मं.रा.चं.
4	5	11 श.	
6 के.	8	10	
7		9	

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- वृष में, ता. 15 को 7:17 प्रातः से मिथुन में। **मंगल-** मीन में, ता. 1 को 4:36 दिन से मेष में। **बुध-** वृष में, ता. 14 को 4:56 रात से मिथुन में। ता. 29 को 2:38 दिन से कर्क में। **गुरु-** वृष में, **शुक्र-** वृष में, ता. 12 को 10:5 रात से मिथुन में। **शनि -** कुंभ में, ता. 30 को 9:34 दिन से वक्री, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 1 को 2।1 रात. से ता. 3 को 10।59 रात तक। ता. 10 को 10।34 रात से ता. 12 को 2।32 रात तक। ता. 20 को 5।23 सायं से ता. 22 को 6।15 सायं तक। ता. 29 को 10।12 दिन से ता. 30 को 8। 35 दिन तक।

गुरु अस्त ता. 2 को 12 बजे रात से पूर्व में उदित,
शुक्र अस्त ता. 30 को 9।30 रात पश्चिम में उदित।

ज्योतिष मठ संस्थान

सूर्य उत्तरायण

ग्रीष्म / वर्षा ऋतु

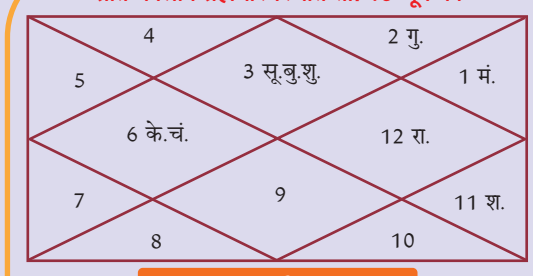

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 16 जून की

4	3 सू.बु.शु.	2 गु.	1 मं.
5	6 के.चं.	12 रा.	
7	9	11 श.	
8		10	

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा मीन राशि का, ता. 2 को 12।26 बजे रात से मेष का। ता. 4 को 3।31 बजे रात से वृष का। ता. 7 को 8।11 बजे प्रातः से मिथुन का। ता. 9 को 3।2 बजे दिन से कर्क का। ता. 11 को 12।22 बजे रात से सिंह का। ता. 14 को 11।41 बजे दिन से कन्या का। ता. 16 को 11। 25 बजे रात से तुला का। ता. 19 को 9।56 बजे दिन से वृश्चिक का। ता. 21 को 6।3 बजे सायं से धनु का। ता. 23 को 11। 54 बजे रात से मकर का। ता. 25 को 3। 44 बजे रात से कुंभ का। ता. 28 को 6।20 बजे प्रातः से मीन का। ता. 30 को 8।35 बजे प्रातः से मेष राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

जून 2024

संवत् 2081
ज्येष्ठ-आषाढ़ मास

ता. 16 को गंगा दशहरा इस दिन राजा भागीरथजी के पुण्य साधना से प्रसन्न होकर गंगाजी का आगमन स्वर्ग से पृथ्वी पर हुआ था। इस दिन गंगा पूजन आदि का विधान है।

ता. 29 को प्रसिद्ध पंचांगकार एवं ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतमजी की पुण्यतिथि आषाढ़ कृष्ण अष्टमी को होती है। पं. गौतमजी की पुण्य तिथि देश विदेश में उनके अनुयायी बड़ी श्रद्धा के साथ मनाते हैं।

शिव वास अग्नि वास

ता. 2, 6, 12, 18, 20, 23, 25, 29 को शिववास एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	9 10	5।50	प्रातः	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
2	11	1।4	रात	
3	12	10।49	रात	
4	13	8।48	रात	
5	14	7।2	रात	
6	30	5।40	सायं	
7	1	4।46	सायं	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
8	2	4।17	दिन	
9	3	4।15	दिन	
10	4	4।46	सायं	
11	5	5।51	सायं	
12	6	7।18	रात	
13	7	9।5	रात	
14	8	11।2	रात	
15	9	1।2	रात	
16	10	2।54	रात	
17	11	4।29	रात	
18	12	दिन	रात	
19	12	5।32	प्रातः	
20	13	6।13	प्रातः	
21	14	6।25	प्रातः	
22	15	6।8	प्रातः	
23	1 2	5।21	प्रातः	आषाढ़ कृष्णपक्ष
24	3	2।37	रात	
25	4	12।39	रात	
26	5	10।27	रात	
27	6	8।5	रात	
28	7	5।37	सायं	
29	8	3।9	दिन	
30	9	12।43	दिन	

SUNDAY रवि	30 प्रवर्धमान योग; रेवती 8।35 दिन; पंचक समाप्त; आषाढ़ कृष्ण 9	2 एकादशी व्रतं सर्वेसाम; रेवती 12।26 रात; प्रवर्धमान योग, पंचक; ज्येष्ठ कृष्ण 11	9 रंभा तीज; पुनर्वसु 9।12 रात; ध्वज योग, बिरसामुंडा पु.ति.; ज्येष्ठ शुक्ल 3	16 गंगा दशहरा, फादर्स-डे; हस्त 10।9 दिन; गायत्री जयंती; ज्येष्ठ शुक्ल 10	23 शुभ योग; पूर्वाषाढ़ 5।59 सा.य.; गुरु हरगोविंद जयंती; आषाढ़ कृष्ण 1,2
MONDAY सोम	**पंचक** पिछले माह शुरु हुए पंचक ता. 2 को 12।26 बजे रात तक। ता. 25 को 3।44 बजे रात से ता. 30 को 8।35 बजे प्रातः तक पंचक रहेंगे।	3 नौतपा समाप्त; अश्विनी 10।59 रात; राक्षस योग; ज्येष्ठ कृष्ण 12	10 गणेश चतुर्थी व्रतं; पुष्य 10।34 रात; गुरु अर्जुनदेव पु.ति.; ज्येष्ठ शुक्ल 4	17 एकादशी व्रतं; चित्रा 12।31 दिन; ईद-उल्जुहा; ज्येष्ठ शुक्ल 11	24 उत्तराषाढ़ 5।18 सा.य.; मृत्यु योग; आषाढ़ कृष्ण 3
TUESDAY मंगल	**भद्रा** तारीख 4 को 8।48 बजे रात्रि से ता. 5 को 7।50 बजे प्रातः तक, ता. 9 को 4।26 बजे रात्रि से ता. 10 को 4।46 बजे दिन तक, ता. 13 को 9।5 बजे रात्रि से ता. 14 को 9।59 बजे दिन तक, ता. 17 को 3।40 बजे दिन से 4।29 बजे रात्रि अतक तक, ता. 21 को 6।25 बजे प्रातः से 6।23 बजे सायं ता. 24 को 3।23 बजे दिन से 2।37 बजे रात्रि ता. 27 को 8।5 बजे रात्रि से ता. 28 को 6।49 बजे प्रातः ता. 30 को 11।39 बजे रात्रि से रात्रि अंत।	4 प्रदोष व्रतं, शिवचतुर्दशी; भरणी 9।46 रात; वट सावित्र व्रत प्रा.; ज्येष्ठ कृष्ण 13	11 श्लेषा 12।22 रात; आनंद योग; ज्येष्ठ शुक्ल 5	18 कूर्म जयंती, चंपक द्वादशी; स्वाती 2।35 दिन; ध्वज योग, चंपक द्वादशी; ज्येष्ठ शुक्ल 12	25 गणेश चतुर्थी व्रतं; श्रवण 4।17 दिन; लुंबक योग; आषाढ़ कृष्ण 4
WEDNESDAY बुध		5 वट सावित्री व्रतं 2 दिन; कृतिका 8।47 रात; सिद्धि योग; ज्येष्ठ कृष्ण 14	12 स्कंध षष्ठी; मघा 2।32 रात; चर योग; ज्येष्ठ शुक्ल 6	19 प्रदोष व्रतं; विशाखा 4।13 दिन; दक्षिणायत वटसावित्री व्रतं; ज्येष्ठ शुक्ल 12	26 मित्र योग; धनिष्ठा 2।59 दिन; पंचक; आषाढ़ कृष्ण 5
THURSDAY गुरु		6 स्नानदान अमावस्या; रोहिणी 8।15 रात; वट सावित्री व्रतं; ज्येष्ठ कृष्ण 30	13 पूर्वा फा. 4।59 रात अंत; गद योग; ज्येष्ठ शुक्ल 7	20 बड़ा महादेव पूजा; अनुराधा 5।23 सायं; दक्षिणायत वटसावित्री व्रतं 2; ज्येष्ठ शुक्ल 13	27 वज्र योग; शतभिषा 1।30 दिन; पंचक; आषाढ़ कृष्ण 6
FRIDAY शुक्र		7 दशासमेध स्नान प्रा.; मृगशिर 8।9 रात; मानस योग; ज्येष्ठ शुक्ल 1	14 मूसल योग; उत्तरा फा. दिनरात; मां धूमावती जयंती; ज्येष्ठ शुक्ल 8	21 व्रत की पूर्णिमा; ज्येष्ठा 6।3 सायं; दक्षिणायत वटसावित्री व्रतं समाप्त; ज्येष्ठ शुक्ल 14	28 पूर्वा भाद्रपद 11।52 दिन; पंचक; आषाढ़ कृष्ण 7
SATURDAY शनि	1 उत्तरा भाद्रपद 2।1 रात; पंचक, धूम्र योग; ज्येष्ठ कृष्ण 9,10	8 मुदुर योग; आर्द्रा 8।28 रात; ज्येष्ठ शुक्ल 2	15 महेश नवमी; उत्तरा फा. 7।34 प्रातः; उत्पात योग, मिथुन संक्रांति; ज्येष्ठ शुक्ल 9	22 स्नानदान पूर्णिमा; मूल 6।15 सायं; संत कबीर दास जयंती; ज्येष्ठ शुक्ल 15	29 शीतला अष्टमी; उत्तरा भाद्रपद 10।12 दिन; पंचक, धूम्र योग; आषाढ़ कृष्ण 8

मुहूर्त

विवाह- शुक्र अस्त का प्रभाव।
नामकरण-ता. 10, 17, 19, 20, 26-27
अक्षरारंभ- ता. 1
अन्नप्राशन- ता. 7, 19, 20, 26, 28
सीमांत पुंसवन- ता. 9
नवीन वस्त्र- ता. 9, 18, 20, 26
प्रसूति स्नान- ता. 13, 20, 25, 30
व्यापार आरंभ- ता. 10, 20
वाहन क्रय- ता. 9, 10, 17, 18, 20, 26
शल्यक्रिया- ता. 4, 18, 20, 27
वाटिका रोपण- ता. 20, 21, 26, 27
औषधि सेवन- ता. 10, 18, 21, 26, 27
यात्रा- ता. 8, 9, 10, 18, 20 ,26
धान्य छेदन- ता. 12, 17, 26, 27
नवान्य भक्षण-ता. 9, 26
शस्त्र निर्माण- ता. 8, 11, 18, 22
पशु क्रय-विक्रय-ता. 9, 10, 18, 26, 27
वस्तु क्रय - ता. 18, 26, 27
शिल्प विद्या - ता.17, 20, 21, 26
आभूषण निर्माण ता. 9, 12, 18
नव निर्माण- ता. 20, 21, 26

मुहूर्तों की तारीखों में समय एवं लग्न का निर्धारण करके शुद्ध मुहूर्त प्राप्त होने पर ही उपयोग में लाएं। अक्टूबर के पिछले पृष्ट में रेखा सहित विवाह मुहूर्त अवश्य देखें।

राशिफल

मेष - स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
वृष- पुत्र सुख, प्रापर्टी से लाभ, रोग।
मिथुन - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
कर्क - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
सिंह - शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
कन्या - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
तुला - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
वृश्चिक - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
धनु - मतभेद बढ़ेगा, मेहमान, आगमन।
मकर- चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
कुम्भ- लाभ, श्रम अधिक, बेवजह तनाव।
मीन- सफलता, धन लाभ, व्यर्थ विवाद।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 1 बाल सुरक्षा दिवस
ता. 5 विश्व पर्यावरण दिवस
ता. 9 महाराणा प्रताप छत्रसाल जयंती
ता. 18 रानी लक्ष्मी बाई बलिदान दि.
ता. 21 अंतरराष्ट्रीय योग संगीत दिवस
ता. 22 संत कबीरदास जयंती
ता. 24 रानी दुर्गावती बलिदान दिवस
ता. 29 ज्योतिष महर्षि पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पुण्यतिथि

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 4 को 9।46 बजे रात्रि से ता 5 को 8।47 बजे रात्रि तक। ता 10 को सूर्योदय से 10।34 बजे रात्रि तक। ता 11 को सूर्योदय से 12।22 बजे रातअंत तक। ता. 16 को सूर्योदय से 10।9 दिन तक, ता. 19 को 4।13 दिन से रात्रि अंततक, ता 20 को सूर्योदय से 5।23 बजे सायं तक। ता 23 को 5।59 बजे सायं से रातअंत तक। ता 24 को 5।18 बजे सायं से रातअंत तक। ता 30 को 8।35 बजे प्रातः से रातअंत तक।

अमृतसिद्धि योग- ता 16 को सूर्योदय से 10।9 बजे दिन तक। ता 19 को 4।13 बजे दिन से रातअंत तक। **रवियोग-** ता 9 को रात्रि 9।12 बजे से रात्रिअंत ता 10 को सूर्योदय से रात्रि 10।34 बजे तक। ता 11 को रात्रि 12।22 बजे से रात्रिअंत ता 12 को सूर्योदय से रात्रि 2।32 बजे तक। ता 14 को रात्रि 7।37 बजे से रात्रिअंत ता 15 को प्रातः 7।34 बजे से रात्रिअंत ता 16 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 17 को सूर्योदय से दिन 12।31 बजे तक। ता 19 को दिन 4।13 बजे से रात्रिअंत ता 20 को सूर्योदय से सायं 5।23 बजे तक। ता 27 को दिन 1।30 बजे से रात्रिअंत ता 28 को सूर्योदय से दिन 11।52 बजे तक।

त्रिपुष्कर योग - ता. 18 को 2।35 दिन रात अंत तक। ता. 23 को 5।59 सायं से रात्रि अंत तक।

रविपुष्य योग- ता 9 को 9।12 बजे रात्रि से रातअंत तक।

भोपाल

सूर्योदय	ता.	1-5.20	7-5.19	13-5.18	19-5.17	25-5.17	30-5.18
सूर्यास्त	ता.	1-6.40	7-6.41	13-6.42	19-6.43	25-6.43	30-6.42

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 2 अपरा एकादशी व्रतं
ता. 4 प्रदोष व्रतं
मासिक शिवरात्रि,
ता. 6 वट सावित्री व्रतं, अमावस्या
ता. 9 रम्भातीज
ता. 10 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 15 महेश नवमी, मिथुन संक्रांति
ता. 16 गंगा दशहरा, श्री रामेश्वरप्रतिष्ठा
ता. 17 निर्जला एकादशी
ता. 19 प्रदोष व्रतं
ता. 20 दक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारंभ

Siddhi Vinayak Computers
440 Sharda Nagar, 'A' Block Road No. 15, Nariyalkheda, Bhopal (MP)
News paper, Magazine, Calendar, Panchang, Book, Booklet and other Composing Works
Contact us : Mob. : 9926980190

ता. 22 ज्येष्ठ स्नानदान पूर्णिमा व्रतं
ता. 25 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 29 शीतला अष्टमी व्रतं

जैन पर्व-त्योहार

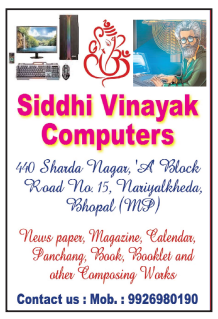

ता. 6 रोहिणी व्रतं
ता. 11 श्रुति पंचमी
ता. 5, 27 पाक्षिक प्रतिक्रमण
ता. 5 शांतिनाथ जयंती एवं मोक्ष

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग घर का पंडित

मिथुन संक्रांति फलं

ता. 15 को 7:17 प्रातः में मिथुन राशि में भगवान सूर्य प्रवेश करेंगे। यह संक्रांति व्याघ्र वाहन पर सवाल होकर अश्व उपवाहन लिए पीत वस्त्र धारण किए बाल्यावस्था में बैठी हुई स्थिति में प्रवेश कर रही है। यह संक्रांति स्थिर भाव सूचक है। बुद्धिजीवियों के लिए यह संक्रांति सुखद है। अनाज के मूल्यों में गिरावट के संकेत हैं। सोना-चांदी में तेजी दिखाई देगी।

मास फल

इस माह वृष राशि पर सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र का चतुर्ग्रही योग का प्रभाव परिलक्षित होगा। जिससे देश-विदेश में उपद्रव्य अशांति एवं तनाव की स्थितियां उत्पन्न होने की संभावना है। मंगल पर शनि की दृष्टि उत्तरी प्रांतों में प्राकृतिक आपदा एवं पवर्तीय क्षेत्रों में जनजीवन अस्त-व्यस्त कर सकती है। यह ग्रह डीजल-पेट्रोल के दामों में तेजी लाने के संकेत दे रहा है। शुक्र शनि के नव पंचम प्रभाव से देश के विरुद्ध का सामना करना पड़ सकता है। इधर बुध राहु एवं शनि बुद्ध का षडास्टक योग प्राकृतिक आपदा भूकंप की स्थिति बना रहा है। पूर्वी गोलार्ध में युद्धादि की संभावना निर्मित हो रही है।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरु नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

विवाह संस्कार में जरूरी होता है कुंडली मिलान

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम
ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर भोपाल
मो. 9827322068

कुंडली मिलाने की विधि

फलित ग्रंथों के द्वारा स्त्री नाशक या पति नाशक जो योग है उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुंडली में लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्राय: पति नाशक या पत्नी नाशक है, उसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। यह पंडितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल एवं उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चंद्रमा शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पापयोग होता है। स्त्री की कुंडली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्य वर्द्धक है। सप्तमेश, अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबंधक योग भी वैधव्य सूचक प्राय: होते हैं। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से स्त्री की कुंडली में छठे या आठवें चन्द्रमा हो, लग्न या सातवें पापग्रह हो, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्ययोग हो तो बट विवाह, कुंभ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीव वर के साथ विवाह किया जाए तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम्, अष्टम्, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है – लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ा, गोचर विचार, मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्मनाम ही प्रधान है। जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कोई हो तो अंतिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म तथा प्रसिद्ध नाम और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे के जन्म नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

वर्ण के गुण 1

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

वश्य के गुण 2 (ज्ञान चक्र)

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	2	1	1	0	1
मानव (न)	1	2	1	0	1
जलचर	1	1	2	1	1
वनचर	0	0	1	2	0
कीट	1	1	1	0	2

तारा के गुण 3

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1	3	1	3	1	3	3
2	3	3	1	3	1	3	1	3	3
3	1	1	0	1	0	1	0	1	1
4	3	3	1	3	1	3	1	3	2
5	1	1	0	1	0	1	0	1	1
6	3	3	1	3	1	3	1	3	3
7	1	1	0	1	0	1	0	1	1
8	3	3	1	3	1	3	1	3	3
9	3	3	1	3	1	3	1	3	3

तारा मिलान के लिए कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र गिनें तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र गिनें। जो संख्या आए उसमें ९ का भाग देने पर जो शेष बचे वह तारा मिलान होगा।

योनि के गुण 4

	अ	ग	मे	स	श्वा	मा	मू	गौ	म	व्या	मृ	वा	न	सि
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	2	3	2	2	0
मेष	3	3	4	3	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	3	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
मूषक	3	2	2	2	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गौ	3	2	3	1	2	2	2	4	3	0	2	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	1	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	2
वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
नकुल	2	2	3	0	2	2	2	2	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	1	1	3	1	2	2	2	4

ग्रह मैत्री के गुण 5

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चंद्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

ग्रह मैत्री के गुण 6

	दे.	मं.	रा.
देवता	6	5	1
मनुष्य	6	6	0
राक्षस	0	0	6

भकूट के गुण 7

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
चं.मं.गु.	सू.बु	सू.चं.गु.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.	मित्र
बुध	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	शनि	मं.गु.	गुरु	सम
शु.श.	0	बुध	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	शत्रु

कुंडली मिलान

अधिकतम 36 गुण होते हैं। 18 गुणों से ऊपर मिलान शुभ होता है। 25 गुणों का मिलान अधिक शुभ होता है।

नाड़ी के गुण 8

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	0	8	8
मध्य	8	0	8
अन्त्य	8	8	0

प्रसिद्ध नाम से मिलान

वर का नाम अरविंद प्रथम अक्षर 'अ' कन्या का नाम नीलम प्रथम अक्षर 'नी' मिलान करने पर 19।। गुण मिले।

कुंडली में मंगल मिलान

जन्म पत्रिका में 1, 4, 7, 8 एवं 12वें स्थान में मंगल होने से मंगली मानी जाती है। वर एवं कन्या दोनों की कुंडलियों में मंगल होने पर दोष परिहार हो जाता है।

अष्ट कूट दोष परिहार

1. **वर्ण दोष परिहार** - राशीश मैत्री/एकता या वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण में उत्तम हो।
2. **वश्य दोष परिहार** - राशीश मैत्री/एकता, या योनी दोष न हो, कूट में पूर्ण गुण हो।
3. **तारा दोष परिहार** - राशीश मैत्री एकता।
4. **योनी दोष परिहार** - राशीश मैत्री एकता भकूट शुद्धि या वश्य शुद्धि।
5. **राशीश दोष परिहार**-एक ही नक्षत्र व राशि भिन्न हो, भकूट शुद्धि, अथवा नवांशेष की मैत्री/एकता।
6. **गण दोष परिहार** - राशीश मैत्री/एकता या भकूट शुद्धि।
7. **भकूट दोष परिहार** - राशीश मैत्री/एकता।
8. **नाड़ी दोष परिहार** - 1. राशी मैत्री/एकता हो 2. दोनों की राशि एक तथा नक्षत्र भिन्न हों। 3. दोनों के नक्षत्र एक तथा राशि भिन्न हों। 4. एक राशि व एक नक्षत्र हों किन्तु चरण भिन्न हों।

एक गोत्र तथा एक प्रवर में विवाह दोष

लड़के का विवाह एक गोत्र तथा मामा के गोत्र प्रवर वाली कन्या के साथ नहीं करना चाहिए। उसके साथ विवाह करने पर ब्रह्म हत्या का दोष लगता है। उससे उत्पन्न संतान चंडाल होती है।

त्रिज्येष्ठादि विचार

प्रथम गर्भ से उत्पन्न (जेठे) वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये। वर कन्या में कोई भी 1 द्वितीय गर्भ का हो तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ हैं। कृतिका नक्षत्र के सूर्य को त्यागकर त्रिजेष्ठ में भी दानादि से विवाह शुभ है दो सहोदर भाईयों का विवाह दो सहोदर कन्याओं के साथ नहीं करना चाहिये। एक ही वर को दो सहोदर कन्याओं को नही देना चाहिये, एक ही घर में एक साथ दो मांगलिक कार्य नहीं होते है, मण्डप एवं आचार्य बदलने पर हो सकते है। पुत्र के विवाह के बाद 6 माह के अन्दर कन्या का विवाह या उपनयन आदि मांगलिक कार्य एवं पितरों की श्राद्धादि क्रिया नहीं होती है संवत् बदलने पर हो सकती है।

कन्या के विवाह में अवरोध

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्राय: प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिए माता-पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित 'कात्यायनी देवी' का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धापूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं व विवाह सकुशल संपन्न हो जाता है।

जप की विधि - यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठकर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कडुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिए। जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर 21 दिन (जप काल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस मंत्र का जाप जपकर्ता को पान खाते हुए करना चाहिए। इस जप को 41000 पुनश्चरण है, प्रथम दिन मंत्र का 1000 जाप करें व उसके बाद 20 दिनों तक प्रतिदिन 2000 मंत्र का जाप करें। जप काल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिए।

मंत्र - कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि। नन्दगोप सुतं देवि पतिं में कुरु ते नमः।।

अनुष्ठान के अंत में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। भोजन में पीला मिष्ठान अवश्य परोसें।

विशेष-विवाह योग्य कन्या को दुर्गा सप्तसती में वर्णित सिद्ध सौभाग्य मंत्र का दैनिक ग्यारह बार जप करना चाहिए व मां दुर्गा के प्रति आस्था एवं विश्वास रखना चाहिए। सौभाग्य प्राप्तिकारण अनुष्ठान भी हितकर होता है।

मंत्र -ॐ देहि सौभाग्य आरोग्यम् देहि मे परमं सुखम्। रूपम् देहि जयं देहि यशोदेहि द्विशो जाहि।।

क्या होते हैं पंचक, जानिए उनके प्रकार एवं महत्व

प्राचीन ज्योतिष शास्त्र में मुहूर्त (काल, समय) का विशेष महत्व माना गया है। मुहूर्त में ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति की गणना के आधार पर किसी भी कार्य के लिए शुभ-अशुभ होने पर विचार किया जाता है। प्रत्येक माह में लगभग 27 दिनों के अंतराल पर पांच नक्षत्र आते रहते हैं। क्योंकि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चंद्रमा अपनी मध्यम गति से 27 दिनों में सभी नक्षत्रों का भोग करता है।

पांच नक्षत्रों का समूह कहलाता है पंचक - धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद एवं रेवती भी ऐसे ही पांच नक्षत्रों का एक समूह है। धनिष्ठा के प्रारंभ होने से लेकर रेवती नक्षत्र के अंत समय को पंचक कहते हैं।

रोग पंचक - रविवार को शुरू होने वाला पंचक रोग पंचक कहलाता है। इसके प्रभाव से ये पांच दिन शारीरिक और मानसिक परेशानियों वाले होते हैं। इस पंचक में किसी भी तरह के शुभ कार्य नहीं करने चाहिए। हर तरह के मांगलिक कार्यों में ये पंचक अशुभ माना गया है।

राज पंचक - सोमवार को शुरू होने वाला पंचक राज पंचक कहलाता है। ये पंचक शुभ माना जाता है। इसके प्रभाव से इन पांच दिनों में सरकारी कामों में सफलता मिलती है। राज पंचक में संपत्ति से जुड़े काम करना भी शुभ रहता है।

अग्नि पंचक - मंगलवार को शुरू होने वाला पंचक अग्नि पंचक कहलाता है। इन पांच दिनों में कोर्ट-कचहरी और विवाद आदि के फैसले, अपना हक प्राप्त करने वाले काम किए जा सकते हैं। इस पंचक में अग्नि का भय होता है। ये अशुभ होता है। इस पंचक में किसी भी तरह का निर्माण कार्य, औजार और मशीनरी कामों की शुरुआत करना अशुभ माना गया है। इनसे नुकसान हो सकता है।

मृत्यु पंचक - शनिवार को शुरू होने वाला पंचक मृत्यु पंचक कहलाता है। नाम से ही पता चलता है कि अशुभ दिन से शुरू होने वाला ये पंचक मृत्यु के बराबर परेशानी देने वाला होता है। इन पांच दिनों में किसी भी तरह के जोखिम भरे काम नहीं करना चाहिए। इसके प्रभाव से विवाद, चोट, दुर्घटना आदि होने का खतरा रहता है।

चोर पंचक - शुक्रवार को शुरू होने वाला पंचक चोर पंचक कहलाता है। विद्वानों के अनुसार, इस पंचक में यात्रा करने की मनाही है। इस पंचक में लेन-देन, व्यापार और किसी भी तरह के सौदे भी नहीं करने चाहिए क्योंकि इससे धन हानि हो सकती है।

चोरी/खोई वस्तु का विचार

जिन दिन वस्तु खोई या चोरी हो गई हो उस दिन का नक्षत्र कैलेंडर में देखें। तत्पश्चात नीचे दिए हुए नक्षत्रों में मिलान करें। वस्तु कहां है पता चल जाएगी।

- ⇨ रोहिणी, पुष्य, उ.फा., विशाखा, पू.षा., धनिष्ठा, रेवती नक्षत्र में खोई हुई वस्तु पूर्व में व जल्द मिलने की आशा।
- ⇨ मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उ.षा., शतभिषा, अश्विनी नक्षत्र में चोरी या खो गई वस्तु दक्षिण में तथा बहुत कोशिशों के बाद मिलती है।
- ⇨ भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पू.भा. में गई वस्तु पश्चिम में मिलना बहुत कठिन होता है।
- ⇨ पुनर्वशु, पू.फा. स्वाती, मूल, श्रवण, उ.भा., कृतिका नक्षत्र में गई वस्तु का मिलना ज्यादा कठिन होता है।

मांगलिक कार्य : विवाह विषयक ज्ञान

कन्या का वैधव्यदोष नाशक कुंभ विवाह

पिता आदि विवाहकर्ता नाम-गोत्र-देशकाल-उच्चतर-पूर्वक 'कन्यावैधव्यहर कुंभविवाह करिष्ये' का संकल्प कर नादीश्राद्ध पर्यन्त पंचांग पूजन कर महीहौरित्यादि विधि एवं मंत्र से कलश स्थापना कर वरुणदेव का पूजन करें। पुनः उसी कलश पर स्वर्ण निर्मित भगवान विष्णु की प्रतिमा का षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें। प्रार्थना मंत्र - वरुणोगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायश्रिरं पुत्रसुखं कुरु। देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालनव दुःखतः' इति। तदन्तर विष्णुरूपिणे कुंभायेमां कन्यां श्रीरूपिणीं समर्पयामीति कहकर विष्णु को कन्या समर्पित करें तथा परिवेत्यादि मंत्र के द्वारा कन्या एवं कलश को परिवेष्टि करें तथा पुनः कलश को निकालकर जलाशय नदी आदि में विसर्जित कर शुद्ध जल से कन्या को समुद्रज्येष्ठे आदि मंत्र से पचपल्लव द्वारा अभिसिंचित कर ब्राह्मण भोजन कराएं। इति कुंभ विवाह।

कन्या के वैधव्य आदि दोष का विचार - वर एवं कन्या की जन्म कुंडली में लग्न अथवा चंद्रमा से 1, 4, 7, 8, 12 में मंगल हो तो कन्या पति तथा पति कन्या का नाशक होता है। इसी क्रम में कन्या की कुंडली लग्न या चंद्रमा से 1, 4, 7, 8, 13 में कोई बलवान पाप ग्रह भी बैठा हो अथवा सप्तमेश यदि 6, 8, 2 गत हो तो भी अनिष्टकारक होता है।

वर द्वारा मांगलिक योग निवारण भात पूजन

जातक की कुंडली में मांगलिक योग होने पर श्री मंगल ग्रह के उत्पत्ति स्थल अवंतिका में, अंगारेश्वर महादेव पर भात (दद्योदन) पूजन का विधान है, इससे मंगल को शांति प्राप्त होती है। इस पूजन हेतु वैशाख मास विशेष प्रशस्त है तथा प्रत्येक मंगलवार को या मृगशिरा, चित्रा तथा धनिष्ठा नक्षत्र के दिन या भौम प्रदोष और अंगारकी चतुर्थी कृष्ण पक्ष की चतुर्थी मंगलवार को हो प्रशस्त मानी गई है। अगर वर की कुंडली में मंगलदोष है तो अंगारक भातपूजा होती है तथा कन्या की कुंडली में अगर मंगलदोष हो तो मंगल शांति कुंभ विवाह का अनुष्ठान किया जाता है। दोनों के विवाह पश्चात ग्रह शांति के साथ शिवार्चन अभिषेक करने का विधान भी शास्त्रों में निहित है।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 जुलाई की

4 बु.	3 सू.शु.	2 गु.
5	6 के. / 12 रा.	1 मं.चं.
7	9	11 श.
8		10

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- मिथुन में, ता. 16 को 10:33 रात से कर्क में। **मंगल-** मेष में, ता. 12 को 7:29 रात से वृष में। **बुध-** कर्क में, ता. 19 को 7:52 रात से सिंह में। **गुरु-** वृष में, **शुक्र-** मिथुन में, ता. 6 को 11:02 दिन से कर्क में। ता. 30 को 4:53 रात से सिंह में। **शनि-** कुंभ में वक्री, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल पिछले माह से जारी मूल ता. 1 को 7।5 प्रातः तक। ता. 7 को दिनरात, ता. 8 को 6 बजे प्रातः से ता. 10 को 9।48 दिन तक। ता. 17 को 12।57 रात. से ता. 19 को 2।3 रात तक। ता. 26 को 6। 22 सायं से ता. 28 को 3।13 दिन तक।

गुरु-शुक्र तारा-गुरु पूर्व में उदित, शुक्र में पश्चिम में उदित।

ज्योतिष मठ संस्थान

गौतम पंचांग

सूर्य उत्तरायण
ता.17 से दक्षिणायन

वर्षा ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 17 जुलाई की

5	4 सू.बु.शु.	3
6 के.	7 / 1	1 मं.गु.
8 चं.	10	12 रा.
9		11 श.

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा मेष राशि में, ता. 2 को 11।34 बजे दिन से वृष का। ता. 4 को 4।2 बजे दिन से मिथुन का। ता. 6 को 10।40 बजे रात से कर्क का। ता. 9 को 7।41 बजे प्रातः से सिंह का। ता. 11 को 6।53 बजे सायं से कन्या का। ता. 14 को 6।39 बजे प्रातः से तुला का। ता. 16 को 5।18 बजे सायं से वृश्चिक का। ता. 18 को 1।45 बजे रात से धनु का। ता. 21 को 7।50 बजे प्रातः से मकर का। ता. 23 को 11।48 बजे दिन से कुंभ का। ता. 25 को 2।29 बजे दिन से मीन का। ता. 27 को 4।44 बजे सायं से मेष का। ता. 29 को 7।37 बजे रात से वृष का। ता. 31 को 11।52 बजे रात से मिथुन राशि का चंद्रमा रहेगा।

ता. 17
देवशयनी एकादशी
इस दिन से चार माह देवता विश्राम पर रहते हैं जिससे मांगलिक कार्य बंद रहते हैं, जबकि धार्मिक कार्य विशेष फल प्रदान करते हैं।

ता. 21
गुरुपूर्णिमा
महर्षि वेदव्यास के साथ आध्यात्मिक गुरु, कुलगुरु, दीक्षित गुरु की पीठ, पादुका, पूजन वंदन आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन पूजा की जाती है। महर्षि संस्थानों में गुरु पूर्णिमा महोत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है।

शिव वास अग्नि वास

ता. 3, 6, 11, 15, 19, 22, 31 को शिववाश एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

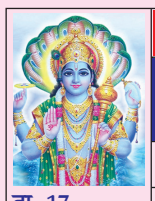

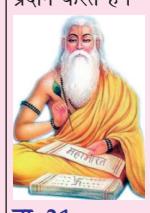

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	10	10।25	दिन	आषाढ़ कृष्णपक्ष
2	11	8।22	प्रातः	
3	12 13	6।35	प्रातः	
4	14	4।12	रात	
5	30	3।39	रात	
6	1	3।38	रात	आषाढ़ शुक्लपक्ष
7	2	4।7	रात	
8	3	5।5	रात	
9	4	दिन	रात	
10	4	6।30	प्रातः	
11	5	8।15	प्रातः	
12	6	10।12	दिन	
13	7	12।10	दिन	
14	8	2।2	दिन	
15	9	3।36	दिन	
16	10	4।48	सायं	
17	11	5।33	सायं	
18	12	5।47	सायं	
19	13	5।32	सायं	
20	14	4।47	सायं	
21	15	3।36	दिन	
22	1	2।1	दिन	श्रावण कृष्णपक्ष
23	2	12।8	दिन	
24	3	9।59	दिन	
25	4 5	7।39	प्रातः	
26	6	2।43	रात	
27	7	12।19	रात	
28	8	10।3	रात	
29	9	7।59	रात	
30	10	6।13	सायं	
31	11	4।48	सायं	

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

जुलाई 2024

संवत् 2081
आषाढ़-श्रावण मास

SUNDAY रवि	**पंचक** ता. 23 को 11 बज कर 48 मिनिट दिन तक। ता. 27 को 4। 44 बजे सायं तक पंचक रहेंगे।	जगन्नाथ रथयात्रा **7** पुष्य दिनरात श्रीवत्स योग आषाढ़ शुक्ल 2	परशुराम अष्टमी **14** चित्रा 7।46 रात पद्म योग आषाढ़ शुक्ल 8	गुरु पूर्णिमा-व्यास पूजा **21** उत्तराषाढ़ 1।17 रात सिद्धि योग आषाढ़ शुक्ल 15	कालाष्टमी व्रतं **28** अश्विनी 3।13 दिन आनंद योग श्रावण कृष्ण 8
MONDAY सोम	**1** अश्विनी 715 प्रातः राक्षस योग आषाढ़ कृष्ण 10	**8** पुष्य 610 प्रातः धाता योग आषाढ़ शुक्ल 3	भड़ली नवमी **15** स्वाती 9।55 रात छत्र योग आषाढ़ शुक्ल 9	श्रावण सोमवार **22** श्रवण 12।20 रात सिद्धि योग श्रावण कृष्ण 1	श्रावण सोमवार व्रतं **29** भरणी 1।52 दिन चर योग श्रावण कृष्ण 9
TUESDAY मंगल	एकादशी व्रतं सर्वे. **2** भर, कृति 5।47 रात्रि अंत मुसल योग आषाढ़ कृष्ण 11	गणेश चतुर्थी व्रतं **9** श्लेषा 7।41 प्रातः आनंद योग आषाढ़ शुक्ल 4	आशा दसमी,सौम्पदा व्रतं **16** विशाखा 11।40 रात श्रीवत्स योग आषाढ़ शुक्ल 10	मंगला गौरी व्रतं **23** धनिष्ठा 11।15 रात उत्पात योग, पंचक प्रा. श्रावण कृष्ण 2	मंगला गौरी व्रतं **30** कृतिका 12।48 दिन गद योग श्रावण कृष्ण 10
WEDNESDAY बुध	प्रदोष व्रतं **3** रोहिणी 4।18 रात शुभ योग, संत नामदेव पु.ति. आषाढ़ कृष्ण 12,13	**10** मघा 9।48 दिन चर योग आषाढ़ शुक्ल 4	देवशनयी एकादशी **17** अनुराधा 12।57 रात सौम्य योग, ताजिया आषाढ़ शुक्ल 11	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय 9।33 रात्रि **24** शतभिषा 9।38 रात मानस योग, पंचक श्रावण कृष्ण 3	कामदा एकादशी व्रतं **31** रोहिणी 12।13 दिन शुभ योग, प्रेमचंद जयंती श्रावण कृष्ण 11
THURSDAY गुरु	मास शिवरात्रि व्रतं **4** मृगशिर 3।53 रात मृत्यु योग आषाढ़ कृष्ण 14	**11** पूर्वा फा. 12।12 दिन गद योग आषाढ़ शुक्ल 5	प्रदोष व्रतं **18** ज्येष्ठा 1।45 रात कालदंड योग, वासुदेव द्वादशी आषाढ़ शुक्ल 12	मौना पंचमी **25** पूर्व भाद्रपद 8।11 रात पंचक, श्रावण कृष्ण 4,5	**भद्रा** तारीख 1 को सूर्योदय से 10।25 दिन तक, ता. 4 को सूर्योदय से 4।42 बजे दिन ता. 9 को 5।40 बजे सायं से रात्रि अंत, ता. 13 को 12।10 बजे दिन से 1।9 बजे रात्रि तक, ता. 17 को सूर्योदय से 5।33 बजे सायं ता. 20 को 4।47 बजे सायंकाल से 4।19 बजे रात्रि अंतक तक, ता. 23 को 11।06 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 24 को सूर्योदय से 9।59 बजे दिन ता. 26 को 2।43 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 27 को सूर्योदय से 1।32 बजे दिन ता. 30 को 7।3 बजे प्रातः से 6।13 बजे सायं तक भद्रा रहेगी।
FRIDAY शुक्र	स्नानदान श्राद्ध अमावस्या **5** आर्द्रा 4।06 रात पद्म योग, हलहरणी आषाढ़ कृष्ण 30	**12** उत्तरा फा. 2।46 दिन शुभ योग आषाढ़ शुक्ल 6	मंगला तेरस **19** मूल 2।03 रात विजया पार्वती व्रतं आषाढ़ शुक्ल 13	**26** उत्तर भाद्रपद 6।22 सा.य पंचक, ध्वज योग श्रावण कृष्ण 6	
SATURDAY शनि	गुप्त नवरात्रि आरंभ **6** पुनर्वसु 4।47 रात छत्र योग, मनोरथ द्वितीया आषाढ़ शुक्ल 1	मां ताप्ती जयंती **13** हस्त 5।20 सायं मृत्यु योग आषाढ़ शुक्ल 7	**20** पूर्वाषाढ़ 1।53 रात वायु परीक्षण दिवस आषाढ़ शुक्ल 14	शीतला सप्तमी **27** रेवती 4।44 दिन पंचक समाप्त श्रावण कृष्ण 7	

मुहूर्त

विवाह- ता. 3, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15 पश्चात कर्क संक्रांति
नामकरण-ता. 1, 3, 8, 12, 15, 17, 24
कर्णभेद - ता. 8, **मुंडन** -ता. 8, 12
अक्षरारंभ- ता. 7, 8, 11,
अन्नप्राशन- ता. 3, 8, 12, 24
सीमांत पुंसवन- ता. 3, 7,
नवीन वस्त्र- ता. 3, 12, 16, 17, 21, 23, 26, 27, 28
प्रसूति स्नान- ता. 2, 3, 20, 24, 25
व्यापार आरंभ- ता. 3, 7, 11, 12, 17 21, 26, 28, 31
वाहन क्रय- ता. 15, 17, 26, 27, 28, 31
देव प्रतिष्ठा- ता. 7, 8, 11, 12, 15,
शल्यक्रिया- ता. 18, 28
वाटिका रोपण-ता. 11, 12, 21, 26, 28
औषधि सेवन- ता. 15, 17, 26, 28
यात्रा- ता. 7, 8, 23, 27, 31
धान्य छेदन- ता. 8, 11, 12, 13, 18, 21, 28, 31 **बीज वोवनी -** ता. 15
उपनयन- ता. 7, 8, 11
नवान्य भक्षण-ता. 28
जीर्ण गृह प्रवेश- ता. 31
वस्तु विक्रय - ता. 11, 15, 16, 26, 28
शस्त्र निर्माण- ता. 2, 28
पशु क्रय-विक्रय- ता. 8, 18, 28
आभूषण निर्माण ता. 7, 16, 21, 23, 28
शिल्प विद्या - ता. 3, 11, 15, 28, 31

राशिफल

मेष - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
वृष- स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
मिथुन - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कर्क - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
सिंह - मेहमान आगमन, मतभेद बढ़ेगा।
कन्या - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
तुला - चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
वृश्चिक - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
धनु - रोग, पुत्र सुख, प्रापर्टी से लाभ।
मकर- शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
कुम्भ- लाभ, बेवजह तनाव, श्रम अधिक।
मीन- स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 1 सीए दिवस, डॉक्टर दिवस
ता. 6 पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती
ता. 11 विश्व जनसंख्या दिवस
ता. 23 चंद्रशेखर आजाद, तिलक जयंती
ता. 27 डॉ. अब्दुल कलाम पु.ति.
ता. 31 श्री उधम सिंह शहीद दिवस, मोहम्मद रफी पुण्यतिथि

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 2 को 5।47 बजे प्रातः से रातअंत तक। ता 3 को सूर्योदय से 4।8 बजे रातअंत तक। ता 9 को सूर्योदय से 7।41 बजे प्रातः तक। ता. 17 को सूर्योदय से 12।57 रात तक, ता 21 को सूर्योदय से 1।17 बजे रातअंत तक। ता 22 को सूर्योदय से 12।20 बजे रातअंत तक। ता. 26 को 6।22 शाम से रात अंत तक, ता 28 को सूर्योदय से 3।13 बजे दिन तक। ता 30 को सूर्योदय से 12।48 बजे दिन तक। ता 31 को सूर्योदय से 12।3 बजे दिन तक। **अमृतसिद्धि योग-** ता 17 को सूर्योदय से 12।57 बजे रातअंत तक। ता 26 को 6। 22 बजे सायं से रातअंत तक। **रवियोग-** ता 9 को प्रातः 7।41 बजे से रात्रिअंत ता 10 को सूर्योदय से दिन 9।48 बजे तक। ता 11 को दिन 12।12 बजे से रात्रिअंत ता 12 को सूर्योदय से दिन 2।46 बजे तक। ता 14 को रात्रि 7।46 बजे से रात्रिअंत ता 15 को सूर्योदय सेरात्रिअंत ता 16 को सूर्योदय से रात्रि 11। 40 बजे तक। ता 18 को रात्रि 1।45 बजे से रात्रिअंत ता 19 को सूर्योदय से रात्रि 2।3 बजे तक। ता 20 को दिन10।50 से रात्रिअंत ता 26 को सायं 6।22 बजे से रात्रिअंत ता 27 को सूर्योदय से दिन 4।44 बजे तक। **द्विपुष्कर योग -** ता. 23 को सूर्योदय से 11।5 दिन तक। **त्रिपुष्कर योग -** ता. 2 को 5।47 प्रातः से रात अंत तक। **पुष्य नक्षत्र** - ता. 7 को दिनरात।

भोपाल

सूर्योदय ता.	1-5.18	7-5.19	13-5.20	19-5.22	25-5.24	30-5.27
सूर्यास्त ता.	1-6.42	7-6.41	13-6.40	19-6.38	25-6.36	30-6.33

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 2 योगिनी एकादशी
ता. 3 प्रदोष व्रत
ता. 4 मासिक शिवरात्रि
ता. 5 हल हरणी अमावस्या
ता. 6 गुप्त नवरात्रि प्रारंभ
ता. 7 जगन्नाथ रथ यात्रा
ता. 9 वैनायकी चतुर्थी व्रतं
ता. 12 स्कन्द षष्ठी
ता. 15 भड़ली नवमी, नवरात्रि स.
ता. 16 आशा दशमी, कर्क संक्रांति,
ता. 17 देवशयनी 11, चतुर्मास प्रा.

ज्योतिष मठ का सहयोगी प्रकाशन
THE CLIFF NEWS
देश का पहला हिन्दी अंग्रेजी अखबार एक साथ अवश्य पढ़ें।
संपादक-राजीव त्रिपाठी

ता. 18 प्रदोष व्रतं, वामन पूजा
ता. 21 गुरु-पूर्णिमा, व्यास पूजा
ता. 24 संकष्टी चतुर्थी व्रतं
ता. 27 शीतला सप्तमी व्रतं
ता. 31 कामदा एकादशी

जैन व्रत-पर्व

ता. 3, 31 रोहिणी व्रतं
ता. 14 से 21 अष्टांहिका पर्व
ता. 4 पाक्षिक प्रतिक्रमण
ता. 13 चौमासी उट्ठाई प्रारंभ
ता. 20 चतुर्मासिक प्रतिक्रमण

कर्क संक्रांति फलं

तारीख 16 को 10:33 रात में कर्क राशि में सूर्य का प्रवेश होगा। जिससे महोदरी संक्रांति महिषी वाहन पर सवार होकर ऊंट उपवाहन लिए, श्याम वस्त्र धारण किए हुए दही भक्षण करती हुई प्रगल्भ अवस्था में बैठी हुई प्रवेश करेगी। इस संक्रांति के प्रभाव से अनाज के मूल्यों में गिरावट, अनाज तेल, धातु शेयर आदि में सामान्य घटा बढ़ी के योग हैं।

मास फल

इस माह शुरुआत में सूर्य शुक्र की युति का प्रभाव केंद्रीय सत्ता में वाद-विवाद की स्थिति बनाएगा। जिसका असर प्रादेशिक सत्ता पक्ष पर भी हो सकता है। इस माह पांच ग्रहों का प्रभाव पश्चिमी राष्ट्रों में हानि, उपद्रव, भय के संकेत देता है। कहीं-कहीं अग्निकांड प्रभाव हिंसाकारी रहेगा। पूर्वोत्तर राज्यों में प्राकृतिक प्रकोप बाढ़ की स्थिति निर्मित होगी। किसानों हेतु कठिन परिस्थिति बन सकती है। अत्यधिक वर्षा से जनधन की हानि संभव है।

महाकाल उज्जैन सवारी तारीख 22-29

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम   ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com   website-www.jyotishmath.com

ज्योतिष कर्मकांड : नवग्रहों के यंत्र

पं. रामकिशोर वैदिक
अध्यक्ष, वैदिक ब्राह्मण युवा संगठन म.प्र.,
भोपाल, मोबा. 9827012871

ज्योतिष से संबंधित धर्म ग्रंथों में यंत्र सिद्धि का बहुत महत्व है। सभी प्रकार के यंत्रों को धारण करने के पूर्व यंत्र को विधिवत अभिमंत्रित कर धारण करने से ही ऊर्जा शक्ति, सिद्धि प्राप्त होती है। ज्योतिष में ग्रह शांति के लिए यंत्र धारण करने का विधान बताया गया है। परन्तु अब कुछ दलाल किस्म के लोगों द्वारा रत्न पहनाए जा रहे हैं। जिसके विषय में ज्योतिष शास्त्र के प्रमाणित ग्रंथों में कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

रसेन्दुनागा नगवाणरामा
युग्माङ्कवेदा नवकोष्ठमध्ये।
विलिख्य धार्यं गदानाशनाय
वदन्ति गर्गादिमहामुनीन्द्रः।।

चंद्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

नागद्विनन्दा गजषट् समुद्रा
विशाक्षिदिग्वाणविलिख्य कोष्ठे।
चंद्रकृतारिष्टविनाशनाय धार्यं
मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

गजादिनदिश्याशनवाद्रिवाणा
पातालरुद्रारससंविलिख्य
भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्य-
मनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

नवाब्धिरुद्रा दिङ्नागषष्ठा
वाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे।
विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे
वदन्ति यंत्रं शशिजस्य धीराः।।

बृहस्पति यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

दिग्वाणसूर्या शिवनन्दसप्ता
षड्श्विनागाङ्कमतोऽङ्ककोष्ठे
विलिख्य धार्यं गुरुयंत्रमीरितं
रुजाविनाशाय वदन्ति तद्बुधाः।।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

रुद्रांगविश्वा रविदग्गजाख्या
नगामनुश्चाङ्कक्रमाद्विलेख्याः।
भृगोःकृतारिष्टविनाशानाय धार्या
हि यंत्र मुनिना प्रकीर्तितम्।।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अर्काद्रिमन्वा स्मर रुद्र अङ्का
नागास्त्यतिथ्यादश मंद्रयंत्रम्।
विलिख्य भूर्जापरिधार्यमेतच्छनेः
कृतारिष्टनिवारणाय।।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
६	१६	११

विश्वाष्टतिथ्यामनुसूर्यदिश्या
खगामहीन्द्रैकदशांशकोष्ठे।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं
राहोः कृतजारिष्टनिवारणाय।।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

मनुखेवर भूपतिथिविश्व
शिवादिक् सप्तादशसूर्यमिता।
क्रमशो विलिखेन्नवकोष्ठमिते
परिधार्य नरा दुःखनाशकराः।।

ग्रहों के अनिष्टफल शांति के उपाय

ग्रहों के अनिष्टफल की शांति ग्रह पूजा, औषधि स्नान, होम एवं दान करने से होती है और मनुष्य अभ्युदय होता है। सूर्य की अनिष्टशांति के लिए केशर, जेठीमधु, कमलगट्टा, इलायची, मन:शिल, खस, देवदारू और पाटला से स्नान करना चाहिए। इसी तरह चंद्रमा की अनिष्ट शांति के लिए पंचगव्य, स्फटिक, गजमद, बिल्व, मुक्ता, कमल, मोती की सीप और शंख से स्नान करना चाहिए। वहीं मंगल की अनिष्टशांति के लिए चंदन, बिल्व, बैंगनमूल, पियंगु, बरियारा के बीज (खरेटी), जटामासी, लाल पुष्प, सुगंधबाला, नागकेशर और जपापुष्प से स्नान करना चाहिए। अगर बुध की अनिष्टशांति की बात करें तो इसके लिए नागकेशर, पोहकरमूल, अक्षत, मुक्तफल, गोरोचन, मधु, मैनफल और पंचगव्य से स्नान करना चाहिए। बृहस्पति की अनिष्टशांति के लिए पीली सरसों, जेठीमधु, सुगंधबाला, मालतीपुष्प, जूही के फूल और पत्ते से स्नान करना चाहिए। शुक्र की अनिष्टशांति के लिए श्वत कमल, मन:शिल, सुगंधबाला, इलायटी, पोहकरमूल और केशर से स्नान करना चाहिए। वहीं शनि की अनिष्टशांति के लिए बारियारा के बीज (खरेटी) काला सुरमा, काले तिल, धान का लावा, लोध, मोथा और सौंफ से स्नान करना चाहिए। राहु की अनिष्टशांति करने के लिए सुगंधबाला, मोथा, बिल्वपत्र, लालचंदन, लोध, कस्तूरी, गजमद और दूर्वा से स्नान करना चाहिए तथा केतु की अनिष्टशांति के लिए रक्तचंदन, रतनजोत, मोथा, कस्तूरी, गजमद, सुगंधबाला, लोध, भेड़का मूत्र, दाडिम और गुडूची से स्नान करना चाहिए। **नोट** - यदि आपको स्नान के लिए सभी वस्तुएं प्राप्त न हों तो जितनी वस्तुएं प्राप्त होती हैं उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

कर्मकांडी ब्राह्मण, यजमान इन बातों पर विशेष ध्यान दें

- कृपया जप / पाठ के समय बातचीत न करें।
- कृपया जप / पाठ के समय मोबाइल आफ या साइलेंट रखें।
- कृपया स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- कृपया अनुष्ठान में कटे फटे, पुराने , जले ,श्रीहत हुए नीला या नील दिया हुआ वस्त्र न धारण करें । अनुष्ठान अनुरूप ही वस्त्र धारण करें।।
- भगवत नाम लिखे हुए या भगवान के चित्र बने हुए वस्त्र आदि को धारण न करे यह देव अपराध है। अंगोछा या अंगरखा के रूप में भी उपयोग नहीं करना चाहिए।
- एक दिन धारण किए हुए वस्त्र बिना धुले हुए अगले दिन न धारण करें।
- वस्त्र पीत या श्वेत जो अन्य व्यक्ति को अच्छे लगें वैसा धारण करें। अनुष्ठान में सिले हुए वस्त्र आदि धारण करने से बचना चाहिए।।
- धोती को धोती की तरह ही धारण कर ब्राह्मण एवं यजमान को पूजन अनुष्ठान करना चाहिए कच्छण होना अत्यावश्यक है। (लुंगी की तरह लपेटकर पूजन न करें)
- ललाट तिलक रहित न हो। शिखा अवश्य होना चाहिए।
- बिना सन्ध्योपासना और गायत्री मंत्र जप किए अनुष्ठान में सम्मिलित न हों।
- भोजन पदार्थ सात्विक हो संभव हो स्वपाकी बने।
- भोजन में भक्ष्य अभक्ष्य का ध्यान अवश्य रखें।।
- अपना कुशा, पैंती, पंचपात्र, गोमुखी आसन , माला, पुस्तक (ग्रंथ) तथा अन्य अनुष्ठान में उपयोगी उपकरण अपने साथ अवश्य लें जायें। गोमुखि शास्त्रीय ही उपयोग करें।

गोमुखी का शास्त्रीय आधार होता है। आधुनिक झोली आदि का उपयोग कदापि न करे।

पारद शिवलिंग

हरित सकल रोगान्मुर्छितो यो नराणां, वितरित किलबद्धः खेचरत्वं जवेन ।
सकल सुर्मुनिन्द्रैर्वंदितं शम्भुबीजं, स जयति मयसिंधोः पारदः पार्दोयऽम ।।

कुछ प्रश्न आपके और यथोचित उत्तर हमारे ।

अभी कुछ समय पूर्व पारद यानि रस विज्ञान पर कुछ गोपाल कृष्णा ने पारद शिवलिंग और तत्वमसि क्रिया पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण लेख पोस्ट किया , इससे आप लोगों के कुछ प्रश्न हैं और कुछ साधना से सम्बंधित भी मै अपनी जानकारी और ज्ञान के आधार पर उनका उत्तर देने का प्रयास कर रही हूँ ।

रस विज्ञान या रस तंत्र 64 तंत्र में सबसे प्राचीन और गूढतम और रहस्यमयी विद्या कही गई है । इस विद्या की उपलान्धियों का जितना भी प्रचार प्रसार हुआ, उसके अनुसार इस विद्या की तरफ किसी का भी आकर्षण होना स्वाभाविक है इस विज्ञानं का पूर्ण आधार है पारद, जो कि एक अद्भुत धातु है । इसी को पारा एवं रस आदि के नाम से संबोधित किया गया है ।

आदि गूढ़ क्रियाओं का समावेश होता है - बुभुक्षित पारद के सन्दर्भ में साधकों के मध्य कई प्रकार की जिज्ञासा रही है तथा यह रहस्य का विषय रहा है बुभुक्षित पारद का सामान्य अर्थ ऐसा पारद जो कि भूखा हो जो पारद स्वर्ण का ग्रास करे, भक्षण कर ले, खा ले और इनसे ही शिवलिंग आय अन्य विग्रह निर्माण किया तो .... अर्थात इस पारद को यदि किसी विग्रह में ढाला जाये और उसे लक्ष्मी उपनिषद मन्त्रों से प्राणप्रतिष्ठित की जाए तो वह विग्रह पूर्ण लक्ष्मी से युक्त होकर समस्त प्रकार के वैभव प्रदान करने वाला बनजाता है इसी प्रकार अन्य विग्रह जैसे पारद तारा, पारद काली, पारद लक्ष्मी, श्री यंत्र, पारद दुर्गा आदि चामुंडा तंत्र के मंत्रो प्रतिष्ठित किया जाये तो ये विग्रह पूर्ण चैतन्य होकर किसी भी साधना तंत्र को सिद्ध के लिए एवं प्रत्यक्षीकरण के लिए सबसे उपयुक्त माने गए है .

पारद शिवलिंग, विग्रह - आठ संस्कारों से युक्त सम्पन्न पारद पूर्ण रूप से शुद्ध ,चैतन्य और विभुक्षित होता है ऐसे पारद में चंचलता चपलता नहीं होती, इससे निर्मित शिवलिंग अतितेजस्वी, अद्भुत, और वरदायक कहा गया है,ऐसे पारद से निर्मित शिवलिंग सही अर्थों में पारदेश्वर होंगे ।

जिस व्यक्ति के घर में ऐंसा शिवलिंग स्थापित है तो उस घर में लक्ष्मी पूर्ण चैतन्य होकर स्थापित होती है, धन धान्य, धरा भवन कीर्ति आयु यश पुत्र पौत्र वहां और सम्पूर्ण सिद्धियों के साथ लक्ष्मी का निवास होता है ऐसे घर पर तंत्र प्रयोग या किसी भी नकारात्मक उर्जा का प्रभाव नहीं होता या प्रवेश ही हो पता है ।

स्वयं शिव उवाच—
पार्देश्वरम स्थापित्यम लक्ष्मीं सिद्धं ताड गृहे ।
धन धान्यं धरा पौत्रं पूर्ण शौभाग्यम वे नरः ।।

भगवान् शिव ने कहा है कि जिसके घर में ऐसा शिवलिंग स्थापित होता है उसके घर में मेरे साथ लक्ष्मी कुबेर और सौभाग्य निश्चय ही स्थापित हो जाते हैं

लक्ष्मी उपनिषद में स्वयम लक्ष्मी ने कहा है—
यत्र पार्देश्वरम देवं तत्रऽमवर सिद्धियुतः ।
तत्र नारायणे साक्षात् तत्र त्रैलोक्य संपदाः ।।

जिस स्थान पर पारद शिवलिंग स्थापत होते हैं वहां पर मैं अपने समस्त वरदायक रूप में स्थापित होती होने के लिए विवश हूँ, क्योंकि जहाँ पर भगवान पारदेश्वर हों साक्षात् नारायण भी उपस्तिथ हैं, और जहाँ नारायण हैं वहां मेरी उपस्तिथि अनिवार्य है ही—

ऐंसे एक जगह वशिष्ठ ने अपने ग्रन्थ में कहा है कि—
पारदेश्वरं स्थापित्यं सर्व पाप विमुच्यते ।
सौभाग्यं सिद्धि प्रप्यान्ते पूर्ण लक्ष्मी लभेत् नरः ।।

अर्थात जिस जगह पारदेश्वर स्थापित हो जाते हैं वहां सभी पाप स्वयम क्षय हो जाते हैं अर्थात व्यक्ति के समस्त पापों एवं दोषों का शमन हो जाता है । ईश्वर ने चाहे उसके जीवन में दुर्भग्य ही क्यों न लिखा हो किन्तु मात्र पारदेश्वर के दर्शन से वह सौभाग्य को प्राप्त कर लेता है ।

और महिषी विश्वामित्र ने कहा है -
यः नरः प्राप्यते सिद्धिं पारदेश्वर संस्कारः ।
अभावः दुःख दारिद्रय किं पप्यते त्वम् च द ।

विश्वामित्र जी ने पारदेश्वर की महिमा कहते हुए कहा है कि—आठों संस्कार संपन्न पारदेश्वर को प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है, जिसके गृह में ऐंसा पारदेश्वर स्थापित है, उसके जीवन में किसी प्रकार कोई भाव हो ही नहीं सकता ।

रावण जो स्वयं रस सिद्ध थे और जिन्होंने पारदेश्वर की साधना से अपनी पूरी नगरी को स्वर्णमयी बना कर ये सिद्ध किया कि पारदेश्वर की साधना से सब कुछ संभव है

पारदेश्वर महादेवः स्वर्ण वर्षा करोति य ।
सिद्धियां ज्ञानद मोक्षं पूर्ण लक्ष्मी कुबेरायः ।।

रावन ने एक जगह कहा है कि—मैंने अनुभव किया है कि, पारदेश्वर के स्थापन, पूजन और साधना के आगे अन्य सभी साधनाएं प्रयोग और उपाय तुच्छ हैं, केवल पारदेश्वर के स्थापन से स्वर्ण वर्षा स्वर्ण निर्माण और स्वर्ण नगरी प्रक्रिया संभव है—

ऐंसे अनेक उदाहरण शास्त्र उल्लिखित हैं और पूर्ण प्रमाणिकता के साथ

विविध विषयक ज्ञान

राहुकाल में वर्जित समय

सोम	प्रातः 7.30 से 9.00 बजे तक
मंगल	अपराह्न 3.00 बजे से 4.30 बजे शाम तक
बुध	दोपहर 12.00 बजे से 1.30 बजे तक
गुरु	दोपहर 1.30 बजे से 3.00 बजे तक
शुक्र	प्रातः 10.30 बजे से 12.00 बजे तक
शनि	प्रातः 9.00 बजे से 10.30 बजे तक
रवि	शाम 4.30 बजे से 6.00 बजे तक

चोरी/खोई वस्तु का विचार

जिस दिन वस्तु खोई या चोरी हो गई हो उस दिन का नक्षत्र पंचांग में देखें। तत्पश्चात नीचे दिए हुए नक्षत्रों में मिलान करें। वस्तु कहां है पता चल जाएगी।

- ⇨ रोहिणी, पुष्य, उ.फा., विशाखा, पू.षा., धनिष्ठा, रेवती नक्षत्र में खोई हुई वस्तु पूर्व में व जल्द मिलने की आशा।
- ⇨ मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उ.षा., शतभिषा, अश्विनी नक्षत्र में चोरी या खो गई वस्तु दक्षिण में तथा बहुत कोशिशों के बाद मिलती है।
- ⇨ भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पू.भा. में गई वस्तु पश्चिम में मिलना बहुत कठिन होता है।
- ⇨ पुनर्वशु, पू.फा. स्वाती, मूल, श्रवण, उ.भा., कृतिका नक्षत्र में गई वस्तु का मिलना ज्यादा कठिन होता है।

लग्न पता करने की विधि

प्रातःकाल सूर्य जिस राशि में हो वह राशि उदयकालिक लग्न कहलाती है। रात-दिन में 12 लग्नें होती हैं। इनका भोगकाल का समय सुनिश्चित है। अब जिस स्थान की जिस समय की और जिस भी दिन की लग्न मालूम करना हो उस स्थान की उदयकालिक लग्न के समाप्ति समय में बाद की लग्न का भोगकाल जोड़कर हम तत्कालिक लग्न जान सकते हैं। लग्नों का भोगकाल निम्न है -

मेष	**वृष**	**मिथुन**
1 घंटा 40 मि.	1 घंटा 58 मि.	1 घंटा 13 मि.
कर्क	**सिंह**	**कन्या**
2 घंटा 16 मि.	2 घंटा 12 मि.	2 घंटा 11 मि.
तुला	**वृश्चिक**	**धनु**
2 घंटा 15 मि.	2 घंटा 16 मि.	2 घंटा 5 मि.
मकर	**कुम्भ**	**मीन**
1 घंटा 47 मि.	1 घंटा 34 मि.	1 घंटा 30 मि.

यात्रा में दिशा शूल विचार

पूर्व की ओर सोम, शनि तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में। पश्चिम में रवि, शुक्र और रोहिणी नक्षत्र में। दक्षिण में गुरुवार और पू.भा. नक्षत्र में। उत्तर में मंगल एवं बुध को यात्रा करना मना है। उसी दिन पहुंच जाने और आपत्तिकाल में दिशा शूल में माना जाता है। प्रस्थान सामग्री रखने से दिशा शूल नहीं माना जाता है। प्रस्थान सामग्री रखने से दिशा शूल का परिहार हो जाता है। दिशा शूल रहित दिन कोई वस्त्र, पुस्तक या फल-फूल अपने स्थान से दूसरे स्थान में रखें तथा 3 और 5 रात्रि के भीतर प्रस्थान सामग्री लेकर गन्तव्य स्थान को जाना चाहिए। अपने घर से बाहर यात्रा पर जाने के लिए बुधवार आर्थिक दृष्टि से ठीक नहीं, किन्तु व्यक्ति पर आपत्ति आने की संभावना नहीं रहती है तो पूर्व की ओर गोधूलि बेला में, पश्चिम की ओर प्रात:काल में, उत्तर की ओर दोपहर में तथा दक्षिण की ओर रात्रि में यात्रा करना चाहिए। अति आवश्यक कार्य व विवाह में दिशा शूल नहीं माना जाता। नित्य यात्रा करने वालों पर भी दिशा शूल लागू नहीं होता। जब घर से यात्रा करें तो रविवार को दही-शक्कर, सोमवार को खीर, मंगलवार को दलिया, बुध को दूध, गुरु को दही, शुक्रवार को लस्सी एवं शनिवार को तिल मिले चावल की खीर खाकर निकलें।

शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करें।

उत्तम चौघड़िया - अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। **खराब चौघड़िया** - उद्वेग, रोग व काल हैं।

दिन की चौघड़िया							समय बजे तक	रात की चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

उज्जैन महाकाल अभिषेक पूजा हेतु संपर्क करें-

पं. श्री राजेश गुरुजी (व्यास)
महाकाल मंदिर
उज्जैन मो. नं.
9301069887
9111222109

अकाल मृत्यु वो मरे जो काम करे चंडाल का, काल उसका क्या बिगाड़े जो भक्त हो महाकाल का

उज्जैन में
कालसर्प पितृदोष अंगारक मंगलदोष आदि शांति के लिए संपर्क करें
पं. चेतन शास्त्री (गुलाटी गुरु)
सिद्धबट घाट, उज्जैन
मोबाइल - 9926053161

नासिक में
कालसर्प शांति के लिए संपर्क करें
पं. प्रसाद भाले राव
त्र्यंबकेश्वर धाम, नासिक
मोबाइल -9096955492

पंचांग निर्माण, जन्म पत्रिका, भविष्यफल, शेयर, अनाज भाव की जानकारी हेतु ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल में संपर्क करें। मो. नं. 9827322068

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

सूर्य दक्षिणायन

वर्षा ऋतु

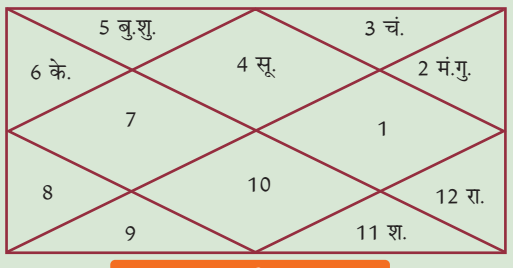

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 अगस्त की

भाव	ग्रह
1	
2	मं.गु.
3	चं.
4	सू.
5	बु.शु.
6	के.
7	
8	
9	
10	
11	श.
12	रा.

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- कर्क में, ता. 17 को 10:00 दिन से सिंह में। **मंगल -** वृष में, ता. 26 को 5:45 शाम से मिथुन में। **बुध-** सिंह में, ता. 5 को 3:33 रात से वक्री, ता. 21 को 5:20 रात अंत से कर्क में वक्री, ता. 29 को 1:20 दिन से मार्गी, **गुरु-** वृष में, **शुक्र -** सिंह में, ता. 24 को 6:49 शाम से कन्या में। **शनि -** कुंभ में वक्री, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 4 को 1।29 दिन से ता. 6 को 5।6 सायं तक। ता. 14 को 8।34 दिन से ता. 16 को 9।51 दिन तक। ता. 22 को 2।33 रात. से ता. 24 को 11।23 रात तक। ता. 31 को 8।58 रात से प्रारंभ।

गुरु पूर्व में उदित, शुक्र पश्चिम उदित

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 18 अगस्त की

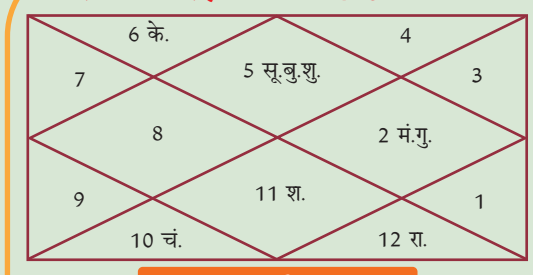

भाव	ग्रह
1	
2	मं.गु.
3	
4	
5	सू.बु.शु.
6	के.
7	
8	
9	
10	चं.
11	श.
12	रा.

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा मिथुन राशि का, ता 3 को 6।14 बजे प्रातः से कर्क का। ता. 5 को 3।5 बजे दिन से सिंह का। ता. 7 को 2।3 बजे रात से कन्या का। ता. 10 को 1।50 बजे दिन से तुला का। ता. 12 को 12।43 बजे रात से वृश्चिक का। ता. 15 को 9।26 बजे दिन से धनु का। ता. 17 को 3।42 बजे दिन से मकर का। ता. 19 को 7। 52 बजे रात से कुंभ का। ता. 21 को 10।39 बजे रात से मीन का। ता. 23 को 12।53 बजे रात से मेष का। ता. 25 को 3।40 बजे रात से वृष का। ता. 28 को 7।44 बजे प्रातः से मिथुन का। ता. 30 को 1।54 बजे दिन से कर्क राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

अगस्त 2024

संवत् 2081
श्रावण-भाद्रपद मास

ता.19 रक्षाबंधन
भाई बहनों का त्योहार रक्षाबंधन भद्रा पश्चात मनाया जाता है। इस दिन भाईयों की कलाईयों पर रक्षासूत्र बांधकर बहनें भाईयों की रक्षा करती हैं। भाई इसके बदले अनेक प्रकार के उपहार अपनी बहनों को देकर उपकृत करते हैं। यह परस्पर प्रेम का प्रतीक है।

ता. 26 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
भाद्र. कृ. 8 तिथि तथा रोहिणी नक्षत्र वृष लग्न व वृष राशि में चंद्रमा भ्रमणकाल में अर्द्ध रात्रि के समय भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हुए थे। शास्त्रानुसार जन्माष्टमी व्रत अष्टमीयुक्त नवमी पर किया जाना चाहिए।

शिव वास अग्नि वास
ता. 4, 9, 16, 20, 24, 27 को शिववाश एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	12	3।48	दिन	श्रावण कृष्णपक्ष
2	13	3।14	दिन	
3	14	3।11	दिन	
4	30	3।37	दिन	
5	1	4।33	दिन	श्रावण शुक्लपक्ष
6	2	5।57	सायं	
7	3	7।40	रात	
8	4	9।37	रात	
9	5	11।37	रात	
10	6	1।31	रात	
11	7	3।9	रात	
12	8	4।26	रात	
13	9	5।16	रात	
14	10	5।32	रात	
15	11	5।20	रात	
16	12	4।38	रात	
17	13	3।28	रात	
18	14	1।55	रात	
19	15	12।13	रात	
20	1	9।54	रात	भाद्रपद कृष्णपक्ष
21	2	7।36	रात	
22	3	5।11	सायं	
23	4	2।44	दिन	
24	5	12।20	दिन	
25	6	10।4	दिन	
26	7	8।0	प्रात:	
27	8 9	6।13	प्रात:	
28	10	3।45	रात	
29	11	3।12	रात	
30	12	3।8	रात	
31	13	3।35	रात	

भद्रा

ता. 2 को 3।14 बजे दिन से 3।7 बजे रात्रि ता. 8 को 8।38 बजे दिन से 9।37 बजे रात्रि ता. 11 को 3।9 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 12 को सूर्योदय से 3।50 बजे दिन ता. 15 को 5।27 बजे सायं से 5।20 बजे रात्रि अंत, ता. 18 को 1।55 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 19 को सूर्योदय से 1।2 बजे दिन ता. 22 को 6।27 बजे प्रातः से 5।11 बजे सायं ता. 25 को 10।4 बजे दिन से 9।3 बजे रात्रि ता. 28 को 4।17 बजे दिन से 3।45 बजे रात्रि ता. 31 को 3।35 बजे रात्रि से रात्रिअंत।

पंचक

ता. 19 को 7।52 बजे रात से ता. 23 को 12।53 बजे रात तक।

वार					
SUNDAY रवि	(भद्रा, पंचक — ऊपर देखें)	हरियाली अमावस्या **4** पुष्य 1।29 दिन श्रीवत्स योग, [illegible] श्रावण कृष्ण 30	भानु सप्तमी **11** स्वाती 5।18 रात तुलसीदास जयंती, लुंबक योग श्रावण शुक्ल 7	**18** उत्तराषाढ़ 9।17 दिन बाजीराव पेशवा जयंती श्रावण शुक्ल 14	हलषष्ठी व्रतं **25** भरणी 9।57 रात बलदाऊ जयंती भाद्रपद कृष्ण 6
MONDAY सोम		श्रावण सोमवार **5** श्लेषा 3।5 दिन सौम्य योग श्रावण शुक्ल 1	श्रावण सोमवार **12** विशाखा दिनरात छत्र योग श्रावण शुक्ल 8	रक्षाबंधन, श्रावण सोमवार **19** श्रवण 8।26 दिन स्नानदान पूर्णिमा पंचक प्रा. श्रावण शुक्ल 15	जन्माष्टमी व्रतं **26** कृतिका 8।49 रात मदर टेरेसा जयंती भाद्रपद कृष्ण 7
TUESDAY मंगल		मंगला गौरी व्रतं, सिंघारा दोज **6** मघा 5।6 सायं करपात्री जी जयंती श्रावण शुक्ल 2	मंगला गौरी व्रतं **13** विशाखा 7।10 प्रातः श्रीवत्स योग श्रावण शुक्ल 9	कजलियां **20** धनिष्ठा 7।13 प्रातः पंचक भाद्रपद कृष्ण 1	गोगा नवमी **27** रोहिणी 7।59 रात मातंग योग भाद्रपद कृष्ण 8,9
WEDNESDAY बुध		स्वर्णगौरी व्रतं, हरियाली तीज **7** पूर्वा फा. 7।25 रात सुस्थिर योग श्रावण शुक्ल 3	सौम्य योग **14** अनुराधा 8।34 दिन सिंधु दर्शन दिवस श्रावण शुक्ल 10	**21** शत, पूभा 5।48 रात अंत पंचक, मानस योग भाद्रपद कृष्ण 2	**28** मृगशिर 7।33 रात अमृत योग भाद्रपद कृष्ण 10
THURSDAY गुरु	प्रदोष व्रतं **1** मृगशिर 11।43 दिन लोकमान्य तिलक पुति श्रावण कृष्ण 12	गणेश चतुर्थी व्रतं **8** उत्तरा फा. 9।58 रात मातंग योग श्रावण शुक्ल 4	एकादशी व्रतं **15** ज्येष्ठा 9।26 दिन स्वतंत्रता दिवस श्रावण शुक्ल 11	गणेश चतुर्थी व्रतं **22** उत्तर भाद्रपद 2।33 रात कजली-सतवा तीज भाद्रपद कृष्ण 3	एकादशी व्रतं **29** आद्रा 7।32 रात काणं योग भाद्रपद कृष्ण 11
FRIDAY शुक्र	मास शिवरात्रि व्रतं **2** आर्द्रा 11।49 दिन पद्म योग श्रावण कृष्ण 13	नागपंचमी **9** हस्त 12।34 रात अमृत योग, चरक जयंती श्रावण शुक्ल 5	सुस्थिर योग **16** मूल 9।51 दिन श्रावण शुक्ल 12	श्रीवत्स योग **23** रेवती 12।53 रात अंतरिक्ष दिवस भाद्रपद कृष्ण 4	गोवत्स द्वादशी **30** पुनर्वसु 8।0 रात लुंबक योग भाद्रपद कृष्ण 12
SATURDAY शनि	**3** पुनर्वसु 12।25 दिन छत्र योग श्रावण कृष्ण 14	कल्की अवतार **10** चित्रा 3।13 रात काणं योग श्रावण शुक्ल 6	प्रदोष व्रतं **17** पूर्वाषाढ़ 9।44 दिन सिंह संक्रांति, मातंग योग श्रावण शुक्ल 13	गोगा पंचमी **24** अश्विनी 11।23 रात भाद्रपद कृष्ण 5	प्रदोष व्रतं **31** पुष्य 8।58 रात मित्र योग भाद्रपद कृष्ण 13

मुहूर्त

- **विवाह-** चतुर्मास के कारण मुहूर्ताभाव
- **नामकरण-** ता. 14, 21, 22, 28
- **अन्नप्राशन-** ता. 2, 7, 9, 14, 21, 22, 23 28 **गृहारंभ-** ता. 18, 19
- **नवीन वस्त्र-**ता.10, 20, 23, 24, 29-30
- **प्रसूति स्नान-** ता. 8, 13,
- **व्यापार आरंभ-** ता. 1, 23
- **वाहन क्रय-** ता. ता. 1, 18, 23, 24
- **शल्यक्रिया-** ता. 1
- **वाटिका रोपण-** ता. 1, 12, 16, 23
- **औषधि सेवन-** ता. 1, 15, 23, 29, 30
- **यात्रा-** ता. 18, 20, 23, 24, 30
- **धान्य छेदन-** ता. 1, 12, 15, 16, 18, 21, 26, 29,
- **नवान्य भक्षण-**ता. 1, 18
- **जीर्ण गृह प्रवेश-** ता. 1, 10
- **वस्तु विक्रय-**ता. 7, 12, 21, 23, 24, 26
- **शस्त्र निर्माण-** ता. 16
- **पशु क्रय-विक्रय-** ता. 12, 18, 26
- **आभूषण निर्माण -** ता. 20
- **नव निर्माण-** ता. 15, 16,
- **शिल्प विद्या -** ता. 15, 16, 21, 29
- **महाकाल सवारी उज्जैन-ता. 5, 12, 19, 26**

तिथि त्योहारों में आजकल भिन्नताएं प्रकट की जाती हैं। वाट्सएप आदि सोशल मीडिया पर ध्यान न दें। पहले पंचांग का अध्ययन करें।

राशिफल

- **मेष -** शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
- **वृष-** श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
- **मिथुन -** प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
- **कर्क -** सहयोग मिलेगा, व्यर्थ की चिंता।
- **सिंह -** व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
- **कन्या -** शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
- **तुला -** चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
- **वृश्चिक -** भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि।
- **धनु -** पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
- **मकर-** मतभेद बढ़ेगा, मेहमान, आगमन।
- **कुम्भ-** स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
- **मीन-** स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।

प्रमुख दिवस, जयंती

- ता. 3 मैथिलीशरण गुप्त जयंती
- ता. 6 करपात्री जी जयंती
- ता. 9 भारत छोड़ो आंदोलन दिवस
- ता. 11 गोस्वामी तुलसीदास जयंती
- ता. 16 अटल बिहारी वाजपेयी पुति
- ता. 20 राजीव गांधी जयंती
- ता. 29 ध्यानचंद्र जयंती (हॉकी)

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 2 को 11।49 बजे दिन से रातअंत तक। ता. 4 को सूर्योदय से 1।29 दिन तक, ता 10 को 3।3 बजे रात से रातअंत तक। ता 18 को सूर्योदय से 9।17 बजे दिन तक। ता 19 को सूर्योदय से 8।26 बजे प्रातः तक। ता 22 को 2।33 बजे रात से रातअंत तक। ता 23 को 12।53 बजे रात से रातअंत तक। ता 26 को 8।49 बजे रात्रि से रातअंत तक। ता 28 को सूर्योदय से 7।33 बजे रात्रि तक। ता 29 को 7।32 बजे रात्रि से रातअंत तक। ता 30 को सूर्योदय से 8।0 बजे रात्रि तक। **अमृतसिद्धि योग-** ता 14 को सूर्योदय से 8।34 बजे प्रातः तक। ता 23 को सूर्योदय से 12।53 बजे रातअंत तक। **रवियोग-** ता 7 को रात्रि 7।25 बजे से रात्रिअंत ता 8 को सूर्योदय से रात्रि 9।55 बजे तक। ता 9 को रात्रि 12।34 बजे से रात्रिअंत ता 10 को सूर्योदय से रात्रि 3।3 बजे तक। ता 12 को रात्रि 7।10 बजे से रात्रिअंत ता 13 को प्रातः 7।10 बजे से रात्रिअंत ता 14 को सूर्योदय से रात्रिअंत तक। ता 15 को सूर्योदय से दिन 9।26 बजे तक। ता 17 को दिन 9।44 बजे से रात्रिअंत ता 18 को दिन 9।17 बजे से रात्रिअंत ता 19 को सूर्योदय से प्रातः 8।26 बजे तक। ता 24 को रात्रि 11।23 बजे से रात्रिअंत ता 25 को सूर्योदय से रात्रि 9।57 बजे तक। **त्रिपुष्कर योग -** ता. 25 को 9।57 रात से रात अंत तक। **रविपुष्य योग-** ता 4 को सूर्योदय से 1।29 बजे दिन तक।

भोपाल

सूर्योदय ता.	1-5.28	7-5.31	13-5.34	19-5.37	25-5.41	30-5.44
सूर्यास्त ता.	1-6.32	7-6.29	13-6.26	19-6.23	25-6.19	30-6.16

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

- ता. 1 प्रदोष व्रतं
- ता. 4 श्रावण स्नानदान अमावस्या
- ता. 7 मधुश्रवा, हरियाली तीज
- ता. 8 दूर्वा गणपति व्रतं
- ता. 9 नाग पंचमी
- ता. 11 भानु सप्तमी
- ता. 15 पुत्रदा एकादशी व्रतं
- ता. 17 प्रदोष व्रतं
- ता. 19 रक्षाबंधन, श्रावण पूर्णिमा व्रतं
- ता. 22 कज्जली तीज व्रतं

- ता. 23 गणेश चतुर्थी व्रतं, मंशादेवी पूजा
- ता. 24 गोगा पंचमी, भाई भिन्ना
- ता. 25 हल षष्ठी व्रतं
- ता. 26 श्री कृष्ण जन्माष्टमी, भानु सप्तमी
- ता. 29 जया एकादशी व्रतं
- ता. 30 गोवत्स द्वादशी, बच्छ द्वादशी
- ता. 31 प्रदोष व्रतं

जैन व्रत पर्व

- ता. 4, 11, 18, 25 रवि व्रतं
- ता. 14 कलश दशमी

सिंह संक्रांति फलं

ता. 17 को 10 बजे दिन में सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। राक्षसी संज्ञक संक्रांति वराह वाहन पर सवार होकर वृष उपवाहन लिए हरित वस्त्र धारण किए, सर्प वर्ण की कुमारी अवस्था में बैठी हुई स्थिति में अर्की है। संक्रांति के प्रवेश स्वभाव के अनुसार यह संक्रांति दुष्टवर्ग को सुखकारी है। उप संक्रांति निर्धन वर्ग को सुखद है। अनाज के मूल्यों में गिरावट के संकेत दे रही हैं। किराना खाद्य पदार्थों में सामान्य तेजी दिखेगी,सोना-चांदी आदि धातुओं में महंगाई रहेगी। संक्रामक बीमारियों का प्रभाव रहेगा। बाढ़ का तांडव कई प्रदेशों में परिलक्षित होगा।

मास फल

इस माह बुध का बार-बार परिवर्तनकारी प्रभाव एवं शनि का वक्री प्रभाव तथा सिंह राशि पर सूर्य बुध शुक्र का त्रिग्रही योग देश दुनिया को प्रभावित करेगा। देश में खाद्य पदार्थों एवं जरूरी वस्तुओं की किल्लत हो सकती है। इनके दाम भी बढ़ सकते हैं। शनि का वक्री का प्रभाव न्यायालयीन कसावट के साथ राजनैतिक दलों को शिकंजे में लेगा। वहीं सिंह पर त्रिग्रही योग राजा के लिए संकटकाल की स्थिति देता है। खेल ग्रह मंगल का प्रभाव राष्ट्रहित में विश्व स्तर पर सफलताकारी सिद्ध होगा।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम
ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com
website-www.jyotishmath.com

होड़ा ज्ञान चक्र

इस चक्र की सहायता से जन्माक्षर, नक्षत्र तथा अपनी राशि, राशि स्वामी, गण-नाड़ी, वर्ण, वश्य, योनि, युंजा आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं

अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कु.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मु.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.षा. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु. रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना. नी. नू. ने.	नो.या. यी.यू.	ये. यो. भा.भी.	भू.धा. फ.ढ़.	भे. भो. ज.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा. गी. गू.गे.	गो.स. सी.सू.	से. सो. द.दी.	दू.थ. झ.त्र.	दे. दो. च.ची.
नक्षत्र	अश्व	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	अश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशि	मेष	मेष	मे.१वृ.३	वृष	वृ.२ मि.२	मिथुन	मि.३ क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१ क.३	कन्या	क.२ तु.२	तुला	तु.३ वृ.१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध.१ म.३	मकर	म.२ कु.२	कुम्भ	कु.३मी.१	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रीय	क्षत्रीय	क्ष.१वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्रीय	क्षत्रीय	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्रीय	क्षत्रीय	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ब्रा.१	ब्राह्मण	ब्राह्मण
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	च.२ नं.२	नर	न.३ ज.१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व.१ न.३	नर	नर	नर	न.१ की.१	कीट	कीट	नर	न.१ च.३	चतुष्पद	च.१॥ ज.३॥	ज.२ न.२	नर	न.३ ज.१	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
राशि स्वामी	मंगल	मंगल	मं.१शु.३	शुक्र	शु.२ बु.२	बुध	बु.३ चं.१	चंद्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू.१ बु.३	बुध	बु.२ शु.२	शुक्र	शु.३ मं.१	मंगल	मंगल	बृह.	बृह.	बु.१ श.३	शनि	शनि	शनि	श.३ बु.१	बृह.	बृह.
गण	देवता	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देवता	मनुष्य	देवता	देवता	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देवता	राक्षस	देवता	राक्षस	देवता	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देवता	राक्षस	राक्षस	मध्य	मनुष्य	देवता
नाड़ी	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य
हंसक	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा३	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल

शुभ विवाह हेतु वर-कन्या की जन्म कुण्डली मिलान तालिका

उदाहरण - वर का नक्षत्र भरणी कन्या का नक्षत्र अश्वनी मिलान करने पर ३३ गुण (१८ गुणों से ऊपर मिलान उत्तम)

राशि	कन्या ↓ नक्षत्र / वर →	अश्विनी	भरणी	कृतिका १	कृतिका ३	रोहिणी	मृगशिरा २	मृगशिरा २	आर्द्रा	पुनर्वसु ३	पुनर्वसु १	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. १	उ.फा. ३	हस्त	चित्रा २	चित्रा २	स्वाती	विशाखा ३	विशाखा १	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा. १	उ.षा. ३	श्रवण	धनिष्ठा २	धनिष्ठा २	शतभिषा	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रेवती	कन्या के नाम का प्रथम अक्षर
राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन			
मेष	अश्विनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२१	२६	१६॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२४॥	२६	२६	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६	चू.चे.चो.ला.
	भरणी	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२०॥	१८॥	२६॥	२१॥	२०	५	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२७	२८॥	२७	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२८	ली.लू.ले.लो.
	कृतिका १	२७॥	२९	२८	२०	१०	१८॥	२२	२०	२२	२६॥	२७॥	२३॥	१६	१९॥	२०॥	१५॥	१६॥	१८	२७॥	१६॥	१९॥	१६॥	२१॥	२६॥	२४॥	१८	१४	१५॥	१२॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	१२॥	अ.
वृष	कृतिका ३	१८॥	२०	१९	२८	२१	२६॥	१९॥	१७॥	१८॥	२२	२४	२०	१८	२१॥	२२॥	२१	२१	२३॥	२२॥	११॥	१४॥	२१॥	२६॥	३१॥	२०	१३॥	९	१४	११	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४	ई.उ.ए.
	रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२७	१३	१२॥	२६॥	२७॥	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	२०	११॥	१६	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२७	१९	ओ.व.वी.वू.
	मृगशिरा २	२३॥	१४॥	१८॥	२७॥	३५	२८	१९	२४	२३॥	२७	२०	२२	२०	१५॥	२५	२३॥	२६	१३	१२	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	११	१७	२१॥	२६	१२॥	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७	वे.वो
मिथुन	मृगशिरा २	२७	१८	२२	१८॥	२७	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	१२	१५॥	२३॥	२०॥	२७॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१४	१२	१४	२३	१९	२५	२१॥	२६	१३	१४	२२	२४॥	२६॥	१७	२७	का.की.
	आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	३	१६	२८	२८	२३॥	२३॥	१८	१९	१२	१७	१९॥	२७	२७	कू.घ.ङ.छ.
	पुनर्वसु ३	१९	२६	२३	२०॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१७॥	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥	१९॥	२७	२१	१४॥	२०॥	६	१४	२७	२७	२२॥	२३॥	१८॥	१९॥	११	१७	१९॥	२७॥	२८	के.को.हा.
कर्क	पुनर्वसु १	२१॥	२८॥	२३॥	२२	२५	२६	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१६॥	२०॥	१४॥	१७	१९	२०॥	१९॥	२७	२१	२०	२६	११॥	८	२१	२१॥	२६	२७	२२	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥	ही.
	पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२५	१८	१२	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	२०	१९	२२	१७	११	२२॥	२७	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७	हू.हे.हो.डा.
	अश्लेषा	२६	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१४॥	१२	१६	२८॥	३०	२८	१५	१५॥	१७॥	२०	२०॥	२५	२४॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	७॥	१२	१२	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१३	डी.डू.डे.डो.
सिंह	मघा	२१	१९	१७॥	१७॥	९॥	१८॥	२२॥	२१॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६॥	२८	३०	२६॥	१५॥	१६॥	२१॥	२४॥	११॥	१६॥	२२॥	२५॥	३२	२४	२०	९॥	५॥	६॥	१८॥	२३॥	२४॥	१७॥	१९॥	१९॥	१२	म.मी.मू.मे.
	पू.फा.	२६	१८	२०	२१	२३॥	१५॥	१९॥	२७॥	२६॥	२३॥	१८॥	१७॥	३०	२८	३४	२३	२१॥	७॥	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	१८	१७	२५	२१	१९॥	४॥	९॥	१९॥	२३॥	२४॥	१७॥	२५॥	मो.त.ती.तू.
	उ.फा. १	१७॥	२५	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१७॥	२६॥	१९॥	२६॥	३४॥	२८॥	१८॥	१६	१३॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥	२५	२६	२२	२१	१२॥	१७॥	१९॥	१५॥	१६॥	२७॥	२४॥	ते.
कन्या	उ.फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२८	१३	१४	२९॥	३०॥	२६	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८॥	२९	२७॥	पो.पा.पी
	हस्त	११	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२३॥	१९॥	२८॥	२२॥	१७॥	२१॥	१६	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२०	२६	१४	१५	२७	२८॥	२४	२५	२१	२१	६॥	१५॥	१८॥	२७	२८	पू.ष.ड़.ठ
	चित्रा २	१४	६	१९	२४॥	२०	१३	२०	२६	२५॥	२१॥	१३॥	२६॥	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२८	२८	२०	२०	२६॥	२८	१२	२५	२७	१३	२२	१७॥	१९	१७	१९	२४	१७॥	२१	११	२२	पे.पो.
तुला	चित्रा २	२३॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१३	१४	२०	१९॥	२१	१३	२६॥	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२१	२१	२८	२८	३४॥	२४॥	७॥	२२॥	२७	१३	२२	२५॥	२७	२५	१९	२६	१९॥	१४	४	१५	र.री.
	स्वाती	२८॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८॥	२८	१४	१२॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३	२७	१९	२२॥	२३॥	२९	२३	२१	२७	२१	२०	१३	रू.रे.रो.ता.
	विशाखा ३	२२॥	२३॥	२०॥	१५॥	१०॥	१९॥	२०॥	२०	२१	२२॥	२२	१८॥	१७॥	१९॥	१७॥	१७॥	१९॥	२७॥	३४॥	२०	२८	१८	१७	२०॥	२७	२१	१४	१७॥	१७॥	३१॥	२५॥	२६	२१	१५॥	१३॥	७॥	ती.तू.ते.
वृश्चिक	विशाखा १	१७॥	१७॥	१४॥	१९॥	१४॥	२३॥	१३	१३॥	१३॥	१९	१९	१४॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२२॥	८	१७	२८	२८	३१॥	२१॥	१५॥	९॥	१२	१२	२६	२५	२५॥	२०॥	२०॥	१८	११॥	तो.
	अनुराधा	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२०॥	२५	१८	२०	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२६	१२	७॥	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१३॥	२२॥	२५	२६	१३	१३	२१	२६॥	२५	१८	२६	न.नी.नू.ने.
	ज्येष्ठा	१३	१७॥	२४॥	२९॥	२२॥	२३॥	१३	३	५	१०॥	२१	२५	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५	१९॥	१५॥	२०	३१॥	३१	२८	१५	१६॥	१७॥	२०	२१	२६	२६	१९	१२	१०॥	२१	२१	नो.य.यी.यू.
धनु	मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२२	१५	१३	९॥	१८	२४	२५	१८	९॥	१३	१३	२६	२६	२२	२६	२३॥	१६॥	१५	२८	२८	२६॥	१५॥	१६॥	२०॥	२८॥	२१॥	१४॥	१६॥	२५॥	२८	ये.यो.भा.भी.
	पू.षा.	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३॥	१३	१७॥	१९	१७	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१६॥	१८॥	२८	२८	३४	२३	२४॥	८॥	१६॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥	३२॥	भू.ध.भ.ढ.
	उ.षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२५	२७	२७	२३॥	२४॥	९॥	९॥	२५	२६	२९॥	२८॥	२१	२१	१९	१३	१०॥	२४॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६	१५॥	२३॥	२३॥	२९॥	३१॥	३२॥	२३॥	भे.
मकर	उ.षा. ३	२८	२९॥	१६	१३	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२८	२८॥	१४	५॥	२१	२२	२५॥	२५	१७	२४	२२॥	१६॥	१३॥	२८	२३	१६॥	२५॥	१९	२८	२६	२६॥	१७	१७॥	२३॥	३०॥	३१॥	२२॥	भो.ज.जी.
	श्रवण	२७	२७	१३॥	११	१७	२६	२३॥	२१॥	२२	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२२॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३	१६	२५	२८	३०	२०॥	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥	खी.खू.खे.खो.
	धनिष्ठा २	२१	१०॥	२६	२३॥	२०	१३	९॥	१६॥	१७	२३	१५	२८	१८॥	४॥	१२॥	१६	२०॥	१६॥	२३॥	२७॥	३०	२८	१५	२८	२१	९	१६॥	२६॥	३०	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥	ग.गी.
कुंभ	धनिष्ठा २	२१	११	२६	३०॥	२७	२०	१३	१९	१९॥	१५	५	२०	२४॥	१०॥	१८॥	१७॥	२२॥	१८	१९	२३	२५॥	२६	१३	२६	२९॥	१७॥	२४॥	१८॥	२२	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१५	गू.गे.
	शतभिषा	१६	२१	२८	३२॥	२५	२८	२१	१२	१३	८॥	१५॥	२०	२५॥	१९॥	१२॥	११॥	१०॥	२५	२६	२१	२६	२७॥	२२	१९	२२॥	२४॥	२४॥	१८॥	१९	२५	३३	२८	१९	८॥	१७॥	१७	गो.स.सी.सू.
	पू.भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१	३१॥	२४॥	१७	१८	१३॥	२१	१४	१८॥	२४॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२४॥	२५॥	२०॥	२८॥	१९	२८	१८	२३	२०॥	से.सो.दा.
मीन	पू.भा. १	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१९	१८	२६	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥	२१	१४	२१	२७	११॥	१५	३१	३०	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥	दी.
	उ.भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥	२॥	१९॥	१२॥	१९	२०	२२	२४	२२	३१॥	३०॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४	दू.थ.झ.ञ.
	रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२५॥	२४॥	२७	१३	१२	२२॥	२३॥	२५॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२६	३०	२१॥	२०॥	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८	दे.दो.च.ची.
वर के नाम का प्रथम अक्षर		चू.चे.चो.ला.	ली.लू.ले.लो.	अ.	ई.उ.ए.	ओ.व.वी.वू.	वे.वो	का.की.	कू.घ.ङ.छ.	के.को.हा.	ही.	हू.हे.हो.डा.	डी.डू.डे.डो.	म.मी.मू.मे.	मो.टा.टी.टू.	टे.	पो.पा.पी	पू.ष.ण.ठ	पे.पो.	र.री.	रू.रे.रो.ता.	ती.तू.ते.	तो.	न.नी.नू.ने.	नो.य.यी.यू.	ये.यो.भा.भी.	भू.ध.फ.ढ.	भे.	भो.ज.जी.	खी.खू.खे.खो.	ग.गी.	गू.गे.	गो.स.सी.सू.	से.सो.द.	दी.	दू.थ.झ.ञ.	दे.दो.च.ची.	नाम अक्षर से मिलाएं गुण

ग्रह गुण मिलान विचार

कई क्षेत्रों में कुंडली में शुक्र ग्रह द्वारा भी विचार किया जाता है। यदि शुक्र पाप ग्रह के साथ या मध्य हो तथा ऐसे शुक्र से ७, ८, १२वें स्थान में कोई भी पाप ग्रह हो तो वह वर-कन्या के लिए अशुभ होता है। एक ही गण होने पर प्रीति अधिक रहती है। ग्रह मैत्रीपूर्ण हो तो गणादि दोष नहीं माना जाता। साथ ही गुण की बहुलता अर्थात २५ गुणों से अधिक के मिलान होने पर भृकुट आदि सभी दोषों का परिहार हो जाता है। नक्षत्रों में परस्पर चरण भेद होने पर भी नक्षत्र दोष समाप्त हो जाता है। तथा नाड़ी एवं गुण दोष का परिहार होता है।

इस चक्र की सहायता से वर-कन्या के नाम के प्रथम अक्षर से भी गुण मिलान कर सकते हैं।

मंगली कुंडली सुख-समृद्धि कारक भी?

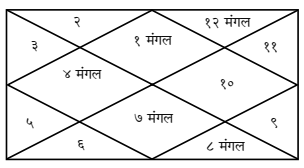

ज्योतिषाचार्य एवं हस्तरेखाविद्

पं. विनोद कुमार अयोध्या प्रसाद गौतम,

ईएम-129, **ज्योतिष मठ,** नेहरू नगर, भोपाल

मो.-9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com

मंगली कुंडली पर विचारणीय तथ्य

प्रायः देखने में आया है कि 90 प्रतिशत कुंडलियां केवल ग्रहों की विवेचनाओं में अदूरदर्शिता के कारण मांगलिक होने जैसी बन जाती है, जबकि यह मांगलिक नहीं होती, बल्कि उन कुण्डलियों के अनेक योग जीवन में शुभ फलकारी तथा दाम्पत्य क्षेत्र की समस्त संतोषप्रद उपलब्धियों, आकांक्षाओं की कारक होती हैं। विचारणीय तथ्य है कि समस्त भारतवासियों में परम्परा या ज्योतिष के अनुयायी परिवार जन्म कुण्डली की मांगलिकता से भयभीत होकर चिंचित रहते हैं। संस्थान के अनुसंधान में आया है कि विवाह के पश्चात भी अनेक प्रतिकूल अवसरों पर मांगलिक कुण्डली ही परिणाम की उत्तरदायी ठहराई जाती है, जबकि केबल 8 प्रतिशत कुण्डलियाँ वास्तविक मांगलिक दोषपूर्ण होती है, शेष सभी कुंडलियां सुख समृद्धि की कारकता के लिए अन्यान्य योगायोगों से सम्बन्ध कर शुभ फल घटित करती है। इस विषय पर मंगल से संबंधित जन्म कुण्डली पर विचार करने के लिये जैमिनी, वशिष्ठ, गर्ग ऋषि, पाराशर, भृगु आदि अनेक महर्षियों के अनुसंधानोपरांत निर्णीत आदेशों को संग्रह कर ज्योतिष के पटल से समस्त समस्याएं सुलभ की जा सकती हैं।

सर्वविदित मंगल पर सूत्र है:-

लग्ने चतुर्थे सप्ताष्ट व्यत्ये, भौमे शर्निपाप स्थित जातकं वे।
कलेह भवन भाग्य सौभाग्य, हानिर्विनाशाय द्रव्यं यदि भौम दोषः।

भावार्थ :- लग्न चतुर्थ सप्तम अष्टम और बारहवें स्थान में भौम या शनि पाप ग्रह होने से क्रमशः कलह, भवन, भाग्य, सौभाग्य, आयु और द्रव्य की हानि होती है। यदि जन्म कुण्डली मांगलिक हो तो, स्पष्ट है लग्न से कलह, चतुर्थ से भूमि सम्पत्ति, वाहन, सप्तम से स्वास्थ्य दैनिक रोजगार, अष्टम से आयु (जीवन) द्वादश से जीविका, सम्पत्ति का कष्ट देती है। मांगलिक कुण्डली विचार के लिये शास्त्रों में स्पष्ट निर्देश है जिन्हें मंगल दोष पूर्ण माना जाए और जिन्हे मांगलिक देखने में प्रतीत होते हुये भी मंगल दोष से मुक्त माना जाए।

चन्द्रयुश्रम् गुर्रूयुश्रम शनिर्युश्रम् भौमयोः।
द्रष्टिम् पूर्ण मन्दस्य, भौम दोषं नं किंचद्।।

जन्म चक्र में मंगल लग्न चतुर्थ सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में होने पर मंगल के साथ यदि चंद्र अथवा गुरू अथवा शनि कोई भी एक ग्रह बैठा हो या शनि की पूर्ण दृष्टि (3,7,10वें) मंगल पर पड़ रही हो तो ऐसी जन्म कुण्डली में मंगल दोष किंचित मात्र भी नहीं होता।

केन्द्रस्त्रिकोणं गुरू दोषहर्श्र, केन्द्रेष चन्द्रे शुभदां करोति।
षष्ठे च याने राहो शुभंस्यात, न भौम दोषेन विचारणीया।।

जन्म चक्र में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में होने पर यदि जन्म चक्र के केन्द्र (1,4,7,10) अथवा त्रिकोण (1,5,9,) में गुरू हो या केन्द्र (1,4,7,10) में चन्द्र हो अथवा छठे या ग्यारहवें भाव में राहू हो तो ऐसी जन्म कुण्डली में मंगल दोष नहीं होता।

भोमे मेष सिंहस्थ यदि जन्मांके द्रश्यते।
वृष लग्नस्थवै प्रोक्ता सौभाग्यं दोषंमुक्तयः।।

जन्म चक्र में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में होने पर यदि किसी भाव का मंगल, मेष, सिंह या वृषभ राशि का हो तो जन्म पत्रिका में मांगलिक दोष नहीं होता।

मिथुने कुजम् सप्तस्थे कर्क लग्ने अष्टमे।
कन्या प्रथम चतुर्सप्त भौमं शुभफल दायका।।

मिथुन राशि का मंगल सप्तम भाव में बैठा हो या जन्म पत्रिका कर्क लग्न की होने पर अष्टम भाव का मंगल हो अथवा कन्या लग्न में प्रथम, चतुर्थ और सप्तम भाव में मंगल होने पर भी मांगलिक दोष न होकर शुभ फलकारी होता है।

न मंगली मंगल भृगुर्द्वितीये, न मंगली मंगल राहू योगे।
न मंगली पश्यति जीवजस्य, दोषस्य रहितं समृद्धिकारी।।

जब पत्रिका में यदि दूसरे भाव में शुक्र हो, या मंगल के साथ राहू हो अथवा मंगल को गुरू देखता हो तो मंगल शुभ होकर समृद्धिकारी होता है।

मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरुणध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षा मंगलाय तनो हरि।।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

सूर्य दक्षिणायन

वर्षा ऋतु
ता. 18 से शरद ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 सितंबर की

6 के.शु.	5 सू.	4 चं.बु.	3 मं.
7	8	2 गु.	1
9	10	11 श.	12 रा.

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- सिंह में, ता. 17 को 10:59 दिन से कन्या में। **मंगल-** मिथुन में, **बुध-** कर्क में, ता. 4 को 7:11 रात से सिंह में। ता. 23 को 1:45 रात से कन्या में। **गुरु-** वृष में, **शुक्र-** कन्या में, ता. 18 को 10:27 दिन से तुला में। **शनि-** कुंभ में वक्री, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 2 को 12।19 रात तक। ता. 10 को 3।58 दिन से ता. 12 को 5।31 सायं तक। ता. 19 को 10।44 दिन से ता. 21 को 7।28 प्रातः तक। ता. 27 को 4।25 रात अंत से ता. 29 को दिनरात। ता. 30 को 7।34 प्रातः तक।

गुरु पूर्व दिशा में उदित शुक्र पश्चिम में उदित।

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 18 सितंबर की

7	6 सू.शु.के.	5 बु.	4
8	9	3 मं.	2 गु.
10	11 श.चं.	12.रा.	1

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा कर्क राशि का, तारीख 1 को 10।24 बजे रात से सिंह का। ता. 4 को 9।14 बजे दिन से कन्या का। ता. 6 को 9।2 बजे रात से तुला का। ता. 9 को 8।6 बजे प्रातः से वृश्चिक का। ता. 11 को 4।59 बजे सायं से धनु का। ता. 13 को 11।34 बजे रात से मकर का। ता. 15 को 3।57 बजे रात से कुंभ का। ता. 18 को 6।51 बजे प्रातः से मीन का। ता. 20 को 9।4 बजे दिन से मेष का। ता. 22 को 11।46 बजे दिन से वृष का। ता. 24 को 3। 41 बजे दिन से मिथुन का। ता. 26 को 9।33 बजे रात से कर्क का। ता. 28 को 5।45 बजे रात से सिंह राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

सितंबर 2024

संवत् 2081

भाद्रपद-आश्विन मास

ता. 2 सोमवती अमावस्या
सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहते हैं। इस दिन विवाहित स्त्रियों द्वारा इस दिन अपने पतियों के दीर्घायु कामना के लिए व्रत का विधान है।

ता. 6 हरतालिका तीज व्रतं
यह व्रत वर्ष का सबसे कठिन एवं लंबी अवधि का निर्जला व्रत है। इस दिन भगवान शिव परिवार के साथ उनके गणों की पूजा-हवन चार प्रहर रात्रि जागरण के साथ की जाती है। फूलों से बना फुलहेरा सजाया जाता है।

ता. 18 श्राद्ध प्रारंभ
श्राद्ध पूर्णिमा के दिन से पूर्वजों के निमित्त तर्पण प्राशन तप नियम आदि के साथ श्राद्ध तिथि पर व्रत प्रारंभ होते हैं। महालय श्राद्ध 16 दिन तक चलते हैं।

शिव वास अग्नि वास
इस माह ता. 5, 8, 12, 16, 21 एवं 25 को शिव एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	14	4।29	रात	भाद्रपद कृष्णपक्ष
2	30	दिन	रात	
3	30	5।55	प्रात:	
4	1	7।40	प्रात:	भाद्रपद शुक्लपक्ष
5	2	9।39	दिन	
6	3	11।41	दिन	
7	4	1।37	दिन	
8	5	3।18	दिन	
9	6	4।36	दिन	
10	7	5।27	सायं	
11	8	5।48	सायं	
12	9	5।39	सायं	
13	10	5।0	सायं	
14	11	3।55	दिन	
15	12	2।26	दिन	
16	13	12।37	दिन	
17	14	10।32	दिन	
18	15 1	8।16	प्रात:	
19	2	3।25	रात	आश्विन कृष्णपक्ष
20	3	1।3	रात	
21	4	10।48	रात	
22	5	8।46	रात	
23	6	7।1	रात	
24	7	5।37	सायं	
25	8	4।36	दिन	
26	9	4।3	दिन	
27	10	4।0	दिन	
28	11	4।28	दिन	
29	12	5।26	सायं	
30	13	6।50	रात	

कैलेंडर

SUNDAY रवि	शिव चतुर्दशी व्रतं — **1** — श्लेषा 10।24 रात, वज्र योग — भाद्रपद कृष्ण 14	ऋषि पंचमी — **8** — स्वाती 12।31 दिन, मां वेलांकिनी पर्व ईसाई — भाद्रपद शुक्ल 5	प्रदोष व्रतं — **15** — श्रवण 4।23 दिन, पंचक प्रा., ओणम — भाद्रपद शुक्ल 12	पंचमी श्राद्ध — **22** — भर, कृति 6।01 प्रातः, कालदंड योग — आश्विन कृष्ण 5	सन्यासियों का श्राद्ध — **29** — मघा ×।× दिनरात, द्वादशी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 12
MONDAY सोम	सोमवती अमावस्या — **2** — मघा 12।19 रात, महाकाल शाही सवारी — भाद्रपद कृष्ण 30	मौराई छठ, लोलार षष्ठी — **9** — विशाखा 2।28 दिन, मित्र योग — भाद्रपद शुक्ल 6	पंचक — **16** — धनिष्ठा 3।17 दिन — भाद्रपद शुक्ल 13	षष्ठी श्राद्ध — **23** — रोहिणी 3।54 रात, प्रवर्धमान योग — आश्विन कृष्ण 6	प्रदोष, शिवचतुर्दशी व्रतं — **30** — मघा 7।34 प्रातः, त्रयोदशी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 13
TUESDAY मंगल	स्नानदान अमावस्या — **3** — पूर्वा फा. 2।35 रात, शुभ योग — भाद्रपद कृष्ण 30	संतान सप्तमी — **10** — अनुराधा 3।58 दिन, महालक्ष्मी व्रतारंभ 16 दिन — भाद्रपद शुक्ल 7	विश्वकर्मा पूजा — **17** — शतभिषा 1।55 दिन, पंचक, पूर्णिमा व्रत की — भाद्रपद शुक्ल 14	महालक्ष्मी व्रतं — **24** — मृगशिर 3।21 रात, सप्तमी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 7	**पंचक** तारीख 15 को 3 बजकर 55 मिनिट रात से ता. 20 को 9।4 बजे दिन तक।
WEDNESDAY बुध	चंद्रदर्शन — **4** — उत्तरा फा. 5।5 रात, प्रवर्धमान योग — भाद्रपद शुक्ल 1	राधा अष्टमी — **11** — ज्येष्ठा 4।59 सायं, ध्वांक्ष योग — भाद्रपद शुक्ल 8	स्नानदान पूर्णिमा — **18** — पूर्व भाद्रपद 12।23 दिन, पंचक, प्रा. महालय श्राद्ध — भाद्रपद शुक्ल 15,1	जीवित पुत्रका व्रत — **25** — आर्द्रा 3।14 रात, अष्टमी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 8	**भद्रा** ता. 1 को सूर्योदय से 4।25 सायंकाल तक। ता. 6 को 12।43 बजे रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 7 को सूर्योदय से 1।37 बजे दिन तक। ता. 10 को 5।27 बजे सायं से 5।47 बजे रात्रि अंत तक। ता. 14 को सूर्योदय से 3।55 बजे दिन तक। ता. 17 को 10।32 बजे दिन से 9।26 बजे रात्रि तक। ता. 20 को 2।16 बजे दिन से 1।3 बजे रात्रि तक। ता. 23 को 7।1 बजे रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 26 को 3।57 बजे रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 27 को सूर्योदय से 4।0 बजे दिन तक। ता. 30 को 6।50 बजे सायं से रात्रिअंत तक।
THURSDAY गुरु	बाबू दोज, वराह अवतार — **5** — हस्त ×।× दिनरात, सांवेदियों का उपाकर्म — भाद्रपद शुक्ल 2	महानंदा नवमी — **12** — मूल 5।31 सायं, शुभ योग — भाद्रपद शुक्ल 9	छत्र योग — **19** — उत्तर भाद्रपद 10।44 दिन, पंचक, द्वितीय श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 2	मात्र नवमी — **26** — पुनर्वसु 3।35 रात, नवमी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 9	
FRIDAY शुक्र	हरतालिका तीज व्रतं — **6** — हस्त 7।42 प्रातः, अमृत योग — भाद्रपद शुक्ल 3	तेजा दसमी — **13** — पूर्वाषाढ़ 5।34 सायं, प्रवर्धमान योग — भाद्रपद शुक्ल 10	श्रीवत्स योग — **20** — रेवती 9।4 दिन, पंचक समाप्त, तृतीया श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 3	दसमी श्राद्ध — **27** — पुष्य 4।25 रात, गुरुनानकदेव पुति — आश्विन कृष्ण 10	
SATURDAY शनि	गणेश चतुर्थी व्रतं — **7** — चित्रा 10।14 दिन, अगस्तोदय, दर्शन निषेध — भाद्रपद शुक्ल 4	जल झूलनी एकादशी — **14** — उत्तराषाढ़ 5।10 सायं, डोल ग्यारस — भाद्रपद शुक्ल 11	गणेश चतुर्थी व्रतं — **21** — अश्विनी 7।28 प्रातः, चतुर्थी श्राद्ध, सौम्य योग — आश्विन कृष्ण 4	एकादशी व्रतं — **28** — श्लेषा 5।45 रात, एकादशी श्राद्ध — आश्विन कृष्ण 11	

मुहूर्त

विवाह- चतुर्मास मुहूर्ताभाव
नामकरण-ता. 4-6, 9, 16, 18, 23, 26
अन्नप्राशन- ता. 4, 5, 6, 16, 19, 20, 26, 27 **सीमांत पुंसवन-** ता. 24
नवीन वस्त्र- ता. 6, 8, 10, 15, 27
प्रसूति स्नान- ता. 7, 10, 12, 17, 21, 24
व्यापार आरंभ- ता. 6, 23, 27
वाहन क्रय- ता. 6, 14, 15, 16, 27
शल्यक्रिया- ता. 10, 15, 24
वाटिका रोपण- ता. 6, 8, 23, 27
औषधि सेवन- ता. 6, 9, 15, 16, 27
यात्रा- ता. 9, 10, 15, 16, 24, 27
धान्य छेदन-ता. 6, 11, 15, 22, 27, 29
नवान्य भक्षण-ता. 6, 15, 16
वस्तु क्रय - ता. 6, 14, 15, 18, 22, 28
शस्त्र निर्माण- ता. 8, 10, 22, 29
पशु क्रय-विक्रय- ता. 8, 11, 15, 16, 22, 27 **नव निर्माण-** ता. 6, 15, 27
आभूषण निर्माण - ता. 8, 15, 22
शिल्प विद्या - ता. 6, 18, 23, 27

पंचांग के पिछले पृष्ठों का अध्ययन अवश्य करें।
त्योहारों से संबंधित वाट्सएप की अफवाहों से बचें

राशिफल

मेष - स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
वृष- स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
मिथुन - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
कर्क - भूमि लाभ, यात्रा कष्ट, पुत्र सुख।
सिंह - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कन्या - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
तुला - जायजाद वृद्धि, चिंता निवारण।
वृश्चिक - भूमि लाभ, यात्रा, प्रतिष्ठा में वृद्धि।
धनु - प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
मकर- धन लाभ, शुभ समाचार, मतभेद।
कुम्भ- लाभ, श्रम अधिक, बेवजह तनाव।
मीन- मतभेद बढ़ेगा, मेहमान, आगमन।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 1 रानी अहिल्या बाई होलकर पुति
ता. 5 शिक्षक दिवस, डॉ. राधाकृष्णन जयंती
ता. 8 विश्व साक्षारता दिवस
ता. 14 हिन्दी दिवस
ता. 17 श्री विश्वकर्मा जयंती
ता. 25 पं. दीनदयाल उपाध्याय ज.
ता. 27 विश्व पर्यटन दिवस
ता. 28 श्री भगत सिंह जयंती, लता मंगेश्वर जयंती

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता. 7 को 10।14 बजे दिन से रातअंत तक। ता 9 को 2।28 बजे दिन से रातअंत तक। ता 14 को 5।10 बजे सायं से रातअंत तक। ता 19 को 10।48 बजे दिन से रातअंत तक। ता 20 को 9।4 बजे दिन से रातअंत तक।
अमृतसिद्धि योग- ता 20 को सूर्योदय से 9।4 बजे दिन तक। ता 23 को 3।54 बजे रात से रातअंत तक। ता 26 को 3।35 बजे रात से रातअंत तक।
रवियोग- ता. 5 को रात्रि 7।45 बजे से रात्रिअंत ता 6 को प्रातः 7।42 बजे से रात्रिअंत ता 7 को सूर्योदय से दिन 10।14 बजे तक। ता 8 को दिन 12।31 बजे से रात्रि अंत तक। ता 9 को सूर्योदय से दिन 2।28 बजे तक। ता 11 को सायं 4।59 बजे से रात्रि अंत तक। ता 12 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 13 को सूर्योदय से सायं 5।34 बजे तक। ता 14 को सूर्योदय से सायं 5।10 बजे तक। ता 16 को दिन 3।17 बजे से रात्रिअंत ता 17 को सूर्योदय से दिन 1।55 बजे तक। ता 23 को सूर्योदय से रात्रि 3।54 बजे तक। **द्विपुष्कर योग -** ता. 24 को सूर्योदय से 3।21 रात तक।
त्रिपुष्कर योग - ता. 14 को 3।35 दोपह से 5।10 सायं तक।
पुष्य नक्षत्र - ता. 27 को सूर्योदय से रात अंत तक।

भोपाल

सूर्योदय ता.	1-5.45	7-5.49	13-5.53	19-5.57	25-6.01	30-6.04
सूर्यास्त ता.	1-6.15	7-6.11	13-6.07	19-6.03	25-5.59	30-5.56

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 1 अघोर चतुर्दशी
ता. 2 स्नानदान, सोमवती अमावस्या
ता. 3 कुशोत्पाटनी अमावस्या
ता. 6 हरतालिका तीज
ता. 7 गणेश चतुर्थी व्रतं, गणेशोत्सव
ता. 8 ऋषि पंचमी व्रतं,
ता. 9 मौराई छठ, सूर्यषष्ठी
ता. 10 मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी
ता. 11 राधा अष्टमी, महालक्ष्मी व्रतं प्रा.
ता. 12 महानंदा नवमी, श्रीचंद नवमी
ता. 13 दशावतार व्रतं, तेजा दशमी

ज्योतिष मठ संस्थान के प्रकाशन
- पं. गौतम पंचांग
- कुंभ रहस्यम्
- संतान प्राप्ति रहस्यम्
- नवग्रह रहस्यम्
- लक्ष्मी पूजन पद्धति
- वैदिक विवाह पद्धति
- व्रत त्योहार निर्णय सूत्र
- आयुर्वेद रहस्यम्
- सौभाग्यम्

फोन करके घर बैठे प्राप्त करें।

ता. 14 पद्मा एकादशी व्रतं, डोल ग्यारस
ता. 15 प्रदोष व्रतं, वामन अवतार
ता. 17 अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन, कदलीव्रतं, विश्वकर्मा पूजनं
ता. 21 श्री गणेश चतुर्थी व्रत
ता. 24 महालक्ष्मी अष्टमी व्रतं
ता. 28 इन्दिरा एकादशी
ता. 30 प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी

जैन पर्व-पर्व
ता. 1, 8 15 रवि व्रत
ता. 10 को शील सप्तमी

कन्या संक्रांति फलं

ता. 17 को 10:59 दिन से सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। महोदरी संज्ञक संक्रांति घोटक वाहन पर सवार सिंह उपवाहन लिए हल्दी लेपन किए विप्र वर्ण की वृद्धावस्था में बैठी हुई स्थिति में प्रवेश कर रही है। संक्रांति का प्रभाव चोर, तस्करों एवं जमाखोंरों के लिए सुखद रहेगा साथ ही अनैतकि कार्यशील एवं ठगों को सुखकारी है। अनाज के मूल्यों में घटा-बढ़ी के संकेत हैं। सोने-चांदी में तेजी के साथ खाद्य पदार्थो में तेजी हो सकती है।

मास फल

इस माह सूर्य शुक्र केतु का त्रिग्रही योग तथा वृष राशि का गुरु केंद्र सरकार एवं कुछ राज्य सरकारों के बीच संघर्ष निर्मित कर सकता है। मिथुन राशि पर मंगल का प्रभाव वर्षा, बाढ़ से जनजीवन प्रभावित करेगा। सूर्य बुध से राहु का षडाष्टक योग देश के महान राजनैतिक व्यक्तियों के लिए कष्टप्रद है। माह के अंत में चतुर्ग्रही योग का प्रभाव भौमांतरिक्ष उपद्रव्य तथा जनसंघर्ष की स्थितियां निर्मित करेगा। मीन राशि पर राहु धार्मिक स्थलों को क्षति पहुंचा सकता है, अतः सावधानी की आवश्यकता है।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम

ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com

website-www.jyotishmath.com

ज्योतिष विचार साढ़े साती शनि विचार सन् 2024 ई.

पं. रिंकु महाराज
महंत नागा बाबा श्री मुकेश गिरिजी आश्रम
शनि हनुमानजी मंदिर कमला पार्क, भोपाल मो.-9098471444

शनि भ्रमण सन 2024 ई.

इस वर्ष 2024 ई. में शनि का विचरण वर्ष प्रारंभ से ही कुंभ राशि में रहेगा। अतः पूर्वगत स्थिति में मकर, कुंभ, मीन राशि वालों को साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। कर्क और वृश्चिक राशि वाले अढ़ैया शनि से प्रभावित रहेंगे।

शनि जिस राशि में भ्रमणरत होते हैं उस राशि के आगे पीछे की राशि पर अपना शुभाशुभ प्रभाव देते हैं। शनि के अशुभ स्थिति में होने पर व्यापार, व्यवसाय, नौकरी, पदोन्नति में रुकावटें, हानि तथा निकट पारिवारिक संबंधियों से वाद-विवाद, न्यायालयीन परेशानी एवं स्वास्थ्यगत परेशानी, चिंता, तनाव एवं मुसीबतों की बारिश करा देता है। परन्तु शनि अनुकूल होने से सर्वसुख आर्थिक लाभ, मान-सम्मान में वृद्धि होती है।

अशुभ शनि शांति के उपाय

उपरोक्त शनि का विचार गोचर ग्रहों के आधार से है, फल का पूर्ण निर्धारण जन्म कालीन ग्रहों के आधार पर करना अनिवार्य है। जिनकी जन्म कुण्डली में शनि शुभफल प्रद हो अथवा अर्न्तदशा शुभ चल रही हो उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्म कुंडली में शनि अशुभ ग्रहों से युक्त अशुभ स्थानों में हो तो साढ़ेसाती और अढ़ैया शनि चिंता, पीड़ा, धन हानि, कार्य में विघ्न नेष्ट फल दायक होता है। शनि के अनिष्ट फल के निवार्णार्थ छायादान, शनि मंत्र का जाप, हवन, हनुमत पूजा, अभिषेक, तेलयुक्त सिन्दूर समर्पण कर भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य का दान, प्रति शनिवार को पीपल का पूजन करने तथा दीपक जलाने से शनि का अनिष्ट फल दूर होता है। साढ़ेसाती अढ़ैया शनि का विचार जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती शनि का विचार नहीं होता शनि का बीज मंत्रः !! ॐ शं शनैश्चराय नमः !!

1. लोहे की कटोरी में तेल लेकर अपनी छाया उसमें देखकर वह तेल पांच शनिवार आक के पौधे पर डालें। पांचवे शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल व कटोरी वही दबा दें। ऊँ ऐं ह्रीं शनैश्चराय नमः मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें।
2. नीलम, काला हकीक अथवा काले घोड़े के नाल की अंगूठी धारण करना लाभकारी होगा।
3. काला कपड़ा, उड़द की दाल, लोहा, सरसों का तेल, काले फूल का दान, शनि दशा में शुभ प्रभाव कारी माना गया है।
4. शिवजी को तांबे का सर्प चढ़ाना लाभकारी होता है।
5. शनि स्त्रोत का शनिवार को जाप करना शनि के कुप्रभावों से रक्षा करता है।
7. रुमाल के आकार वाले काले कपड़े में पांच काली वस्तुएं जैसे लोहा, उड़द, कोयला, काजल, तिल, काली मिर्च आदि थोड़ी-थोड़ी मात्रा में रखकर पोटली बनाकर तीन बार सिर से घुमाकर शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद जल में विसर्जन करें।
8. शनिश्चरी अमावस्या, शनि जयंती एवं हनुमान जयंती आदि अवसरों पर यथायोग ब्राह्मण से शनि ग्रह की शांति विधान कराने से शनि से संबंधित पीड़ा समाप्त होती है। शनि की अंतर्दशा, महादशा में भी शनि शांति करवाने से लाभ होता है।

विशेष - जिन राशियों में शनि की साढ़ेसाती एवं अढैया का प्रभाव अथवा शनि की दशा का प्रभाव हो उन राशि वालों को श्रावण माह में शिव अभिषेक महामृत्युंजय जाप के साथ शनि की शांति अवश्य कराना चाहिए एवं वाहन से सावधानी रखें, अन्याय न करें।

संदिग्ध व्रतोपवास एंव समय शुद्धि 2024

कुछ वर्षों से सोशल मीडिया, टीवी, चैनल, समाचार पत्रों में धार्मिक रूप से अस्वीकार उपछाया ग्रहणों को प्रदर्शित कर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। साथ ही व्रत त्योहारों को भी अविवेकपूर्ण व्याख्या करके भ्रम की स्थिति बनाई जा रही है। अतः आप सभी स्वविवेक से काम लें, भ्रामक जानकारियों से बचें। तथा विद्वान जन धर्मशास्त्र के अनुसार ही व्रत त्योहारों का अनुसंधान कर सही जानकारी यजमानों को दें एवं भ्रामक जानकारियों और उसको प्रदर्शित करने वाले का बहिष्कार करें। सन 2024 ई. में कुछ व्रत त्योहारों को लेकर पंचागों में भ्रमपूर्ण स्थिति बन सकती है। जिसे इस तरह से समझा जा सकता है।

1. होलिका दहन - तारीख 24 मार्च दिन रविवार भद्रा उपरांत रात्रि के बाद होलिकादहन करना विशेष शुभ है। होलिका दहन में सूखी अरंड खरपतवार गोकाष्ट कंडे का उपयोग करना चाहिए। प्लास्टिक रबर आदि जलाना अशुभ माना जाता है।

2. चैत्र नवरात्र - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिनांक 9 अप्रैल 2024 को नवसंवतसर प्रारंभ हो रहा है। इसी समय से बसंत नवरात्रि आरंभ होती है। कलश स्थापना हेतु वैधृति योग निषेध है। अतः इस नवरात्रि में कलश स्थापना घटस्थापना पूजन अभिजीत मुहूर्तकाल में दिन में 11.35 से 12.25 तक करना हितकर रहेगा।

3. तेरह दिन का पक्ष - अषाढ़ कृष्ण द्वितीया एवं चतुर्दशी तिथियों के क्षय होने के कारण त्रियोदस दिनांत्मक पक्ष की श्रेणी में आता है। इस कारण इस पक्ष में सभी प्रकार के शुभ कार्य वर्जित रहेंगे। अतः आषाढ़ कृष्ण में कोई शुभकार्य नहीं होंगे।

4. हलछठ- तारीख 24 अगस्त एवं 25 को हरछठ को लेकर पंचांग भेद होने से विवाद का कारण बन रहा है। भारत के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में 24 तारीख को उत्तर-पूर्व क्षेत्र में कुछ क्षेत्र तारीख 25 को एवं कुछ क्षेत्रों में दोनों दिन मिला-जुला प्रभाव रहेगा।

5. जन्माष्टमी- जन्माष्टमी ता. 26 अगस्त को है। ता. 27 को अष्टमी तिथि का मान 3 मुहूर्त से कम है फिर भी उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में 27 को भी मनाई जाएगी।

6. दीपावली - अमावस्या तिथि को दीपावली दीप पूजन करना श्रेष्ठ रहता है। अगर अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से आधी रात तक उपलब्ध हो। दीपावली निर्णय : अमावस्या प्रदोषकाल से अर्धरात्रि तक रहने वाली श्रेष्ठ मानी जाती है। अगर आधी रात न भी हो तो प्रदोष व्यापिनी होना चाहिए। ता. 1 नवंम्बर को अमावस्या तिथि प्रदोषकाल के समय समाप्त हो रही है। जबकि पूर्व में 31 अक्टूबर को अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से रात्रि अंत तक मिल रही है जो शास्त्र सम्मत है। इसलिए दीपावली पर्व लक्ष्मी कुबेर पूजन 31 अक्टूबर गुरुवार के दिन किया जाना शास्त्र सम्मत है।

7 गोवर्धन पूजा-भाईदूज - प्रदोष व्यापिनी अमावस्या अर्धरात्रि में 31 अक्टूबर गुरुवार को होने के कारण कार्तिक शुक्ल 1 प्रतिपदा तारीख 2 नवंबर को गोवर्धन पूजा एवं 3 नवंबर को भाईदूज तिथि द्वितीया में शास्त्रानुसार मान्य है। परंपरागत रूप से कुछ श्रद्धालु निश्चित तौर पर दीपावली के अगले दिन ग्रौक्रीड़ा गौपूजा करते हैं।

पं. पुष्पेन्द्र मिश्रा
अध्यक्ष, अ.भा. ब्राह्मण समाज (मप्र) भोपाल, मो. 9425666261

सूर्य-चंद्र ग्रहण ज्ञान-2024

वैदिक आचार्य पं. देवेन्द्र दुबे
सिद्धेश्वर साईं हनुमान मंदिर
बंजारी चौराहा कोलार रोड, भोपाल
मो.-9893885738

इस वर्ष विश्व में तीन सूर्य ग्रहण तथा दो चंद्रग्रहण, कुल पांच ग्रहण लेगें। इनमें से कोई भी ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। विदेशों में दिखने वाले ग्रहणों का विवरण इस प्रकार हैः-

विदेशों में दृश्य ग्रहण

1. खग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक 8 अप्रैल 2024- यह ग्रहण अरब देशों, सम्पूर्ण उत्तर अमेरिका के कनाडा, मेक्सिको, क्यूबा इत्यादि क्षेत्रों में दृश्य होगा।

2. खंडग्रास चंद्र ग्रहण - दिनांक 18 नबम्बर 2024- यह ग्रहण कनाडा, रूस के उत्तरी भाग, यूरोप के देशों, फ्रान्स, यूनाइटेड स्टेट्स, दक्षिण पश्चिम एशिया, अफ्रीका, सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका इत्यादि क्षेत्रों में दृश्य होगा।

3. खग्रास सूर्य ग्रहण- दिनांक 3 अक्टूबर 2024 - यह ग्रहण दक्षिण अफ्रीका के अर्जेन्टिना, चिली, प्रग्वे पेरू देशों में खग्रास दिखाई देगा।

4. खग्रास चंद्र ग्रहण - दिनांक 14 मार्च 2025- यह ग्रहण कनाडा, रूस के उत्तरी भाग, दक्षिण पश्चिम एशिया, अफ्रीका, सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका, इत्यादि क्षेत्रों में दृश्य होगा।

5. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक 29 मार्च 2025- यह ग्रहण साउथ अफ्रीका के उत्तरी भाग, रूस के उत्तरी भाग एवं यूरोपीय देशों में दिखाई देगा।

मान्द्य ग्रहण

जब चंद्रमा पृथ्वी की छाया से होकर गुजरता है तब चंद्र ग्रहण पड़ता है, लेकिन जब प्रतिछाया से होकर गुजरता है तो उसकी घुति (चमक) फीकी पड़ जाती है इसे मान्द्य ग्रहण कहते हैं। मान्द्य ग्रहण को भारतीय ज्योतिष में युति या समागम कहते हैं। यह ग्रहण की श्रेणी में नहीं आता है। इस वर्ष के प्रारंभ से पहले दिनांक 25 मार्च 2024 को यह घटना होगी।

सूतककाल एवं ग्रहणदोष निवारक स्नानदान नियम

सूर्य ग्रहण के स्पर्श (प्रारंभ होने) से चार प्रहर अर्थात 12 घंटे का और चंद्रग्रहण के स्पर्श से तीन प्रहर पूर्व अर्थात 9 घंटे का होता है। जिसे सूतक कहते हैं। सूतककाल में मूर्ति स्पर्श, पूजा-पाठ, अनुष्ठान, ध्यान निषेध हैं। इस समय संकीर्तन पाठ, रामनाम जाप एवं सूर्य मंत्र का जाप करना चाहिए। ग्रहण समाप्ति के पश्चात स्नान, दान, पूजा-पाठ इत्यादि अवश्य करनी चाहिए। ग्रहणकाल में गर्भवती स्त्रियों को सावधानी रखनी चाहिए। रोगी, वृद्धजनों एवं बालकों को धार्मिक नियमों के भंग होने का दोष नहीं लगता। सूर्यग्रहण को नंगी आंखों से देखना हानिप्रद होता है, जिस राशि में ग्रहण होता है उस राशि वालों को अनिष्ठ फल देता है। जहां पर ग्रहण की छाया पड़ती है वहां पर ही ग्रहण का सूतक मान्य होता है। ग्रहण के अनिष्ठ फल से बचने के लिए स्वर्ण निर्मित कांसे के बर्तन में तिल, वस्त्र एवं दक्षिणा के साथ श्रोत्रिय ब्राह्मण को दान करना चाहिए अथवा सोने या चांदी का ग्रह बिम्ब बनाकर ग्रहण जनित दुष्ट फल निवारण हेतु दान करना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश : वर्षा विचार 2024

रोहिणी वास तट पर होने से शुभ वर्षा होगी और अन्न-धन की वर्षा होगी।

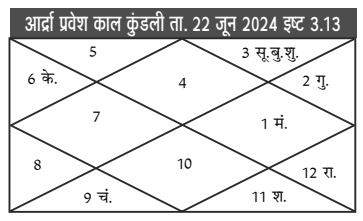

आर्द्रा प्रवेश तिथि प्रतिपदा है वर्षा अच्छी होगी। मंगलकार्य में वृद्धि होगी। मेघेश शनि होने से कहीं-कहीं कमजोर धीमा वर्षा, रोग जनित संक्रमण का कारक होने से इस वर्ष वरुण नाम का मेघ वर्षा कराएगा। जनता खुशहाल रहेगी तथा पर्याप्त वर्षा होगी। वर्षा विंशोपक 5 धान्य 11, ऋण 5 शीत 13, तेज 17, वायु 13, वृक्षादि 3, फल 13 रस 9 पाप 3, पुण्य 11, व्याधि 7, आचार 3, अनाचार 3, मृत्यु 3, जन्म 7। स्थिति सामान्य।

आर्द्रा नक्षत्र - 22 जून को रात्रि से आर्द्रा नक्षत्र में भगवान सूर्य प्रवेश करेंगे। संज्ञा-स्त्री-पुरुष चंद्र-सूर्य योग, वाहन-चातक, वर्षा श्रेष्ठ।

पुनर्वशु नक्षत्र- 6 जुलाई को दिन से पुनर्वशु नक्षत्र में वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा-स्त्री-स्त्री, चंद्र-चंद्र योग, वाहन-नाग, अल्प वृष्टि।

पुष्य नक्षत्र - 20 जुलाई को पुष्य नक्षत्र में वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा- स्त्री-स्त्री, चंद्र-सूर्य-योग, नाग वाहन, वर्षा श्रेष्ठ।

अश्लेषा नक्षत्र - 3 अगस्त को अश्लेषा नक्षत्र में वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा-स्त्री-स्त्री, चंद्र-चंद्र योग, खर-वाहन, अल्प वृष्टि।

मघा नक्षत्र - 17 अगस्त को मघा नक्षत्र सिंह राशि में वर्षा प्रवेश करेगी। संज्ञा-स्त्री-पुरुष, चंद्र-चंद्र योग, जंबुक वाहन, वर्षा श्रेष्ठ।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र - 31 अगस्त को वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा-स्त्री-स्त्री, चंद्र-सूर्य योग, मूसक वाहन, अल्प वृष्टि।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र-13 सितंबर को इस नक्षत्र में वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा-स्त्री-पुरुष, चंद्र-सूर्य योग, नाग वाहन, वर्षा श्रेष्ठ

हस्त नक्षत्र- 27 सितंबर को हस्त नक्षत्र में वर्षा का प्रवेश होगा। संज्ञा-स्त्री-स्त्री, सूर्य-चंद्र योग, वाहन-चातक, अल्प वृष्टि। यह वर्षा का आठवां अंतिम नक्षत्र है। जो 11 अक्टूबर तक चलेगा।

मौसम-वर्ष 2024 वर्षा विचार

वर्ष भर में बन रहे गृह योगो की दृष्टि से संभावित वर्षा योग

अर्द्रा प्रवेश 22 जून को मेष लग्न में हो रहा है। सूर्य से आगे मंगल रहेगा तथा गुरु राहु के साथ होने से सामान्य बारिश के योग इस वर्ष निर्मित हो रहे है। भारतीय मौसम अर्द्रा से हस्त तक 8 नक्षत्रों में बारिश के योग निर्मित होते है साथ ही ग्रह उदय अस्त वकीय मार्गी तथा बुध शुक्र मंगल एवं गुरू के एक ही नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित होने पर बारिश होती है।

जनवरी- तारीख 5 से 12 एवं 19 से 22 तथा 30,31 के आसपास कोहरा मवाठा धुंध शीत प्रकोप प्राकृतिक प्रकोप तटीय क्षेत्रों में तूफानी बारिश योग ।

फरवरी- तारीख 6 से 9 एवं 12 से 15 तथा 21 से 27 शीत लहर ओला वृष्टि के योग ।

मार्च - तारीख 3 से 7, 11 से 16 एवं गुरू अस्तकालीन मासान्त में 29 से 31 वायु प्रकोप ओला प्रकोप यत्र-तत्र बारिश ।

अप्रैल - तारीख 1, 2 एवं 8 से 12 तथा 18 से 22 तथा गुरू उदय कालांश 28 से 30 वायु वेग खण्ड वृष्टि के साथ ओला वृष्टि संभव।

मई - तारीख 1 से 4, 12 से 17 एवं 23 से 26 देश के तटीय क्षेत्रों में वायु वेग पूर्वोत्तर सहित गोवा, महाराष्ट्र, उड़ीसा में बारिश ।

जून - तारीख 3 से 6 तथा 13 से 17 एवं आर्द्रा कालांश 22 से 27 में म.प्र., छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखण्ड में भारी वायु वेग एवं बिजली प्रकोप के साथ बारिश के योग।

जुलाई- 4 से 9 तथा 13 से 14 एवं 19 से 25, 28, 29, 30 पुर्नवश पुष्य नक्षत्र कालांश पूर्वोत्तर में बाढ़ म.प्र. राजस्थान बिहार में बिजली वायु प्रकोप से हानि।

अगस्त - तारीख 2 से 6 शुक्र अस्त कालांश तथा 9 से 15 एवं 19 से 22 शुक्र उदय कालांश 22 से 25, 28, 30 को यह अश्लेषा, मघा, नक्षत्र कालांश रहेगा। सर्वत्र श्रेष्ठ बारिश कहीं-कहीं अत्यधिक बारिश से हानि ।

सितम्बर - तारीख 2 से 6 एवं 10 से 15 तथा 21 से 26 म.प्र. गोवा महाराष्ट्र में अच्छी बारिश पूर्वा फाल्गुनि, उत्तरा फाल्गुनि नक्षत्र कालांश ।

अक्टूबर - तारीख 1 से 5, 8 से 14 हस्त नक्षत्र कालांश बूंदा-बांदी एवं 18 से 25 वायु बादल चाल खण्ड वृष्टि के योग।

नवम्बर - 7 से 10, 18 से 22 तथा 29, 30 बूंदा बांदी उत्तर भारत में शीत प्रकोप

दिसम्बर - तारीख 2 से 8 तथा 12 से 15 एवं 20 से 23 हिम वर्षा ओला वृद्धि वायु वेग के योग पर्वतीय भू-भाग पर अत्याधिक मवाठा धूंध से जनजीवन प्रभावित रहेगा।

राशि संचरण- गुरु, शनि, राहू-केतु सन 2024 ई.

गुरु - वैशाख कृष्ण 13 सोमवार अर्थात 6 मई 2024 को गुरु पश्चिम दिशा में अस्त होंगे। ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार को अर्थात 6 जून 2024 को गुरु पूर्व दिशा में उदय होंगे।

शुक्र - वैशाख कृष्ण 6 सोमवार को अर्थात 29 अप्रैल 2024 को शुक्र पूर्व दिशा में अस्त होंगे। वहीं आषाढ़ कृष्ण 7 शुक्रवार को (28 जून 2024 को शुक्र पश्चिम में उदय होंगे। तथा चैत्र कृष्ण 5 बुधवार 19 मार्च 2025 को शुक्र पश्चिम दिशा में अस्त होंगे। तथा चैत्रकृष्ण 8 शनिवार को 23 मार्च 2025 को शुक्र पूर्व दिशा में उदित होंगे।

शनि- वर्ष के आरंभ में शतभिषा 3 चरण तथा कुंभ राशि पर। आषाढ़ कृष्ण 10 सोमवार को वक्री होंगे। कार्तिक शुक्ल 3 सोमवार को मार्गी होंगे। वर्ष के अंत में पूर्वाभाद्रपद 2 चरण तथा कुंभ राशिमें रहेंगे।

राहु - वर्ष के आरंभ में रेवती 2 चरण तथा मीन राशि में राहु हस्त 4 चरण तथा कन्यारशि में केतु। आषाढ़ कृष्ण 30 शुक्रवार को उत्तराभाद्रपद 4 चरण में राहु हस्त 2 चरण में केतु। वर्ष के अंत में पूर्वाभाद्रपद 4 चरण में राहु उत्तराफाल्गुनी 2 चरण में केतु।

विवाह - चैत्र शुक्ल, वैशाख शुक्ल, आषाढ़ शुक्ल, मार्गशीष, माघ तथा फाल्गुन में होंगे।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 अक्टूबर की

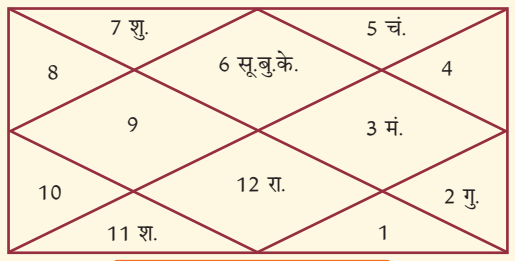

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- कन्या में, ता. 17 को 9:54 रात से तुला में। **मंगल** - मिथुन में, ता. 20 को 11:14 रात से कर्क में। **बुध** - कन्या में, ता. 10 को 3:27 रात से तुला में। ता. 29 को 3:41 रात से वृश्चिक में। **गुरु**- वृष में, ता. 9 को 8:30 रात से वक्री, **शुक्र**- तुला में, ता. 12 को 8:16 दिन से वृश्चिक में। **शनि**- कुंभ में वक्री, **राहू**- मीन में, **केतु**- कन्या में।

मूल ता. 7 को 11।30 रात से ता. 9 को 1।14 रात तक। ता. 16 को 6।54 सायं से ता. 18 को 3।38 दिन तक। ता. 25 को 12।3 दिन. से ता. 27 को 2।54 दिन तक।

गुरु पूर्व दिशा में उदित, शुक्र पश्चिम दिशा में उदित

सूर्य दक्षिणायन

शरद ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 18 अक्टूबर की

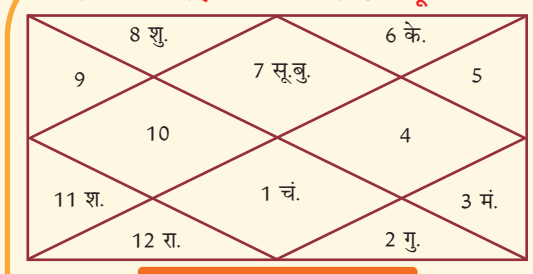

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा सिंह राशि का, ता. 1 को 4।26 बजे दिन से कन्या का। ता. 3 को 4।12 बजे रात से तुला का। ता. 6 को 3।24 बजे दिन से वृश्चिक का। ता. 8 को 12।36 बजे रात से धनु का। ता. 11 को 7।27 बजे प्रातः से मकर का। ता. 13 को 11।59 बजे दिन से कुंभ का। ता. 15 को 2।59 बजे दिन से मीन का। ता. 17 को 5।15 बजे सायं से मेष का। ता. 19 को 7।53 बजे रात से वृष का। ता. 21 को 11।35 बजे रात से मिथुन का। ता. 23 को 5।11 बजे रात अंत से कर्क का। ता. 26 को 1।17 बजे दिन से सिंह का। ता. 28 को 11।38 बजे रात से कन्या का। ता. 31 को 11।22 बजे दिन से तुला राशि का चंद्रमा रहेगा।

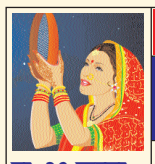

ता. 20 करवा चौथ
कार्तिक कृ. 4 को किया जाने वाला यह व्रत गौरी-गणेश तथा चंद्रमा को समर्पित निर्जला व्रत है। इस दिन सुहागिनें चंद्रमा के दर्शन, पूजा करके अपने पति की भी पूजा करती हैं।

ता. 31 दीपावली
कार्तिक अमावस्या के दिन लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है। उजाले का यह पर्व अंधेरे को नष्ट करके हमको सुख समृद्धि देने वाला है।

शिव वास अग्नि वास

इस माह तारीख 2, 7, 11, 14, 18, 22, 29 को शिववास एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	14	8।36	रात	आश्विन कृष्णपक्ष
2	30	10।36	रात	
3	1	12।41	रात	आश्विन शुक्लपक्ष
4	2	2।41	रात	
5	3	4।25	रात	
6	4	5।47	रात	
7	5	दिन	रात	
8	5	6।48	प्रात:	
9	6	7।6	प्रात:	
10	7	6।59	प्रात:	
11	8 9	6।22	प्रात:	
12	10	3।50	रात	
13	11	2।1	रात	
14	12	11।57	रात	
15	13	9।42	रात	
16	14	7।21	रात	
17	15	4।57	सायं	
18	1	2।36	दिन	कार्तिक कृष्णपक्ष
19	2	12।23	दिन	
20	3	10।21	दिन	
21	4	8।36	प्रात:	
22	5 6	7।13	प्रात:	
23	7	5।42	रात	
24	8	5।42	रात	
25	9	6।13	रात	
26	10	दिन	रात	
27	10	7।13	प्रात:	
28	11	8।42	प्रात:	
29	12	10।31	दिन	
30	13	12।34	दिन	
31	14	2।42	दिन	

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

अक्टूबर 2024

संवत् 2081
आश्विन-कार्तिक मास

वार					
SUNDAY रवि	**भद्रा** ता. 6 को 5।9 बजे सायं से 5।41 बजे रात्रि अंत ता. 10 को 6।59 बजे प्रातः से 6।42 बजे सायं ता. 13 को 2।59 बजे दिन से 2।1 बजे रात्रि ता. 16 को 7।21 बजे रात्रि से 6।10 बजे रात्रि अंत। ता. 19 को 11।23 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 20 को सूर्योदय से 10।21 बजे दिन ता. 23 ($)	गणेश चतुर्थी व्रतं विशाखा 9।48 रात **6** उत्पात योग आश्विन शुक्ल 4	पापांकुशा एकादशी सर्वे. धनिष्ठा 11।21 रात **13** मातंग योग, पंचक प्रा. आश्विन शुक्ल 11	गणेश चतुर्थी कृतिका 12।53 दिन **20** करवा चौथ, चंद्रोदय 8।10 रात्रि कार्तिक कृष्ण 3	मघा 2।54 दिन **27** मुद्गर योग कार्तिक कृष्ण 10
MONDAY सोम		उपांग ललिता व्रतं अनुराधा 11।30 रात **7** मानस योग आश्विन शुक्ल 5	पद्मनाभ द्वादशी शतभिषा 10।2 रात **14** पंचक, अमृत योग आश्विन शुक्ल 12	रोहिणी 11।53 दिन **21** प्रवर्धमान योग कार्तिक कृष्ण 4	एकादशी व्रतं पूर्वा फा. 5।00 सायं **28** गोवत्स द्वादशी कार्तिक कृष्ण 11
TUESDAY मंगल	शस्त्राघात मृतक श्राद्ध पूर्वा फा. 9।46 दिन **1** चतुर्दशी श्राद्ध आश्विन कृष्ण 14	वायुसेना दिवस ज्येष्ठा 12।36 रात **8** मुद्गर योग आश्विन शुक्ल 5	प्रदोष व्रतं पूर्व भाद्रपद 8।32 रात **15** पंचक, काण योग आश्विन शुक्ल 13	स्कंध षष्ठी मृगशिर 11।15 दिन **22** कार्तिक कृष्ण 5, 6	प्रदोष व्रतं उत्तरा फा. 7।24 रात **29** धनतेरस यमदीप दान कार्तिक कृष्ण 12
WEDNESDAY बुध	पितृमोक्ष अमावस्या उत्तरा फा. 12।14 दिन **2** अज्ञात तिथि श्राद्ध आश्विन कृष्ण 30	सरस्वती आवाहन मूल 1।14 रात **9** ध्वज योग आश्विन शुक्ल 6	शरद पूर्णिमा व्रतं उत्तर भाद्रपद 6।54 सायं **16** पंचक, लुंबक योग आश्विन शुक्ल 14	आर्द्रा 1।11 दिन **23** मूसल योग कार्तिक कृष्ण 7	रूप चतुर्दशी हस्त 10 रात **30** आनंद योग कार्तिक कृष्ण 13
THURSDAY गुरु	नवरात्र आरंभ हस्त 2।50 दिन **3** घटस्थापन, बैठकी, अग्रसेन जयंती आश्विन शुक्ल 1	निशा पूजा, पर्जन्य सप्तमी पूर्वाषाढ़ 1।23 रात **10** धाता योग आश्विन शुक्ल 7	स्नादान पूर्णिमा रेवती 5।15 सायं **17** वाल्मिकी जयंती, पंचक समाप्त आश्विन शुक्ल 15	अहोई अष्टमी पुनर्वसु 11।15 दिन **24** सिद्धि योग कार्तिक कृष्ण 8	दीपावली, प्रदोषकाल में चित्रा 12।35 रात **31** लक्ष्मी कुबेर पूजा कार्तिक कृष्ण 14
FRIDAY शुक्र	चंद्रदर्शन चित्रा 5।24 सायं **4** मूसल योग आश्विन शुक्ल 2	दुर्गा अष्टमी व्रतं उत्तराषाढ़ 1।12 रात **11** महानवमी व्रतं, ज्वारे वि. आश्विन शुक्ल 8, 9	अशून्य शयन व्रतं अश्विनी 3।38 दिन **18** वज्र योग कार्तिक कृष्ण 1	पुष्य 12।3 दिन **25** उत्पात योग कार्तिक कृष्ण 9	($) को सूर्योदय से 6।01 बजे सायं तक। ता. 26 को 6।10 बजे सायंकाल से रात्रि अंत तक। ता. 27 को सूर्योदय से 7।13 बजे प्रातः ता. 30 को 12।34 बजे दिन से 1।41 बजे रात्रि तक।
SATURDAY शनि	सिद्धी योग स्वाती 7।46 रात **5** रानी दुर्गावती जयंती आश्विन शुक्ल 3	विजया दशमी, दशहरा श्रवण 12।25 रात **12** नवरात्र समाप्त, समी पूजा आश्विन शुक्ल 10	ध्वज योग भरणी 2।9 दिन **19** गुरु रामदास जयंती कार्तिक कृष्ण 2	मानस योग श्लेषा 1।17 दिन **26** गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती कार्तिक कृष्ण 10	**पंचक** ता. 13 11।59 बजे दिन से ता. 17 को 5।15 बजे सायं तक।

मुहूर्त

विवाह- मुहूर्ताभाव
नामकरण-ता. 3, 7, 6, 17, 18, 21, 23
अन्नप्राशन-ता. 4, 6, 17, 18, 21, 23,
नवीन वस्त्र- ता. 11, 13, 17, 18, 30
प्रसूति स्नान- ता. 5, 17, 21, 22
व्यापार आरंभ- ता. 6, 11, 17, 18, 21,
वाहन क्रय- ता. 6, 13, 17, 18, 21
शल्यक्रिया- ता. 8, 17, 22
वाटिका रोपण- ता. 11, 17, 18
औषधि सेवन- ता. ता. 6, 13, 17, 18, 21
सीमांत पुंसवन- ता. 22
यात्रा- ता. 6, 12, 13, 17, 18, 21, 22
धान्य छेदन- ता. 11,, 13, 18, 23, 27
नवान्य भक्षण-ता. 6, 17, 21,
जीर्ण गृह प्रवेश- ता. 28
वस्तु क्रय-ता. 12, 17, 18, 19, 25, 26
शस्त्र निर्माण- ता. 8, 19, 22, 26
पशु क्रय-विक्रय- ता. 17, 18
आभूषण निर्माण - ता. 13, 29,
नव निर्माण- ता. 11, 13, 17, 27
शिल्प विद्या-ता. 6, 11, 17, 18, 21, 28
ईंट भट्टा- ता. 18

ज्योतिष मठ संस्थान से प्रकाशित नवग्रह रहस्यम, कुंभ रहस्यम, श्राद्ध रहस्यम संतान प्राप्ति रहस्यम आदि डाक से घर बैठे प्राप्त करें।मो. 9827322068

राशिफल

मेष - शुभ समाचार, धन लाभ, मतभेद।
वृष- शरीर कष्ट, स्थानांतरण, तनाव।
मिथुन - व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
कर्क - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
सिंह - धन लाभ, सफलता, यर्थ विवाद।
कन्या - रोग, प्रापर्टी से लाभ, पुत्र सुख।
तुला - चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
वृश्चिक - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
धनु - यात्रा कष्ट, पुत्र सुख, भूमि लाभ।
मकर- शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
कुम्भ- श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
मीन- मेहमान आगमन, मतभेद बढ़ेगा।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 1 प्राणनाथ प्रगटन महोत्सव
ता. 2 गांधी-शास्त्री जयंती
ता. 8 वायुसेना दिवस
ता. 10 विश्व मानसिक स्वास्थ्य दि.
ता. 12 साईं बाबा जयंती
ता. 15 डॉ. एपीजे अब्दुल जयंती
ता. 17 वाल्मिकी जयंती
ता. 31 सरदार वल्लभाई पटेल जयंती

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 2 को 12।11 बजे दिन से रातअंत तक। ता 5 को सूर्योदय से 7।46 बजे रात्रि तक। ता 7 को सूर्योदय से 11। 30 बजे रात्रि तक। ता 11 को 1।12 बजे रात से रातअंत तक। ता 12 को सूर्योदय से 12।25 बजे रातअंत तक। ता 15 को 8।32 बजे रात्रि से रातअंत तक। ता 17 को सूर्योदय से 5।15 बजे सायं तक। ता 18 को सूर्योदय से 3।38 बजे दिन तक। ता 21 को सूर्योदय से 11।57 बजे दिन तक। ता 24 को सूर्योदय से 11।15 बजे दिन तक। ता 30 को सूर्योदय से 10।0 बजे रात्रि तक।

अमृतसिद्धि योग- ता 21 को 11।53 बजे दिन से रातअंत तक। ता 24 को 11।15 बजे दिन से रातअंत तक। **रवियोग**- ता 5 को रात्रि 7।46 बजे से रात्रिअंत ता 6 को सूर्योदय से रात्रि 9।48 बजे तक। ता 7 को रात्रि 11।30 बजे से रात्रिअंत ता 8 को सूर्योदय से रात्रि 12।36 बजे तक। ता 10 को रात्रि 1।23 बजे से रात्रिअंत ता 11 को रात्रि 1।12 बजे से रात्रिअंत ता 12 को सूर्योदय से रात्रिअंत ता 13 को सूर्योदय से रात्रि 11।21 बजे तक। ता 15 को रात्रि 8।32 बजे से रात्रिअंत ता 16 को सूर्योदय से सायं 6।54 बजे तक। ता 22 को दिन 11।15 बजे से रात्रिअंत ता 23 को सूर्योदय से दिन 11।01 बजे तक। **त्रिपुष्कर योग** - ता. 29 को सूर्योदय से 10।31 दिन तक।
गुरु पुष्य योग - ता. 24 को 11।11 दिन से

भोपाल

	ता.					
सूर्योदय	ता.	1-6.05	7-6.10	13-1.13	19-6.17	25-6.21	30-6.24
सूर्यास्त	ता.	1-5.55	7-5.50	13-5.47	19-5.43	25-5.39	30-5.36

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 2 स्नानदान पितृमोक्ष अमावस्या
ता. 3 शारदीय नवरात्रि, घटस्थापना
ता. 6 वैनायकी चतुर्थी व्रतं
ता. 7 उपांग ललिता व्रतं
ता. 10 पर्जन्य सप्तमी, सरस्वती पूजन
ता. 11 दुर्गा महा अष्टमी पूजा
दुर्गा महा नवमी पूजा
ता. 12 दशहरा, नीलकण्ठ दर्शन
ता. 13 पापांकुशा एकादशी व्रतं
ता. 15 प्रदोष व्रतं
ता. 16 शरद पूर्णिमा व्रतं, कोजागरी
ता. 17 स्नानदान व्रत प्रारम्भ

ता. 20 गणेश चतुर्थी, करवा चौथ व्रतं
ता. 22 स्कंध षष्ठी
ता. 24 अहोई अष्टमी व्रतं
ता. 28 रंभा एकादशी व्रतं, गोवत्स द्वादशी
ता. 29 धनतेरस, प्रदोष व्रतं
ता. 30 रूप-नरक एवं शिव चतुर्दशी
ता. 31 दीपावली पूजा प्रदोषकाल

जैन व्रत पर्व

ता. 16 आचार्य विद्यासागर जन्मदिन
ता. 31 रोहिणी व्रत
ता. 10 से 17 नवप्रद ओली
ता. 1, 16, 31 पाक्षिक प्रतिक्रमण

तुला संक्रांति फलं

ता. 17 को 9:54 रात में सूर्यदेव का तुला राशि में आगमन होगा। इससे मंदा संज्ञक संक्रांति का आगमन होगा। यह क्रांति व्याघ्र वाहन एवं अश्व उपवाहन पर सवार होकर पीत वस्त्र धारण करके खीर भक्षण करती हुई बाल्यावस्था की बैठी हुई स्थिति में आ रही है। संक्रांति के प्रभाव से वैज्ञान, लेखकों, बुद्धिजीवियों को सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। अन्य के भाव स्थिर सूचक तथा सोना-चांदी में तेजी हो सकती है।

मास फल

इस माह कन्या राशि में सूर्य चंद्र बुध केतु का चतुर्ग्रही योग देश-दुनिया को प्रभावित करेगा। इस योग के प्रभाव से अशांति तनाव एवं युद्धादि जैसी स्थितियां निर्मित हो सकती हैं। गुरु शुक्र का राशि परिवर्तन सामाजिक सौहाद्रता बिगाड़ सकता है। राहु एवं मंगल का दशम चतुर्थ संबंध पश्चिम देशों के राष्ट्रों को संकट में डाल सकता है। पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से जनजीवन प्रभावित होगा। पूर्वोत्तर भागों में तूफान से जनधन की हानि संभव है। उत्तरी क्षेत्रों में तापमान में गिरावट आएगी।

ज्योतीषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम

ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

रेखा सह शुद्ध विवाह मुहूर्त संवत 2081 सन 2024-25 ई.

डॉ. प्रकाश गौतम
तकनीकी सहा. जलग्रहण जिला पंचायत दमोह
मो. 9589271127

शुद्ध मुहूर्तकाल में किया गया कार्य हमेशा सफलताकारी होता है। जो विवाह योग नीचे दिए हुए हैं ये विवाह मुहूर्त पंचांग के आधार पर नक्षत्र एवं समयशुद्धि के आधार पर दिए गए हैं। फिर भी विद्वान आचार्यगणों से निवेदन है कि वे मुहूर्तों में दस दोषों का निराकरण तथा दान आदि कार्य पूर्ण कर शुद्ध विवाह मुहूर्त हेतु लग्न का निर्माण करें। शुद्ध लग्न में विवाहादि मांगलिक कृत्य होने से वर-वधु के बीच आपसी तालमेल अच्छा तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय रहता है।

पौष शुक्ल पक्ष मकरार्के मेषे गुरौ (जनवरी 2024)

पौष शुक्ल 11 रवौ रोहिण्यां रे. 7 ल. 8 रविवेध परिहार (7 जनवरी से प्रारंभ)
पौष शुक्ल 12 चंद्रे मृगाशिरायां रे. 8 लग्न गोधूलि 7, 8, च

माघ कृष्ण पक्ष मकरार्के मेषे गुरौ

माघ कृष्ण 2 शनौ मघायां रे. 9 ल . गोधूलि 7 , 8 च सूर्य परिवार
माघ कृष्ण 4 चंद्रे उत्तराफाल्गुन्यां रे. 8 ल. गोधूलि 7, 8 चं
माघ कृष्ण 5 भौमे उत्तराफाल्गुन्यां रे. 8 लग्न गोधूलि राहुवेध परिहार
माघ कृष्ण 5 भौमे हस्ते रे. 10 ल. 7, 8. च
माघ कृष्ण 5 बुधे हस्ते रे . 10 लग्न गोधूलि
माघ कृष्ण 6 गुरौ स्वाते रे. 7 भद्रा उपरान्त ल. 8 शनिवेध परिहार
माघ कृष्ण 7 शुक्रे स्वाते रे. 7 गोधूलि लग्न तदाग्रे मृत्युबाण
माघ कृष्ण 9 रवौ अनुराधायां रे. 9 ल. गोधूलि 7 च
माघ कृष्ण 11 भौमे मूले रे. 9. ल. 7, 8 दग्धा परिहार
माघ कृष्ण 13 गुरौ उत्तराषाढ़ायां निर्बल चंद्र दोष प्रारंभ

माघ शुक्ल पक्ष मकरार्के मेषे गुरौ

माघ शुक्ल 3 चंद्रे उत्तराभाद्रपदे संक्रांति दिवस दोष

माघ शुक्ल पक्ष कुंभार्के मेषे गुरौ

माघ शुक्ल 5 बुधे रेवत्यां लग्वाभाव राहु युतिश्च
माघ शुक्ल 8 शनौ रोहिण्यां वैधृतिदोष भौम वेध च
माघ शुक्ल 9 रवौ मृगशिराभे रे. 9 ल. गोधूलि 8, 9 च
माघ शुक्ल 10 चंद्रे मृगशिराभे लग्नाभाव
माघ शुक्ल 14 शुक्रे मघायां मृत्युबाण दोष भद्रा च भौम वेध च
माघ शुक्ल 15 शनौ मघायां गोधूलि लग्न

फाल्गुन कृष्ण पक्ष कुंभार्के मेषे गुरौ

फाल्गुन कृष्ण 1 रवौ उत्तराफाल्गुन्यां रे 8 ल. 8, 9 राहुवेध परि
फाल्गुन कृष्ण 2 चंद्रे उत्तराफाल्गुन्यां रे. 8 लग्न गोधूलि 8 च राहवेध परिहार
फाल्गुन कृष्ण 2 चंद्रे हस्ते रे. 9 ल. 9
फाल्गुन कृष्ण 3 भौमे हस्ते रे. 8 ल. 1, 9
फाल्गुन कृष्ण 5 गुरौ स्वाते रे. 9 ल. 1, गोधूलि 8, 9 सूर्य शनि बुध वेध परिहार
फाल्गुन कृष्ण 6 शुक्रे स्वाते रे. 9 लग्नाभाव
फाल्गुन कृष्ण 7 शनौ अनुराधायां रे. 8. ल. 7, 9 गुरवेध परिहार
फाल्गुन कृष्ण 8 रवौ अनुराधायां रे. 9 ल. 1
फाल्गुन कृष्ण 9 चंद्रे मूले रे. 7 ल. गोधूलि 7, 8 च
फाल्गुन कृष्ण 10 भौमे मूले रे. 9 ल. 1 व्यतिपात पूर्व
फाल्गुन कृष्ण 11 बुधे उत्तराषाढ़ायां रे. 10 ल. 1, 7, 8, 9
फाल्गुन कृष्ण 12 गुरौ उत्तराषाढ़ायां परिधदोषकाल तदाग्रे निर्बल चंद्र दिवस

फाल्गुन शुक्ल पक्ष कुंभार्के मेषे गुरौ

फाल्गुन शुक्ल 1 चंद्रे उत्तराभाद्रपदे रे. 9 ल. 3 प्रतिपदा उपरांत
फाल्गुन शुक्ल 2 बुधे रेवत्यां रे. 8 ल. 1, 3 तदाग्रे होलाष्टक प्रारंभ

चैत्र मासे मेषार्के मेषे गुरौ

चैत्र शुक्ल 10 गुरौ भद्रायां दिवा लग्न 3 गोधूलि, लग्न 9
चैत्र शुक्ल 11 शुक्रे मघायां भद्रादोष
चैत्र शुक्ल 12 शनौ उत्तराफाल्यगुंयां राहुवेधदोष
चैत्र शुक्ल 13 रवौ हस्ते रे. 8 लग्न 9, 10 केतुयुति परिहार
चैत्र शुक्ल 14 चंद्रे हस्ते रिक्तातिथि दोषः
चैत्र शुक्ल 15 भौमे स्वातों शनिवेधः

वैशाख मासे मेषार्के मेषे गुरौ

वैशाख कृष्ण 1 बुधौ स्वाते शनिवेध दोषः
वैशाख कृष्ण 2 शुक्रे अनुराधायां रे 9 लग्न 2, गोधूलि च
वैशाख कृष्ण 4 रवौ मूले रे. 9 लग्न गोधूलि लग्न 8, 10
वैशाख कृष्ण 7 भौमे उषा रे 8, लग्न 8 तदग्रे शुक्र-गुरु अस्तकालांश
आषाढ़ मासे मिथुनार्के वृषे गुरौ
आषाढ़ कृष्ण 12 बुध लग्नाभाव
आषाढ़ कृष्ण 14 गुरौ भद्रा निर्बल चंद्रश्च दोषाः

आषाढ़ शुक्ल 4 भौमे मघायां रे. 10 भद्रापूर्व गोधूलि लग्न
आषाढ़ शुक्ल 5 गुरौ उत्तराफाल्गुन्यां रे. 9, लग्न गोधूलि, लग्न 2 च
आषाढ़ शुक्ल 6 शुक्रे हस्ते राहुवेधः
आषाढ़ शुक्ल 7 शनौ हस्ते राहुवेधः भद्राश्चदोषः
आषाढ़ शुक्ल 8 रवौ स्वाते मृत्युबाण दोषः
आषाढ़ शुक्ल 9 चंद्रे स्वाते मृत्युबाण दोषः
आषाढ़ शुक्ल 10 भौमे अनुराधायां भद्रा संक्रांति दिवस च दोषः
तदाग्रे देवशयनकालांशः

कार्तिक मासे वृश्चिकार्के वृषे गुरौ

कार्तिक शुक्ल 11 भौमे उत्तराभाद्रपदे-रेवत्यां राहुयुति लग्नाभाव च
कार्तिक शुक्ल 12 बुधे रेवत्यां केतुवेध दोषः

मार्गशीर्ष मासे वृश्चिकार्के वृषे गुरौ

मार्गशीर्ष कृष्ण 2 रवौ रोहिण्यां लग्नाभाव मृगशिरायां मृत्युबाण
मार्गशीर्ष कृष्ण 3 चंद्रे मृगशिरे भद्रला मृत्यु बाणश्च दोषाः
मार्गशीर्ष कृष्ण 7 शुक्रे मघायां लग्नाभाव
मार्गशीर्ष कृष्ण 8 शनौ मघायां लग्नभाव
मार्गशीर्ष कृष्ण 9 रवौ उत्तराफाल्गुन्यां लग्नाभाव
मार्गशीर्ष कृष्ण 10 चंद्रे उत्तराफाल्गुन्यां लग्नाभाव केतुयुति च
मार्गशीर्ष कृष्ण 11 भौमे हस्ते राहुवेध मृत्युबाण च
मार्गशीर्ष शुक्ल 1 चंद्रे मूले लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शुक्ल 2 भौमे मूले लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शुक्ल 3 बुधे उत्तराषाढ़ायां लग्नाभाव भद्राश्च
मार्गशीर्ष शुक्ल 4 गुरौ उत्तराषाढ़ायां लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शुक्ल 9 चंद्रे उत्तराभाद्रपदे राहुयुति दोष
मार्गशीर्ष शुक्ल 10 भौमे उत्तराभाद्रपदे व्यतिपात राहुयुति च
मार्गशीर्ष शुक्ल 10 भौमे रेवत्यां लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधे रेवत्यां लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शुक्ल 14 शनौ रोहिण्यां मृत्युबाण भद्राश्च दोषाः
मार्गशीर्ष शुक्ल 15 रवौ मृगशिरे रे. 8 लग्न गोधूलि

माघ मासे मकरार्के वृषे गुरौ (16 जनवरी 2025)

माघ कृष्ण 3 गुरौ मघायां भद्रादोषः
माघ कृष्ण 4 शुक्रे मघायां लग्नाभाव
माघ कृष्ण 5 शनौ उत्तराफाल्गुन्यां रे. 9, ल. 8 केतुयुति परिहार
माघ कृष्ण 5 रवौ हस्ते राहुवेध
माघ कृष्ण 6 चंद्रे हस्ते राहुवेध
माघ कृष्ण 7 भौमे स्वाते शनिवेध
माघ कृष्ण 8 बुधे स्वाते शनिवेध
माघ कृष्ण 10 शुक्रे स्वाते अनुराधायां भद्रा तत्पश्चात् लग्नाभाव
माघ कृष्ण 12 रवौ मूले निर्बल चंद्रदोष लग्नाभाव च
माघ कृष्ण 13 चंद्रे मूले लग्नाभाव
माघ शुक्ल 4 रवौ उत्तराभाद्रपदे राहुयुति
माघ शुक्ल 5 चंद्रे रेवत्यां केतुवेध
माघ शुक्ल 10 शुक्रे रोहिण्यां लग्नाभाव
माघ शुक्ल 10 शुक्रे मृगशिरे वैधृतिदोषः
माघ शुक्ल 11 शनौ मृगशिरे वैधृति विषकुंभ दोषः
माघ शुक्ल 15 बुधे मघायां संक्रांति दिवस दोषः

फाल्गुन मासे कुंभार्के वृषे गुरौ

फाल्गुन कृष्ण 1 गुरौ मघायां रे. 9 लग्न 1, 4
फाल्गुन कृष्ण 2 शुक्रे उत्तराफाल्गुन्यां रे. 7. लग्न 10 केतुयुति परिहार
फाल्गुन कृष्ण 3 शनौ उत्तराफाल्गुन्यां रे. 7 लग्न 1 भद्रापूर्व
फाल्गुन कृष्ण 4 रवौ हस्ते राहुवेधः
फाल्गुन कृष्ण 6 भौमे स्वाते रे. 8 लग्न 1 गोधूलि, लग्न 10 च
फाल्गुन कृष्ण 7 गुरौ अनुराधायां रे. 10 गोधूलि लग्न 10 च
फाल्गुन कृष्ण 8 शुक्रे अनुराधायां रे. 8 लग्न 1
फाल्गुन कृष्ण 9 शनौ मूले भौमवेध
फाल्गुन कृष्ण 10 रवौ मूले भद्रादोषः
फाल्गुन कृष्ण 12 भौमे उत्तराषाढ़ायां निर्बल चंद्र दोषः
फाल्गुन शुक्ल 2 शनौ उत्तराफाल्गुन्यां राहुयुति दोषः
फाल्गुन शुक्ल 3 रवौ रेवत्यां केतुबेधः
फाल्गुन शुक्ल 7 गुरौ रोहिण्यां भद्रा
तदाग्रे होलाष्टक प्रारंभ।

इति विवाह मुहूर्ताः

अनिष्ट ग्रहों की शांति हेतु दान-दक्षिणा

सूर्यदान	चन्द्रदान	भौमदान	बुधदान	गुरुदान	शुक्रदान	शनिदान	राहुदान	केतुदान	मुन्थादान
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम, पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीत धान्य	श्वेतचावल	माषान्न तैल	हेमनाग	उड़द	तण्डुल
गोधूम, गुड़	श्वेतचावल	मसूर द्विदल	हरित वस्त्र	पीतवस्त्र-स्वर्ण	श्वेत चंदन	नीलम, तिल	सप्तधान्य	कंबल, कस्तुरी	सुवर्ण
सवत्सा गौ	श्वेत वस्त्र	गोधूम	गजदंत, घृत	घृत, पीतपुष्प	श्वेत, चित्रवस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नीलवस्त्र, गोमेद	वैदूर्यमणि	कांस्य
कमलपुष्प	श्वेत चंदन	रक्त वृषभ	मुद, पन्ना	पीत फल	श्वेत पुष्प	कुलथी, लोहा	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प	श्वेतवस्त्र
नूतन गृह	श्वेत पुष्प	गुड़, रक्तचंदन	सुवर्ण, दासी	पुखराज	रजत हीरा	महिषी	खड्ग, तिल	तिल, तेल	वर्ण
रक्त चंदन	चीनी, रजत	रक्त वस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा, अश्व	घृत, सुवर्ण	कृष्ण धेनु	तेल, लोहा	रत्न, सुवर्ण	दक्षिणा
रक्त वस्त्र	वृषभ, घृत	रक्त पुष्प	कपूर, शंख	पुस्तक, मधु	श्वेताश्व, दधि	कृष्ण पुष्प	शुर्प, कम्बल	लोहा बकर	
सुवर्ण, ताम्र	शंख, दधि	सुवर्ण, ताम्र	अनेक फल	लवण, शर्करा	गुगंध द्रव्य	उपानह	तिल, ताम्रपात्र	शस्त्र	स्वामित्व
केशर, मुंगा	मोती, कपूर	केशर कस्तुरी	षट्रस भोजन	भूमि, छत्र	शर्करा, गोधूम	सुवर्ण	सुवर्ण, रत्न	सप्तधान्य	
वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	वर्ण-दक्षिणा	

ग्रहों के बीजोक्त मंत्र एवं राशिगत संचार फल, जप संख्या

ग्रह	मंत्र	स्थिति	फल देने का समय	जप संख्या
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सः सूर्याय स्वाहाः।।	एक माह	प्रथम पांच दिन	7000
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रूं सः चन्द्राय स्वाहाः।।	2। दिन	अंतिम तीन घटी	11000
भौम	ॐ क्रा क्रीं क्रूं सः भौमाय स्वाहाः।।	1।। माह	प्रथम आठ दिन	10000
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं सः बुधाय स्वाहाः।।	1 माह	सर्वकाल	9000
गुरु	ॐ ज्रां ज्रीं ज्रूं सः जीवाय स्वाहाः।।	13 माह	मध्यकाल के दो माह	19000
शुक्र	ॐ आं ई ऊँ सः शुक्राय स्वाहाः।।	1 माह	मध्य सात दिन	16000
शनि	ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं सः मन्दाय स्वाहाः।।	30 माह	अंतिम छह माह	23000
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं सः राहवे स्वाहाः।।	18 माह	अंतिम दो माह	18000
केतु	ॐ क्लां क्लीं क्लूं सः केतवे स्वाहाः।।	18 माह	अंतिम दो माह	17000

दान दानदाता तथा ग्रहिता की दिशा-दान देते समय दान देने वाले का मुंह पूर्व दिशा की ओर तथा दान ग्रहण करने वाले ब्राह्मण का मुंह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। **दशमहादान** - गाय, भूमि, तिल, स्वर्ण, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चांदी, नमक। यह दान पितरों के निमित्त दिया जाता है। किसी कारण मृत्यु के समय न दिया जा सके तो एकादशाह अथवा द्वादशाह कर्म के दिन करना चाहिए। अष्ट महादान - तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, सप्तधान्य, भूमि, गौ।

नवग्रहों के प्रभाव से होने वाले रोग

श्रीमती रजनी निखिल
ज्योतिषाचार्य, तंत्रज्ञ, भोपाल
मोबाइल नं. 8305704084

सूर्य के प्रभाव से होने वाले रोग-जब सूर्य रोग कारक होता है तो निम्न रोगों की संभावना होती है- पित्त, उष्णज्वर, शरीर में जलन, अपस्मार, हृदयरोग, नेत्ररोग, चर्मरोग, रक्ताल्पता, पीलिया, लीवर, हैजा, शिरोव्रण, विषज, व्याधियां दहाज्वर आदि हैं।

चंद्रमा के प्रभाव से होने वाले रोग-मूत्राशय-संबंधी रोग, मधुमेह, अतिसार, अनिद्रा, नेत्र रोग, विक्षिप्तता, पीलिया, मानसिक, थकान, शीत ज्वर, अरुचि, अन्दाग्नि, सूखी खांसी, कुक्कुर खांसी, दमा, श्वास रोग आदि। इसके लिए मोती धारण करना लाभदायी है।

मंगल के प्रभाव से होने वाले रोग- रक्तप्रवाह, रक्तातिसार, जल जाना, रक्तचाप, दुर्घटना, रक्तविकार, चर्म रोग (दाद, खाज, खुजली), बवासीर, कुष्ठ, फोड़ा-फुंसी, हड्डी का टूटना, पित्त, ज्वर गुल्म आदि।

बुध के प्रभाव से होने वाले रोग- मूक-बधिरता, नपुंसकता, अजीर्ण, शक्तिहीनता, अमाशय की गड़बड़ी, वायुजन्य पीड़ा, हृदयगति रुकना, सन्निपात, भ्रांति, गले या नासिका के रोग, उन्माद, जिह्वा रोग, मिर्गी आदि।

गुरु के प्रभाव से होने वाले रोग- गले की तकलीफ, श्वास कष्ट, कफ, अतिसार, लीवर संबंधी कष्ट, पक्षाघात, गठिया, वात व्याधियां, आमवात, मूर्छा, कान के रोग, राजयक्ष्मा आदि।

शुक्र के प्रभाव से होने वाले रोग- वीर्यदोष, नेत्र रोग, (पानी गिरना, जाला, मोतियाबिन्द, धुंध आदि), हिस्टिरिया, कुंठित बुद्धि, सर्वांग शोथ, मधुमेह, प्रदररोग, गुदा अथवा इंद्रिय रोग, प्रमेह, सुजाक, गर्भाशय-संबंधी रोग, अंडकोश वृद्धि, मूत्र रोग, धातु का जाना, नासूर, नपुंसकता, गोनोरिया, हार्निया आदि।

शनि के प्रभाव से होने वाले रोग- पक्षाघात, हाथ-पैर या शरीर का कम्पन, मिर्गी, मानसिक या स्नायु संबंधी रोग, गठिया, कैंसर, वातोदर, राजयक्ष्म, विषबाधा, सूजन, उदरशूल, बार-बार आपरेशन होना, प्लोहीदर, कृमि रोग आदि।

राहु के प्रभाव से होने वाले रोग- मस्तिष्क रोज, कब्ज, अतिसार, भूत-प्रेत का भय, चेचक, कुष्ठ रोग, कैंसर, गठिया, वायु विकार, हृदय रोग, रीढ़ की हड्डी का टूटना, त्वचा रोग आदि।

केतु के प्रभाव से होने वाले रोग- रक्ताल्पता, जल जाना, कैंसर, हैजा, निमोनिया, दमा, त्वचा या मूत्र रोग, प्रसवपीड़ा, छूत की बीमारी, पित्तरोग, बवासीर आदि।

पाँच अबूझ मुहूर्त

बसंत पंचमी, रामनवमी, अक्षय तृतीया, गंगा दशहरा, भड़ली नवमी।

साढ़े तीन सिद्ध मुहूर्त : चैत्र शुक्ल प्रतिपद्रा गुड़ी पड़वा, आश्विन शुक्ल विजया दशमी, कार्तिक शुक्ल प्रतिपद्रा (अर्धवली), देव उठनी ग्यारस ये साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त है इन मुहूर्तों मे किसी भी शुभ कार्य को प्रारंभ करने के लिये पंचाग शुद्धि की जरुरत नहीं है। प्रतिदिन के मुहूर्तों में ब्रह्म मुहूर्त प्रातःकाल अभिजीत मुहूर्त दोपहर काल गोधूलि वेला संध्याकाल एवं महानिशाकाल अर्धरात्रिकाल का समय सभी कार्यों के लिए प्रशस्त माना गया है।

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 नवंबर की

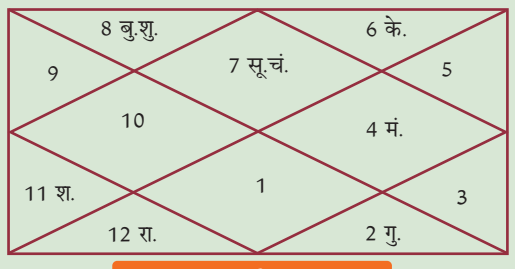

8 बु.शु.	7 सू.चं.	6 के.
9	10	5
4 मं.	1	3
11 श.	12 रा.	2 गु.

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य - सूर्य- तुला में, ता. 16 को 7:28 रात से वृश्चिक में। **मंगल**- कर्क में, **बुध** - वृश्चिक में ता. 26 को 7:30 रात से वक्री, **गुरु**- वृष में वक्री, **शुक्र**- वृश्चिक में, ता. 6 को 12:8 दिन से धनु में। **शनि** - कुंभ में क्री ता. 16 को 10:35 दिन से मार्गी, **राहू**- मीन में, **केतु**- कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 3 को दिनरात से ता. 4 को 6।55 प्रातः से ता. 6 को 8।56 दिन तक। ता. 12 को 3।6 रात से ता. 14 को 11।48 रात तक। ता. 21 को 7।35 रात से ता. 23 को 10।16 रात तक।

गुरु पूर्व में उदित, शुक्र पश्चिम में उदित

सूर्य दक्षिणायन

शरद ऋतु
17 से हेमंत ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 17 नवंबर की

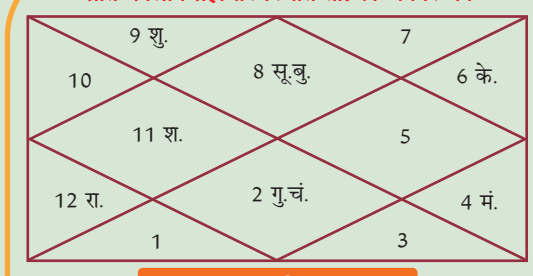

9 शु.	8 सू.बु.	7
10	11 श.	6 के.
5	2 गु.चं.	4 मं.
12 रा.	1	3

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा तुला राशि का, ता. 2 को 10।43 बजे रात से वृश्चिक का। ता. 5 को 8।10 बजे प्रातः से धनु का। ता. 7 को 3।13 बजे दिन से मकर का। ता. 9 को 7।60 बजे रात से कुंभ का। ता. 11 को 11।09 बजे रात से मीन का। ता. 13 को 1।26 बजे रात से मेष का। ता. 15 को 3।59 बजे रात से वृष का। ता. 18 को 7।31 बजे प्रातः से मिथुन का। ता. 20 को 12।56 बजे दिन से कर्क का। ता. 22 को 8।41 बजे रात से सिंह का। ता. 25 को 6।51 बजे प्रातः से कन्या का। ता. 27 को 6।32 बजे सायं से तुला का। ता. 29 को 6।02 बजे रात से वृश्चिक राशि का चंद्रमा रहेगा।

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

नवंबर 2024

संवत् 2081
कार्तिक-मार्गशीर्ष मास

ता. 12 देव प्रबोधिनी एकादशी
कार्तिक शुक्ल एकादशी को भगवान विष्णु क्षीर सागर में शयन के पश्चात जागते हैं। जिसे सनातन धर्म के अनुयायी बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इसी दिन तुलसी विवाह होता है और मांगलिक कार्यक्रम शुरु हो जाते हैं।

ता. 15 गुरु नानक देव जयंती
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को सिख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरुनानक देवजी की जयंती मनाई जाती है।

शिव वास अग्नि वास
इस माह तारीख 3, 6, 11, 14, 16, 19, 23, 27 को शिववास एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

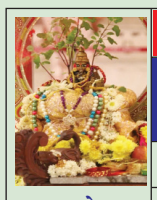

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	30	4।43	सायं	का.कृ.
2	1	6।28	सायं	कार्तिक शुक्लपक्ष
3	2	7।51	रात	
4	3	8।47	रात	
5	4	9।12	रात	
6	5	9।6	रात	
7	6	8।30	रात	
8	7	7।27	रात	
9	8	6।1	सायं	
10	9	4।15	दिन	
11	10	2।13	दिन	
12	11	12।0	दिन	
13	12	9।40	दिन	
14	13 14	7।17	प्रात:	
15	15	2।46	रात	
16	1	12।48	रात	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष
17	2	11।17	रात	
18	3	9।46	रात	
19	4	8।51	रात	
20	5	8।23	रात	
21	6	8।25	रात	
22	7	8।59	रात	
23	8	10।2	रात	
24	9	11।32	रात	
25	10	1।23	रात	
26	11	3।29	रात	
27	12	5।40	रात	
28	13	दिन	रात	
29	13	7।43	प्रात:	
30	14	9।26	दिन	

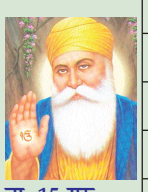

भद्रा

ता. 5 को 9।9 बजे दिन से 9।12 बजे रात्रि ता. 8 को 7।27 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 9 को सूर्योदय से 6।53 बजे प्रातः ता. 11 को 1।10 बजे रात्रि से रात्रिअंत। ता. 12 को सूर्योदय से 12 बजे दिन ता. 15 को सूर्योदय से 3।54 बजे दिन ता. 18 को 10।26 बजे दिन से 9।46 बजे रात्रि ता. 21 को 8।25 बजे रात्रि से ता. 22 को 8।39 बजे दिन तक। ता. 25 को 12।28 बजे दिन से 1।23 बजे रात्रि ता. 29 को 7।43 बजे प्रातः से 8।40 बजे रात्रि तक।

पंचक

तारीख 9 को 7 बजकर 55 मिनिट रात से तारीख 13 को 1 बजकर 26 मिनिट रात तक।

वार					
SUNDAY रवि		3 — यम द्वितीया भाईदोज; कार्तिक शुक्ल 2; अनुराधा दिनरात; चित्रगुप्त पूजा	10 — आवला अक्षय नवमी; कार्तिक शुक्ल 9; धनि, शत 7127 प्रातः; पंचक	17 — मार्गशीर्ष कृष्ण 2; रोहिणी 7155 रात; धाता योग	24 — अंवष्टिका श्राद्ध; मार्गशीर्ष कृष्ण 9; पूर्वा फा. 12116 रात; छत्र योग
MONDAY सोम		4 — मानस योग; कार्तिक शुक्ल 3; अनुराधा 6155 प्रातः; विश्वकर्मा जयंती	11 — अमृत योग; कार्तिक शुक्ल 10; पूर्वा भाद्रपद 4142 रात; पंचक	18 — सौभाग्य सुंदरी व्रतं; मार्गशीर्ष कृष्ण 3; मृगशिर 7111 रात; आनंद योग	25 — मार्गशीर्ष कृष्ण 10; उत्तरा फा. 2136 रात; श्रीवत्स योग
TUESDAY मंगल		5 — गणेश चतुर्थी व्रतं; कार्तिक शुक्ल 4; ज्येष्ठा 8110 दिन; सूर्य षष्ठी व्रतारंभ	12 — देवउठनी ग्यारस; कार्तिक शुक्ल 11; उत्तर भाद्रपद 316 रात; पंचक, तुलसी विवाह	19 — गणेश चतुर्थी व्रतं; मार्गशीर्ष कृष्ण 4; आद्रा 6151 सायं	26 — एकादशी व्रतं सर्वे.; मार्गशीर्ष कृष्ण 11; हस्त 519 रात; संविधान दिवस
WEDNESDAY बुध		6 — पांडव पंचमी; कार्तिक शुक्ल 5; मूल 8156 दिन; ध्वज योग	13 — प्रदोष व्रतं; कार्तिक शुक्ल 12; रेवती 1126 रात; पंचक, चतुर्मास समाप्त	20 — गद योग; मार्गशीर्ष कृष्ण 5; पुनर्वसु 6159 रात; चैतन्य महाप्रभु जयंती	27 — मार्गशीर्ष कृष्ण 12; चित्रा दिनरात; कालदंड योग
THURSDAY गुरु		7 — सूर्य षष्ठी व्रतं; कार्तिक शुक्ल 6; पूर्वाषाढ़ 9112 दिन; जलाराम, छठ, धाता योग	14 — बैकुंठ चतुर्दशी; कार्तिक शुक्ल 13-14; अश्विनी 11148 रात; मानस योग	21 — मार्गशीर्ष कृष्ण 6; पुष्य 7135 रात; शुभ योग	28 — प्रदोष व्रतं; मार्गशीर्ष कृष्ण 13; चित्रा 7148 प्रातः; महात्मा ज्योति बा फुले पुण्यतिथि
FRIDAY शुक्र	1 — स्नानदान श्राद्ध अमावस्या; कार्तिक कृष्ण 30; स्वाती 311 रात; महावीर निर्वाण दिवस	8 — आनंद योग; कार्तिक शुक्ल 7; उत्तराषाढ़ 9 दिन; सहस्त्रबाहु जयंती	15 — कार्तिक पूर्णिमा; कार्तिक शुक्ल 15; भरणी 10117 रात; गुरुनानक देव जयंती	22 — रुखमणि अष्टमी; मार्गशीर्ष कृष्ण 7; श्लेषा 8141 रात; वीरांगना झलकारी जयंती	29 — शिव चतुर्दशी व्रतं; मार्गशीर्ष कृष्ण 13; स्वाती 10116 दिन; गद योग
SATURDAY शनि	2 — गोवर्धनपूजा अन्नकूट; कार्तिक शुक्ल 1; विशाखा 5110 रात; शुभ योग, गोक्रीड़ा	9 — गोपाष्टमी; कार्तिक शुक्ल 8; श्रवण 8124 दिन; पंचक प्रा., सुस्थिर योग	16 — कार्तिक व्रत पारणा; मार्गशीर्ष कृष्ण 1; कृतिका 8159 रात; वृश्चिक संक्रांति	23 — भैरव अष्टमी; मार्गशीर्ष कृष्ण 8; मघा 10116 रात; पद्म योग	30 — श्राद्ध अमावस्या; मार्गशीर्ष कृष्ण 14; विशाखा 12129 दिन; शुभ योग

मुहूर्त

विवाह- ता. 16, 17, 18, 22 से 26
नामकरण- ता. 4, 7, 13, 14, 18, 20, 25, 27, 28 **गृहारंभ**- ता. 18
अन्नप्राशन- ता. 4, 8, 13, 14, 18, 20, 28, 29 **सीमांत पुंसवन**- ता. 17,
नवीन वस्त्र- ता. 3, 8, 17, 20
प्रसूति स्नान- ता. 3, 5, 7, 10, 14, 17, 19, 24 **ईंट भट्टा** - ता. 14
व्यापार आरंभ-ता. 3, 4, 7, 14, 18, 27
वाहन क्रय- ता. ता. 3, 4, 8, 9, 14, 18, 20 ,27 **शल्यक्रिया**- ता.3, 14, 17,
वाटिका रोपण- ता. 3, 7, 8, 14, 17
औषधि सेवन-ता. 3, 4, 14, 17, 18, 20
यात्रा- ता. 3, 4, 8, 14, 17, 18, 20
धान्य छेदन- ता. 7, 8, 11, 15, 18
नवान्य भक्षण-ता. 3, 8, 20, 27
जीर्ण गृह प्रवेश- ता. 7, 8, 27
द्विरागमन ता. 18, 20, 27
वस्तु क्रय-ता. 8, 9, 11, 14, 15, 16, 27
शस्त्र निर्माण- ता. 3, 7, 8
पशु क्रय-विक्रय- ता. 14 20
आभूषण निर्माण ता. 17
नव निर्माण- ता. 16, 23
शिल्प विद्या - ता. 3, 6, 7, 8, 11,

राशिफल

मेष - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
वृष- व्यर्थ की चिंता, सहयोग मिलेगा।
मिथुन - मेहमान आगमन, मतभेद बढ़ेगा।
कर्क - स्वास्थ्य चिंता, धोखा परेशानी।
सिंह - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कन्या - स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
तुला - श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
वृश्चिक - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, यात्रा।
धनु - चिंता निवारण, जायजाद वृद्धि।
मकर- मतभेद, धन लाभ, शुभ समाचार।
कुम्भ- रोग, प्रापर्टी से लाभ, पुत्र सुख।
मीन- यात्रा, शुभ प्रसंग, परेशानी, कष्ट।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 2 वीरनिर्माण संवत 2551 प्रारंभ
ता. 8 संत जलारामबापा जयंती
ता. 12 संत नामदेव जयंती, कवि कालीदास जयंती
ता. 14 बाल दिवस, श्री नेहरू जयंती
ता. 15 बिरसा मुंडा जयंती
ता. 17 लाला लाजपतराय बलिदान दिवस
ता. 19 रानी लक्ष्मीबाई इंदिरा गांधी जयंती
ता. 22 वीर दुर्गादास राठौर जयंती
ता. 26 डॉ. हरिसिंह गौर जयंती

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता. 8 को 9।0 बजे दिन से रातअंत तक। ता 9 को सूर्योदय से 8।24 बजे प्रातः तक। ता 12 को सूर्योदय से 3।6 बजे रातअंत तक। ता 14 को सूर्योदय से 11।48 बजे रात्रि तक। ता 24 को 12।16 बजे रात से रातअंत तक। **अमृतसिद्धि योग**- ता 16 को 8।59 बजे रात्रि से रातअंत तक। ता 18 को सूर्योदय से 7।11 बजे रात्रि तक। ता 21 को सूर्योदय से 7।35 बजे रात्रि तक। **रवियोग**- ता 3 को रात्रि 6।56 बजे से रात्रिअंत ता 4 को प्रातः 6।55 बजे से रात्रिअंत ता 5 को सूर्योदय से प्रातः 8।10 बजे तक। ता 6 को प्रातः 8।56 बजे से रात्रिअंत ता 7 को दिन 9।12 बजे से रात्रिअंत ता 8 को सूर्योदय से दिन 9।0 बजे तक। ता 10 को प्रातः 7।27 बजे से रात्रिअंत ता 11 को सूर्योदय से रात्रि 4।42 बजे तक। ता 13 को रात्रि 1।26 बजे से रात्रिअंत ता 14 को सूर्योदय से रात्रि 11।48 बजे तक। ता 21 को रात्रि 7।35 बजे से रात्रिअंत ता 22 को सूर्योदय से रात्रि 8।41 बजे तक। **द्विपुष्कर योग** - ता. 17 को 7।55 रात से रात अंत तक। **त्रिपुष्कर योग** - ता. 2 को 6।28 शाम से रातअंत तक। **गुरु पुष्य नक्षत्र** - ता. 21 को सूर्योदय से 7।31 रात तक।

भोपाल

सूर्योदय ता.	1-6.25	7-6.28	13-6.31	19-6.34	25-6.37	30-6.39
सूर्यास्त ता.	1-5.35	7-5.32	13-5.29	19-5.26	25-5.23	30-5.21

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 1 स्नानदान श्राद्ध अमावस्या
ता. 2 गोवर्धन पूजा, अन्नकूट
ता. 3 भाई दूज, चित्रगुप्त पूजनं
ता. 5 गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 6 जयापंचमी, पांडवपंचमी
ता. 7 छठ पूजा, सूर्यषष्ठी व्रतं
ता. 9 गोपाष्टमी
ता. 10 आंवला-अक्षय नवमी
ता. 12 देव प्रबोधिनी एकादशी,
ता. 13 प्रदोष व्रतं, चतुर्मास समाप्त
ता. 15 त्रिपुरारी कार्तिक पूर्णिमा व्रतं
ता. 19 गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 23 काल भैरव अष्टमी व्रतं
ता. 26 उत्पन्ना एकादशी
ता. 28 प्रदोष व्रतं
ता. 29 मासिक शिवरात्रि
ता. 30 श्राद्ध अमावस्या

जैन व्रत पर्व
ता. 1 महावीर निर्वाणोत्सव
ता. 3 भाईबीज ता. 6 ज्ञान पंचम

ज्योतिष मठ का सहयोगी प्रकाशन
दैनिक दीन बन्धु
मध्यप्रदेश के 21 जिलों में नियमित पाठकों के बीच पढ़ा जाने वाला निर्भीक, निष्पक्ष, सटीक दैनिक समाचार पत्र
बैरसिया रोड, करोद भोपाल से प्रकाशित
मो.-9425028578
संपादक - दिनेश शर्मा

वृश्चिक संक्रांति फलं

ता. 16 को 7:28 रात से सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। राक्षसी संज्ञक संक्रांति वराह वाहन पर एवं वृष उपवाहन पर सवार होकर हरित वस्त्र धारण किए ताम्रपात्र में भिक्षा भक्षण करती हुई कुमारी अवस्था में खड़ी हुई स्थिति में प्रवेश कर रही है। यह संक्रांति महंगाई भाव सूचक है। यह संक्रांति दुष्ट वर्ग एवं पशुओं हेतु सुखद है। इसके प्रभाव से शेयर, सोना चांदी के मूल्यों में उतार-चढ़ाव रहेगा। खाद्य सामग्री में तेजी रहेगी, अचानक मौसम में परिवर्तन हो सकता है।

मास फल

इस माह कर्क का मंगल एवं स्वराशि का शनि तथा वृश्चिक राशि में शुक्र बुध की युति का प्रभाव कुछ देशों में युद्ध का भय दे रहा है। शनि मंगल का षडाष्क योग सैन्य टकराव को बढ़ाने वाला रहेगा। मौसम जनसंक्रमण रोग से परेशानी होगी। तेल ईंधन के मूल्यों में वृद्धि हो सकती है। ग्रह स्थिति के अनुसार मौसम में परिवर्तन के साथ ठंडक बढ़ेगी। सूर्य पर मंगल की दृष्टि से आकाशीय बिजली से जनधन की हानि संभव है। मंगल का प्रभाव केंद्रीय मंत्रिमंडल में आंशिक बदलाव करा सकता है।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें
प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068
प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com

हाथ की रेखाएं बतातीं हैं भविष्यफल

डॉ. प्रकाश गौतम
तकनीकी सहा. जलग्रहण जिला पंचायत दमोह
मो. 9589271127

मानव जीवन अनेक परेशानियों से ग्रसित रहता है। भविष्य में किस प्रकार की क्या स्थिति होने वाली है इसके लिए देवऋषियों ने कठोर तप, साधना के बल पर भविष्य जानने की विधियां निर्मित की हैं। जन्म कुंडली के आधार पर भविष्य वाचन किया जाता है परन्तु सभी के पास जन्म कुंडली होती नहीं, होती भी है तो गलत शंका भरी होती है। ऐसे में महर्षि नारदजी द्वारा हस्तरेखा से भविष्य की जानकारी प्राप्त हो सामुद्रिक शास्त्र का निर्माण किया जिसकी अधिष्ठात्री देवी पंचांगुली हैं। हस्तरेखा से भविष्यफल जानने के लिए हस्तरेखा दिखाने का समय सूर्योदय से 3 घड़ी तक ही वर्णित है। इसके पश्चात की गई हस्तरेखा की गणना संशयपूर्ण होती है। दिनभर के कार्य व्यवहार आदि के प्रभाव से छोटी-छोटी हस्तरेखा के चिन्ह विलुप्त हो जाते हैं, परन्तु प्रात:काल उभरे हुए होते हैं इसलिए हस्तरेखा प्रात:काल ही देखने से अच्छी परिणाम प्राप्त होते हैं। मानो हथेली पर कुछ चिन्ह विशेष पाए जाते हैं इन चिन्हों का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर आवश्यक रूप से पड़ता है। इनमें से कुछ चिन्ह इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें खुली आंखों से देखना संभव नहीं हो पाता। दूरबीन लेंस लगाने पर मनुष्य की हथेली में कई प्रकार के चिन्ह मिलते हैं जिसे देखकर हस्तरेखा विद शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त कराता है। हस्तरेखा के प्रमुख चिन्हों में त्रिभुज, क्रास, बिन्दु, वृत, दीप, आयात, जाल, तारा, जव, स्टार आदि हैं। हथेली की अन्य स्थितियां - हाथ और अंगुलियों की बनावट और आकार प्रकार से मनुष्य के आचरण, मनोवृत्ति और स्वभाव का पता चलता है। करतल पर रेखाओं और विशिष्ट चिन्हों पर जातक के गत जीवन में होने वाली घटनाओं का पता चलता है।

ॐ पंचांगुल्यै नमः

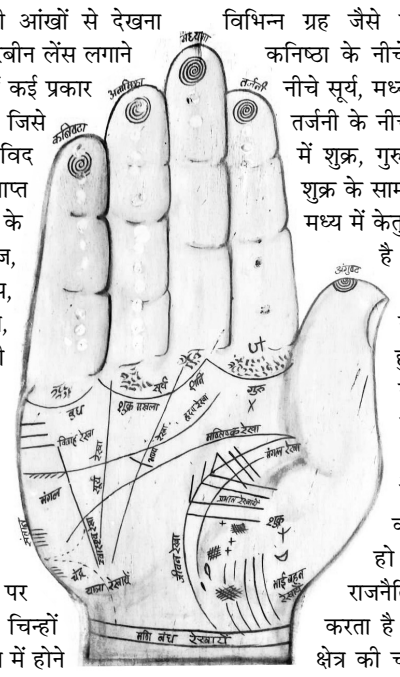

मनुष्य के हाथ में मुख्यत: जीवन रेखा, हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा, स्वास्थ्य रेखा एवं विभिन्न ग्रह जैसे सबसे छोटी अंगुली कनिष्ठा के नीचे बुध, अनामिका के नीचे सूर्य, मध्यमा के नीचे शनि एवं तर्जनी के नीचे गुरु, अंगूठे के मूल में शुक्र, गुरु के नीचे मंगल तथा शुक्र के सामने चंद्र एवं हथेली के मध्य में केतु पर्वत का स्थान होता है। जातक की हथेली में बुध, बृहस्पति एवं सूर्य पर्वत उच्च उठे हुए हों एवं जीवन रेखा से कोई रेखा निकल कर बृहस्पति की ओर जा रही हो, भाग्य रेखा और सूर्य रेखा का उदय चंद्र पर्वत से हो तो वह व्यक्ति राजनैतिक शीर्ष स्थान प्राप्त करता है। हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र की चीरती हुई तर्जनी और मध्यमा के बीच त्रिकोण बनाती हो तो यह वैराग्य एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने वाली होती है। जीवन रेखा के मध्य से ऊपर की ओर जाने वाली कोई शाखा बृहस्पति के पास पताका चिन्ह बनाए तो यह राजयोगकारी होती है। हृदय रेखा गुरु पर्वत पर त्रिशूल रूप धारण कर ले, गुरु और सूर्य पर्वत उच्च स्थिति में हों यह पद प्रतिष्ठा में वृद्धिकारक स्थिति होती है। हाथ की कनिष्ठा अंगुली अनामिका अंगुली के नाखुन को छुए तो यह राजनेता बनाती है। बीच की अंगुली के तीनों पौरों में तिल होना विधायक, सांसद, संवैधानिक दायित्व के पद प्राप्त कराता है।

सामुद्रिक शास्त्र हस्तरेखा अनुसंधानकर्ता प्राचीन आध्यात्मिक ज्योतिष के प्रणेता ब्रह्मलीन ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम के अनुसार उपरोक्त विवेचन के अतिरिक्त हाथ में विभिन्न सूक्ष्म चिन्हों, रेखाओं का बारीकी से अध्ययन, अवलोकन करने पर ही हमें विभिन्न स्थितियों का ज्ञान होता है। इस संबंध में स्थिर मस्तिष्क की प्राप्ति हेतु पंचांगुली देवी (सामुद्रिक शास्त्र की अधिष्ठात्री) का आवाहन, पूजन सिद्धि प्राप्त कर अच्छे से कुंडली एवं हस्त परीक्षण द्वारा योगों के बारे में पूर्ण जानकारी लेने के पश्चात ही हस्तरेखाविद को भविष्य वाचन करना चाहिए।

अपने हाथ से लगाएं पेड़

ज्योतिष शास्त्र में वृक्षों की महिमा का वर्णन अनेक वेद पुराणों के माध्यम से प्राप्त होता है। प्रमुख वृक्षों में पीपल, बरगद, नीम, जामुन, आम, अमरूद, आंवला, शमी, सीताफल आदि हैं। जन्म दिन अथवा अपने पूर्वकों की पुण्यतिथियों के मौके पर वृक्ष लगाने से जन्म जन्मांतर अक्षय पुण्य की प्राप्ति बनी रहती है। अगर आप बागवानी कर रहे हैं तो उपरोक्त पेड़ों के अतिरिक्त आमदनी के कुछ पेड़ भी लगा सकते हैं। अरंडी आदि के बीज, तेल की जापान जैसे विकसित, वैज्ञानिक देशों को जरूरत है। ऐसे में आप वृक्ष लगाकर फल तो खाएंगे ही पुण्य भी प्राप्त करेंगे एवं आपके पितृगण अपने नाम के वृक्ष लगने पर हमेशा श्राद्धपक्ष में पृथ्वी आएंगे और आपके लगाए गए वृक्ष के फल खाएंगे।

विविध ज्ञान

आश्रम विषयक

अधिकतर लोग जीवन की समस्याओं का सरल समाधान चाहते हैं। वे कर्म और जिम्मेदारी से भागते हैं। इसलिए धर्म के ठेकेदार उन्हें सरल उपाय बताते हैं। एक कथावाचक कहते हैं बच्चा न पढ़े तो कोई बात नहीं शिवजी को बेलपत्र चढ़ा दे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाएगा। कोई रुद्राक्ष बांट रहा है तो कोई नारियल। कोई अपने आश्रम में लगातार सात बार आने को कह रहा है। आम श्रद्धालु को बिना कुछ किये धरे अपनी समस्याओं का इससे आसान समाधान क्या मिलेगा। इसका परिणाम है नारियल और रुद्राक्ष बंटने में भगदड़ मच रही है, कथा में कई किलोमीटर का जाम लग रहा है। भगवान की शरण लेना अच्छी बात है पर गीता पहले हृदय की दुर्बलता को त्याग कर पूरे पुरुषार्थ से कर्म करने को कहती है (क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोतिष्ठ परंतप, 2.3) और जब पुरुषार्थ की सीमा हो जाती है तब ईश्वर की मदद के लिए शरणागत हो जाने का मंत्र देती है (मामेकं शरणं ब्रज, 18.66)। जब हम बच्चों को पढ़ाई का पुरुषार्थ करने की जगह शुरु से ही शरणागत होने का उपदेश देते हैं तो वह सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध हो जाता है।

आश्रम व्यवस्था जीवन जीने की वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पद्धति है जो शरीर और मन को सामञ्जस्य में रखकर, जीव को संसार को विकसित करने में अपना योगदान देते हुए, संसार के अनुभवों से गुजारकर, उनकी निस्सारता से परिचय कराकर, मृत्यु का स्वागत करने के लिए तैयार कर देती है। यदि जीवन के सभी सोपान पूर्ण जागरूकता से जिये जाएँ तो उनकी वासनाएँ क्रमश: समाप्त होती जाती हैं। जीवन का हर चरण अपनी सार्थकता सिद्ध कर लेता है। इसलिए सनातन धर्म में जीवन को चार आश्रमों में बाँटकर प्रत्येक आश्रम के लिए जीवनचर्या निर्धारित की गई है।

मृत्यु के आकस्मिक संकट की अवस्था में व्यक्ति की कोई चालाकी नहीं चलती। जो अंदर होता है वही अंत समय में बाहर आता है। गांधीजी को गोली लगी तो उनके अंतिम शब्द थे 'हे राम'। इससे हम गांधीजी की उच्च आध्यात्मिक अवस्था का अनुमान लगा सकते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कि जैसे दाँत के दर्द में व्यक्ति अपना दुनियावी कार्य तो करता है पर बीच-बीच में टीस याद दिलाती रहती है कि दाँत में पीड़ा है। इसी प्रकार अपने काम के बीच-बीच में ईश्वर का स्मरण करते रहना है। यह विधि सदैव मृत्यु के प्रति सजग रखती है और मृत्यु के प्रति सजगता ही भरपूर जीवन जीने की पहली सीढ़ी है।

श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव
आईएएस अधिकारी तथा धर्म, दर्शन और साहित्य के अध्येता, भोपाल

तिल होने के शुभाशुभ लक्षण

माथे पर	बलवान हो
दोनों भौहों के बीच	यात्रा होती रहे
दाहिनी आंख पर	स्त्री से प्रेम रहे
दाहिने गाल पर	धनवान हो
बाएं गाल पर	खर्च बढ़ता जाए
गर्दन पर	आराम मिले
दाहिनी भुजा पर	मान-प्रतिष्ठा मिले
नाक पर	यात्रा होती रहे
छाती के बीच में	जीवन सुखी रहे

शास्त्रानुसार स्त्री के बाएं अंग पर तिल, मस्सा शुभ होता है। इसके विपरीत पुरुष के दाहिने अंग पर तिल मस्सा शुभ माना गया है।

स्वप्न देखने का शुभाशुभ फल

आकाश की ओर उड़ना	लम्बी यात्रा
सूर्य को देखना	किसी महात्मा के दर्शन
बादल देखना	तरक्की
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति
शीशे में मुंह देखना	स्त्री से प्रेम
ऊंचे से गिरना	हानि
बाग-फुलवारी देखना	खुशी
सर के कटे बाल देखना	कर्ज से छुटकारा
पाखाना करना	धन प्राप्त
फूल देखना	प्रेमी मिलन

छिपकली अंग पर गिरने का विचार

छिपकली का सिर पर गिरना लाभदायक माना गया है। ललाट पर गिरने से बंधु दर्शन होता है। भौह मध्य में राजकार्य, ऊपरी ओंठ पर धन का नाश, निचले ओंठ पर गिरने से धनलाभ एवं हर्ष, नासिका पर कष्ट, दाहिने कान पर आयु वृद्धि, बांए कान पर लाभ, दोनों नेत्रों पर धनलाभ, दाहिने हाथ पर कष्ट, बाएं हाथ पर राजभय। कंठ पर शत्रुनाश, स्तनद्वय पर सौभाग्य, उदर पर भूषण लाभ, कंधे पर विजय, नाभि पर धनलाभ, कमर पर लाभ, दाहिने मणिबंध पर भय, धन हानि, बाएं मणिबंध पर जय, कीर्ति, नाखुन पर धन लाभ, मुख पर मिष्ठान, भोजन, दोनों कपोल पर बंधन, भय, केश में कष्ट, दाहिने पैर पर यात्रा, बाएं पैर पर बंधु कष्ट एवं पाद के मध्य में स्त्री कष्ट होता है। ऐसा कहा जाता है कि स्त्रियों के लिए विपरीत ओर के अंग पर गिरने से ऊपर दिए फल प्राप्त होते हैं।

अनिष्ठ फल शमन के लिए सतैल स्नान करके शिवालय में घी का दीपक जलाकर ॐ नम: शिवाय का जाप करें।

संत श्री सच्चा बाबाजी
वाटिका धाम आश्रम, भोपाल मो. 9826818259

क्या आप जानते हैं?

- **उदया तिथि**-सूर्योदय के समय विद्यमान तिथि उदय व्यापनी उदया तिथि कहलाती है।
- **अरुणोदय काल**- सूर्योदय से पूर्ववर्ती चार घड़ियों की कालावधि को अरुणोदय काल कहा जाता है।
- **प्रात:काल**-सूर्योदय उपरांत तीन मुहूर्त तक (48 मिनट=1 मुहूर्त)(8.30 तक)।
- **संगवकाल**-4-6 मुहूर्त तक (11 बजे तक)।
- **अभिजीतकाल**-दोपहर 11.40 बजे 12.20 तक
- **मध्याह्नकाल**-7-9 मुहूर्त तक (1 बजे तक)।
- **अपराह्नकाल**-10 से 12 मुहूर्त तक (4 बजे तक)।
- **सायंकाल**-13 से 15 मुहूर्तकाल (शाम 6 बजे तक)।
- **गोधूली वेला**-सूर्यास्त से 15 मिनट पूर्व व 15 मिनट पश्चात की होती है।
- **प्रदोष काल**- सूर्यास्त के बाद 48 मिनट का समय।
- **निषिथकाल**-अर्धरात्रि को निषिथकाल कहा जाता है। (रात्रि 12 बजे के आसपास)
- **कर्मकाल**-शास्त्रकारों के अनुसार जिस समय जिस देवता की पूजा उपासना का समय होता है। वह समय उस पूजा और व्रत का कर्मकाल कहलाता है।
- **परिक्रमा**- देवी दुर्गा की आठ बार तथा प्रतिरूप देवियों की एक बार, विष्णु व उनके प्रतिरूपों की चार बार, शिव का आधी बार और शेष देवों (गणेश आदि) की परिक्रमा तीन बार करना चाहिए।

वायु परीक्षण दिवस

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा (आषाढ़ी पूर्णिमा) को ग्राम/शहर के बाहर सायंकाल के समय वायु परीक्षा का फसलों पर पड़ने वाला शुभाशुभ प्रभाव प्राप्त होता है। जैसे -

- पूर्व व ईशान की ओर हवा होने से धान की उपज श्रेष्ठ होगी तथा प्रजा सुखी रहेगी।
- आग्नेय नैत्रृत्य एवं दक्षिण दिशा की वायु होने से अल्प वर्षा होती है। इसमें अकाल व अग्नि भय तथा शासन व्यवस्था छिन्न-भिन्न होती है।
- वायव्य की वायु होने से ठंड, वृष्टि होती है एवं धान की उपज कम होती है।

होली के समय वायु दिशा से शुभाशुभ ज्ञान

होली जलते समय यदि वायु का बहाव पूर्व दिशा से हो तो सुखद, अग्निकोण से होने पर आगजनी सूचक, दक्षिण दिशा से दुर्भिक्ष सूचक तथा नैऋत्य दिशा से वायु का बहाव होने पर फसल को हानिकारक तथा पश्चिम से सामान्य फलदायी वायव्य कोण से आंधी-तूफान सूचक तथा उत्तर एवं ईशान कोण से प्रवाह राष्ट्रीय संकट का सूचक माना गया है।

व्रत कब नष्ट हो जाता है

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूल चर्वणात्। उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात्।।

व्रत दिवस पर बार-बार जल पीना, एक बार भी पान खाना, दिन में सोना, स्त्री रति प्रसंग आदि से व्रत नष्ट हो जाता है।

प्राण संकटे एवं सकृज्जलपाने दोषो नास्ति - अर्थात शरीर परिस्थिति विशेष पर एक से अधिक बार जल पीने से दोष नहीं। **अश्रुपातक्रोधादिना सद्यो व्रत नाशः परान्न भोजनचापि**-अर्थात् अश्रुपात रौदन, क्रोध, बहुभाषा, पराये अन्न का भोजन भी व्रत नाशक, इन विषयक बचाव रखना चाहिए।

पं. राम नरेश त्रिपाठी
आचार्य, काली मठ-भोपाल

मकर संक्रांति फल एवं दीपावली पूजन मुहूर्त-2024

पं. श्री धनेश प्रपन्नाचार्य
कालीमठ संस्थान भोपाल (म.प्र)
मो. 9826973147

माघ कृष्ण 1 मंगलवासरे 15:17 समये 21:37 घटी मकरसंक्रान्ति प्रवेश: तस्य पुण्यकाल अद्य दिवसे वार नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर तस्कर, अनैतिक कार्यशील एवं ठगों को शुभकारी है। तस्य काले पुष्यनक्षत्र नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति वणिकानाम् सुखदा: । मुहूर्त 30 मूल्य साम्य: । वालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खोर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक।

माघ मास फल- सर्वे भवति सुखिन: संसार में सभी लोग सुखी होंगे। कृष्ण पक्ष फल :- चौर पाखण्डी दुर्बुद्धि व्याध पूर्वक दुर्जनान्। सदैव सुख यत्येषां संक्रांति: कृष्ण पक्षजा सूर्य संक्रान्ति कृष्ण पक्ष में हाने से चोर, पाखण्डी, दुर्बुद्धी तथा प्रेम पूर्वक रहने वाले दुर्जनों के लिए हमेशा सुखकारी होती है।

वाहन फलम् व्याघ्र: स्याद्यदि वाहनं दिनकृतचं प्रचंड स्फुर। दृष्ट्रा विंध्यवनस्थलीषु बिलयं यांति प्रयाणोद्यमा: आरण्या: खलुजीविनोति विपुलं सौख्यं जयं पुष्टतां सद्यो वागुरिकां मृगादि बहदुलं लाभं लभतेतुलं यदि सूर्य का वाहन व्याघ्र हो तो सूर्य प्रचंड रूप धारण करें। विंध्याचल सर्वत के जंगल की भूमि पर व्याघ्रों का बिलय हो, जंगल में रहेंगेने वाले जीवन प्राप्त करते हैं तथा जय सुख, और पुष्टता प्राप्त करते हैं। शिकारियों को अनेक मृगों का लाभ होता है।

उप वाहन सुभिक्षं सर्वदेशेषु राजविग्रहमेव च। गृह गृहे च मांगल्य वाजिस्थे च दिवाकरे। सूर्य यदि अपने उप वाहन घोड़े पर स्थित हो तो पूरे देश में सस्ताई हो अर्थात् महंगाई खत्म हो और राजाओं में फूट हो, प्रत्येक घर में शुभ मांगलिक कार्य हो ।

वस्त्रफल:- सुभगा वनिता निपीड़न, बहदमूल्यं खलु पीतमंबरे। व्रजतीहमहर्षतां निशा यदि पीतांबर धारको रवि: । यदि सूर्य पीला वस्त्र धारणकिये हढ़ए हो तो सौभाग्यवती स्त्रियां परेशान हों, वस्तु के मूल्य अधिक हो, रातों रात महंगाई बढ़े।

विलेपन-फल:- सत्केसरालं विललाटभानु, वैकुप्रदेशोत्थनृपाधि भंगे। समाप्नुयुर्माथुर भामिनीनां तदुद्यमानामपि पीड़न स्यात् । यदि सूर्य केसर/कुंकुम का ललाट पर लेप किये हुए हो तो बंग प्रदेश के राजा का राज्य भंग हो, माथुर स्त्रियों के समापन होवे, केसर, कुंकुम महंगी होने से व्यापारी लोगों को पीड़ा हो।

पुष्पफल:- यदि कमल वन प्रकाशकारी भजति च जातिलत्तासुगंधि पुष्पं भवति हि तन्महर्षताशं शरदि च तत्कुसुमोद्यमा: प्रयाति यदि सूर्य जाति नाम के पुष्प को धारण करता है तो लताओं में अच्छी गंध वाले पुष्प होते हैं और जाति आदि पुष्प अधिक भाव (महंगे) को प्राप्त हो।

भोजन फल:- भास्कर परमात्र भोजनो दुग्ध शलिघृतशर्करादय: । यांतिमूल्यमतुलंत्वभीरभू संभवा अपि जना विनशा सूर्य यदि पायस (खीर) का भोजन किये हढ़ए हो तो दूध, खचाबल, चीनी, घी आदि की अत्यधिक मूल्य वृद्धि (महंगाई होती है। इससे लोगों का नाश होता है।

शस्त्रफल:- गदायुधं यदा हरे विशिष्ट युद्ध संभव कलिंगबंगदेशयोर्जयस्तुरुष्क भूभुजां यदि सूर्य गदा को धारण किये हुए हो तो कलिंग और बंगाल निवासियों में एक विशिष्ट युद्ध की संभावना होवे तथा तुरुष्क (तुर्की) राजाओं की विजय हो ।

जाति-फल:- दिनमणेरहि जातिरतो भृशं जगतिसर्पभयं न भवेत् क्वचित्। सामतीव भजंति च गारुडा, बहविधां मृतिमत्र फणाभृत: । यदि सूर्य अहि अर्थात् सर्प जाति को धारण किये हुए तो संसार में किसी को सर्प का भय नहीं हो, और मंत्र के द्वारा सर्प का जहर उतारने वाले बहुत सुख प्राप्त करें, अनेकों सर्पों का नाश हो।

अवस्था-फल:- दिनमणिस्तु कुमार शरीरयुत: कृतचौल विधीन्व्रतबंधयुतान्। बहदले खनक क्रियमाण शिशून परिपीडयतीहबिवाह्य सुतान्। यदि सूर्य कुमार अवस्था को धारण किये हुए हो तो बच्चे जड़ूला, योसबीत आदि से युत हों, तथा सेंध लगाने वालों के द्वारा अविवाहित बच्चे पीड़ित होवे ।

अलंकार-फल- यदि सुमौक्तिकं कंजबंधुना समवधार्यते प्राणनाशनं भवति निश्चितं ताम्रपर्णिक तट निवासिनां भूभुजामिह। यदि सूर्य अच्छे मोती को धारण किये हुए हो तो ताम्र पर्णि के तट पर निवास करने वाले राजा लोगों की निश्चित रूप से मृत्यु की प्राप्ति हो।

दिशा गमन एवं दृष्टि फल - भानुरियादिशमंबुपते वेन्मृत्युभयं यवना उपयति। अन्य नृपास्त्र परिक्षत गात्रा रक्त जलौघ नदी कृत भूम्य: । यदि सूर्य पश्चिम दिशा में गमन करें तो यवनों को भय और मृत्यु प्राप्त हो, अन्य राजा अस्त्रादि से शरीर में घाव प्राप्त करें तथा भूमि पर जल की तरह रक्त बहे। दर्शनमार्गगता यदि भानोर्वायुदिशा यवनामृतिभाज: । अन्यनृपास्त्रशराहतगात्रारोदन निर्गत कज्जल रागा: । यदि सूर्य वायव्य (उत्तर-पश्चिम) दिशा की तरफ देखे तो यवन देशवासी मृत्यु को प्राप्त हो तथा अन्य राजा अस्त्र शस्त्र द्वारा अपने शरीर को घायल होता देखकर रुदन करे, एवं रुदन के कारण कज्जल निकले।

दीपावली पूजन मुहूर्त

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण 14 दिन गुरुवार, दिनांक 31 अक्टूबर 2024 को दीपावली का शुभ पर्व है। दीपावली पूजन का मुख्यकाल प्रदोषकाल होता है जिसमें स्थिर लग्न की प्रधानता होती है तथा वृष, सिंह या कुंभ लग्न में दीपावली पूजन करना उत्तम माना गया है। इस दिन वृष लग्न सायं के 6 बजकर 37 मिनिट से रात्रि के 8 बजकर 33 मिनिट तक है। जो दीपावली पूजन के लिए उत्तम समय है। इसके पश्चात अर्धरात्रि में सिंह लग्न में रात्रि के 12 बजकर 59 मिनिट से रात्रि के 2 बजकर 33 मिनिट तक तथा कुंभ लग्न में भी दिन के 3 बजकर 22 मिनिट से दिन के 3 बजकर 32 मिनिट तक भी गणेश, कुबेर आदि दवेताओं का पूजन किया जा सकता है।

विशेष - अमावस्या तिथि को दीपावली दीप पूजन करना श्रेष्ठ रहता है। अगर अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से आधी रात तक उपलब्ध हो। दीपावली निर्णय : अमावस्या प्रदोषकाल से अर्धरात्रि तक रहने वाली श्रेष्ठ मानी जाती है। अगर आधी रात न भी हो तो प्रदोष व्यापिनी होना चाहिए। ता. 1 नवंम्बर को अमावस्या तिथि प्रदोषकाल के समय समाप्त हो रही है। जबकि पूर्व में 31 अक्टूबर को अमावस्या तिथि प्रदोषकाल से रात्रि अंत तक मिल रही है जो शास्त्र सम्मत है। इसलिए दीपावली पर्व लक्ष्मी कुबेर पूजन 31 अक्टूबर गुरुवार के दिन किया जाना शास्त्र सम्मत है।

कानूनी सलाहकार **श्री अमित शुक्ला,** एड. हाईकोर्ट जबलपुर मो, 9425325708, **श्री उमाकांत शुक्ला** (सीनि. एड.), सतना मो.-9303321029, **श्री ओ.पी. त्रिपाठी** (एड. हाईकोर्ट), जबलपुर मो.-9826768278, **श्री योगेश द्विवेदी (एड.)** भोपाल मो.-9425159954, **श्री अनुराग तिवारीजी (एड.)** इंदौर-मो. 9806018811, **श्री सी.एस. शर्मा (एड.)** भोपाल मो.-9425016814

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम, ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com website-www.jyotishmath.com
पंजीयन क्रमांक 01/01/26063/12

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 1 दिसंबर की

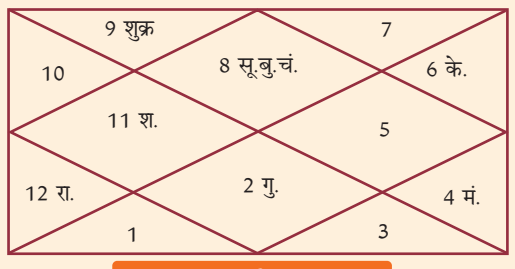

9 शुक्र | 8 सू.बु.चं. | 7 | 10 | 6 के. | 11 श. | 5 | 12 रा. | 2 गु. | 4 मं. | 1 | 3

ग्रह परिवर्तन स्थिति

सूर्य- वृश्चिक में, ता. 16 को 7:30 प्रातः से धनु में। **मंगल -** कर्क में ता. 7 को 6:30 सायं से वक्री, **बुध-** वृश्चिक में वक्री ता. 16 को 12 बजे दिन से मार्गी, **गुरु-** वृष में वक्री, **शुक्र -** धनु में, ता. 2 को 4:49 रात से मकर में। ता. 28 को 10:29 रात से कुंभ में। **शनि-** कुंभ में, **राहू-** मीन में, **केतु-** कन्या राशि में भ्रमणरत रहेंगे।

मूल ता. 1 को 2।19 दिन से ता. 3 को 4।34 दिन तक। ता. 10 को 11।18 दिन. से ता. 12 को 7।59 दिन तक। ता. 18 को 3।10 रात से ता. 20 को 5।37 रात तक। ता. 28 को 9।43 रात से ता. 30 को 12।13 रात तक।

गुरु तारा पूर्व दिशा में उदित, शुक्र पश्चिम दिशा में उदित

सूर्य दक्षिणायन

हेमंत ऋतु

प्रात:कालीन ग्रहाचार स्थिति ता. 17 दिसंबर की

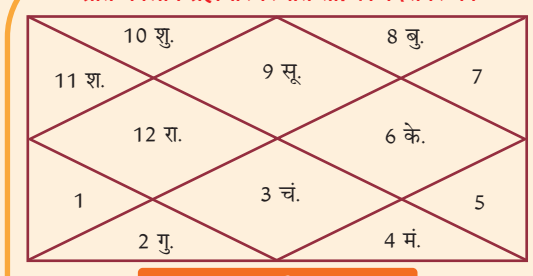

10 शु. | 9 सू. | 8 बु. | 11 श. | 7 | 12 रा. | 6 के. | 1 | 3 चं. | 5 | 2 गु. | 4 मं.

चंद्र परिवर्तन स्थिति

चंद्रमा वृश्चिक राशि का, ता. 2 को 3।41 बजे दिन से धनु का। ता. 4 को 11।2 बजे रात से मकर का। ता. 6 को 4।3 बजे रात से कुंभ का। ता. 9 को 7। 18 बजे प्रातः से मीन का। ता. 11 को 9।38 बजे दिन से मेष का। ता. 13 को 12।7 बजे दिन से वृष का। ता. 15 को 3।30 बजे दिन से मिथुन का। ता. 17 को 8।42 बजे रात से कर्क का। ता. 19 को 4।9 बजे रात से सिंह का। ता. 22 को 2।8 बजे दिन से कन्या का। ता. 24 को 1।43 बजे रात से तुला का। ता. 27 को 1।17 बजे दिन से वृश्चिक का। ता. 29 को 11।13 बजे रात से धनु राशि का चंद्रमा रहेगा।

दिसंबर 2024

शालिवाहन संवत 1946
शंकराचार्य संवत् 2531
श्री महर्षि संवत 107

संवत् 2081
मार्गशीर्ष-पौष मास

वर्षभर की मंगल कामना के साथ यह पंचांग अपने मित्रों व संबंधियों को भेंट करें।

-ज्योतिषाचार्य अयोध्या प्रसाद गौतम

अपने बुक सेलर से यह पंचांग मंगाएं।

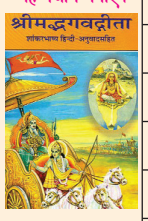

ता. 11 गीता जयंती
मार्गशीर्ष शुक्ल 11 (मोक्षदा एकादशी) व्रत के दिन गीता जयंती मनाने की परंपरा है। इसी दिन श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

शिव वास अग्नि वास
इस माह ता. 1, 6, 9, 13, 16, 20, 26 को शिव एवं अग्निवास दोनों रहेंगे।

उपरोक्त तारीखों में विद्वान पाठक समय का निर्धारण कर यज्ञादि कार्य करें।

तिथि समय समा.

तारीख	तिथि	समय	बजे तक	माह पक्ष
1	30	10।56	दिन	मा.कृ.
2	1	11।48	दिन	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष
3	2	0।12	दिन	
4	3	0।6	दिन	
5	4	11।29	दिन	
6	5	10।27	दिन	
7	6	9।2	दिन	
8	7 8	7।15	प्रात:	
9	9	2।58	रात	
10	10	12।38	रात	
11	11	10।17	रात	
12	12	7।59	रात	
13	13	5।50	सायं	
14	14	3।53	दिन	
15	15	2।13	दिन	
16	1	12।54	दिन	पौष कृष्णपक्ष
17	2	12।2	दिन	
18	3	11।38	दिन	
19	4	11।43	दिन	
20	5	0।21	दिन	
21	6	1।28	दिन	
22	7	3।1	दिन	
23	8	4।56	सायं	
24	9	7।4	रात	
25	10	9।14	रात	
26	11	11।17	रात	
27	12	1।3	रात	
28	13	2।25	रात	
29	14	3।19	रात	
30	30	3।42	रात	
31	1	3।32	रात	मा.शु.

वार					
SUNDAY रवि	स्नानदान अमावस्या; अनुराधा 2।19 दिन; **1**; मार्गशीर्ष कृष्ण 30	नन्दा, भानु सप्तमी; शतभिषा 2।17 दिन; **8**; पंचक; मार्गशीर्ष शुक्ल 7, 8	स्नानदान पूर्णिमा; मृगशिर 3।4 रात; **15**; स. वल्लभभाई पटेल पुण्य.; मार्गशीर्ष शुक्ल 15	भानु सप्तमी; पूर्वा फा. 7।32 प्रातः; **22**; छत्र योग; पौष कृष्ण 7	शिव चतुर्दशी; ज्येष्ठा 11।13 रात; **29**; कांण योग; पौष कृष्ण 14
MONDAY सोम	चंद्रदर्शन; ज्येष्ठा 3।41 दिन; **2**; पद्म योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 1	नन्दा नवमी; पूर्वा भाद्रपद 12।52 दिन; **9**; पंचक, मूसल योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 9	खरमास समाप्त; आर्द्रा 2।40 रात; **16**; धनु संक्रांति; पौष कृष्ण 1	रुकमणि अष्टमी; उत्तरा फा. 9।50 दिन; **23**; श्रीवत्स योग; पौष कृष्ण 8	स्नानदान सोमवती अमावस्या; मूल 12।13 रात; **30**; लुंबक योग; पौष कृष्ण 30
TUESDAY मंगल	मूल 4।34 दिन; **3**; छत्र योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 2	उत्तर भाद्रपद 11।18 दिन; **10**; पंचक, सिद्धि योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 10	पुनर्वसु 2।41 रात; **17**; सुस्थिर योग; पौष कृष्ण 2	सौम्य योग; हस्त 12।22 दिन; **24**; राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस; पौष कृष्ण 9	पूर्वाषाढ़ 12।43 रात; **31**; मित्र योग; पौष शुक्ल 1
WEDNESDAY बुध	गणेश चतुर्थी व्रतं; पूर्वाषाढ़ 4।57 सायं; **4**; नौसेना दिवस, श्रीवत्स योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 3	मोक्षदा एकादशी व्रतं; रेवती 9।38 दिन; **11**; गीता जयंती, पंचक स.; मार्गशीर्ष शुक्ल 11	गणेश चतुर्थी व्रतं; चंद्रोदय 8।20 रात; पुष्य 3।10 रात; **18**; गुरु घासीदास जयंती; पौष कृष्ण 3	क्रिसमस-डे, ईसा मसीह जं.; चित्रा 2।59 दिन; **25**; कालदंड योग; पौष कृष्ण 10	**भद्रा** तारीख 4 को 11।53 बजे रात्रि से ता. 5 को 11।29 बजे दिन तक, ता. 8 को 7।15 बजे प्रातः से 6।16 बजे सायं ता. 11 को 11।30 बजे दिन से 10।17 बजे रात्रि ता. 14 को 3।53 बजे दिन से 3।3 बजे रात्रि ता. 17 को 11।51 बजे रात्रि से ता. 18 को 11।38 बजे दिन ता. 21 को 1।28 बजे दिन से 2।15 बजे रात्रि तक ता. 24 को रात्रि से रात्रिअंत तक। ता. 25 को 8।14 बजे दिन से 9।14 बजे रात्रि तक ता. 28 को 2।25 बजे रात्रि से ता. 29 को 2।58 बजे दिन तक।
THURSDAY गुरु	उत्तराषाढ़ 4।52 दिन; **5**; सौम्य योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 4	मत्स द्वादशी, धरणी व्रतं; अश्वि, भर 7।59 दिन; **12**; मानस योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 12	श्लेषा 4।9 रात; **19**; अमृत योग; पौष कृष्ण 4	एकादशी व्रतं सर्वे.; स्वाती 5।31 सायं; **26**; सुस्थिर योग; पौष कृष्ण 11	
FRIDAY शुक्र	विवाह पंचमी, नाग दिवाली; श्रवण 4।22 दिन; **6**; पंचक प्रारंभ; मार्गशीर्ष शुक्ल 5	प्रदोष व्रतं, अनंद त्रयोदशी; कृतिका 5।02 रात; **13**; छत्र योग; मार्गशीर्ष शुक्ल 13	कांण योग; मघा 5।37 रात; **20**; संत गाडगे महाराज नि.दि.; पौष कृष्ण 5	स्वरूप द्वादशी; विशाखा 7।48 रात; **27**; मातंग योग; पौष कृष्ण 12	**पंचक** तारीख 6 को 4 बजकर 3 मिनिट रात से तारीख 11 को 9।38 वजे दिन तक।
SATURDAY शनि	चम्पा षष्ठी; धनिष्ठा 3।29 दिन; **7**; पंचक, बैंगन छठ; मार्गशीर्ष शुक्ल 6	व्रत की पूर्णिमा; रोहिणी 3।53 रात; **14**; पिशाच मोचनी यात्रा; मार्गशीर्ष शुक्ल 14	पूर्वा फा. दिनरात; **21**; लुंबक योग; पौष कृष्ण 6	प्रदोष व्रतं; अनुराधा 9।43 रात; **28**; अमृत योग; पौष कृष्ण 13	

मुहूर्त

विवाह- ता. 2, 3, 4, 5, 9, 10, 11, 13, 14, 15 **सीमांत पुंसवन-** ता. 3
नामकरण- ता. 5, 11, 18, 25, ,26
अन्नप्राशन- ता. 5, 6, 18, 25
नवीन वस्त्र- ता. 5, 6, 11, 24, 25, 27
प्रसूति स्नान- ता. 4, 5, 15, 24
गृहारंभ- ता. 5, 11, 12, 25
व्यापार आरंभ- ता. 5, 11, 12, 25
वाहन क्रय- ता. 6, 11, 25
शल्यक्रिया- ता.5, 12, 15, 24
वाटिका रोपण- ता. 5, 12, 15, 27
औषधि सेवन- ता. 2, 5, 6, 11, 12, 15, 25, 27 **नवान्य भक्षण-**ता. 12
यात्रा- ता. 5, 6, 7, 11, 15, 27
धान्य छेदन- ता. 2, 5, 16, 20 ,25
जीर्ण गृह प्रवेश- ता. 6, 7
वस्तु क्रय-विक्रय - ता. 5, 6, 7, 11, 12, 13, 21, 22, 23, 25, 27
शस्त्र निर्माण- ता. 3, 7, 21, 22
पशु क्रय-विक्रय- ता. 6, 11, 13, 27
आभूषण निर्माण - ता. 7
नव निर्माण- ता. 5, 7, 15, 22
ईंट भट्टा - ता. 11, 12
शिल्प विद्या - ता. 2, 4, 5, 11, 25
द्विरागमन - ता. 2, 5, 6, 11, 12

राशिफल

मेष - धोखा परेशानी, स्वास्थ्य चिंता।
वृष- स्थानांतरण, शरीर कष्ट, तनाव।
मिथुन - प्रापर्टी से लाभ, रोग, पुत्र सुख।
कर्क - पुत्र सुख, भूमि लाभ, यात्रा कष्ट।
सिंह - व्यर्थ विवाद, सफलता, धन लाभ।
कन्या - शुभ प्रसंग, यात्रा, परेशानी, कष्ट।
तुला - धन लाभ, शुभ समाचार, मतभेद।
वृश्चिक - भूमि लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि।
धनु - सहयोग मिलेगा, व्यर्थ की चिंता।
मकर- जायजाद वृद्धि, चिंता निवारण।
कुम्भ- श्रम अधिक, लाभ, बेवजह तनाव।
मीन- मतभेद बढ़ेगा, मेहमान आगमन।

प्रमुख दिवस, जयंती

ता. 3 भोपाल गैस त्रासदी दिवस विश्व दिव्यांग दिवस, डॉ. राजेंद्र प्रसाद जयंती
ता. 10 मानवाधिकार दिवस
ता. 11 गीता जयंती
ता. 14 ऊर्जा बचत दिवस दत्तात्रेय जयंती
ता. 18 गुरु घासीदास जयंती
ता. 23 किसान दिवस
ता. 25 प्रभु ईसामसीह जयंती

शुभ योग

सर्वार्थ सिद्धि योग - ता 6 को सूर्योदय से 4।22 बजे दिन तक। ता 10 को सूर्योदय से 11।18 बजे दिन तक। ता 12 को सूर्योदय से 7।59 बजे प्रातः तक। ता. 14 को सूर्योदय से 3।53 बजे रात अंत तक। ता 22 को 7।32 बजे प्रातः से रातअंत तक। ता 27 को 7।48 बजे रात्रि से रातअंत तक। ता 29 को 11।13 बजे रात्रि से रातअंत तक।
अमृतसिद्धि योग- ता 14 को सूर्योदय से 3।53 बजे रातअंत तक।
रवियोग- ता 4 को सायं 4।57 बजे से रात्रिअंत ता 5 को सूर्योदय से दिन 4।52 बजे तक। ता 6 को दिन 4।22 बजे से रात्रि अंत तक। ता 7 को सूर्योदय से दिन 3।29 बजे तक। ता 9 को दिन 12।52 बजे से रात्रिअंत ता 10 को सूर्योदय सेरात्रि अंत तक। ता 11 को सूर्योदय से दिन 9।38 बजे तक। ता 13 को सूर्योदय से रात्रि 5।02 बजे तक। ता 20 को रात्रि 5।37 बजे से रात्रिअंत ता 21 को सूर्योदय से रात्रि 7।34 बजे तक। ता 22 को सूर्योदय से प्रातः 7।32 बजे तक। **त्रिपुष्कर योग -** ता. 17 को सूर्योदय से 12।2 दिन तक। ता. 22 को से 7।32 प्रातः से 3।1 दिन तक। **द्विपुष्कर योग -** ता. 7 को 9।2 दिन से 3।29 दिन तक। **पुष्य नक्षत्र-** ता. 18 को सूर्योदय से रात अंत तक।

भोपाल

सूर्योदय ता.	1-6.40	7-6.41	13-6.42	19-6.43	25-6.43	30-6.42
सूर्यास्त ता.	1-5.20	7-5.19	13-5.18	19-5.17	25-5.17	30-5.18

माह के मुख्य व्रत, पर्व एवं त्योहार

ता. 1 स्नानदान अमावस्या
ता. 4 गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 6 श्री राम विवाहोत्सव
ता. 7 चम्पाषष्ठी
ता. 8 नन्दा सप्तमी
ता. 9 नन्दनी नवमी
ता. 11 मोक्षदा एकादशी व्रतं
ता. 13 प्रदोष व्रतं, अनंग त्रयोदशी
ता. 14 व्रत की पूर्णिमा दत्त पूर्णिमा
ता. 15 स्नानदान पूर्णिमा

ज्योतिष मठ संस्थान का प्रकाशन

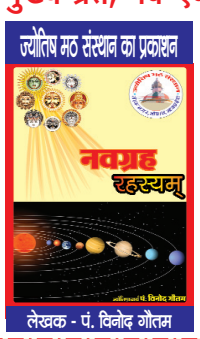

लेखक - पं. विनोद गौतम

ता. 18 गणेश चतुर्थी व्रतं
ता. 23 रुखमणि अष्टमी
ता. 26 सफला एकादशी
ता. 27 स्वरूप द्वादशी
ता. 28 प्रदोष व्रत
ता. 29 शिव चतुर्दशी व्रतं
ता. 30 स्नानदान सोमवती अमावस्या

जैन व्रत पर्व
ता. 11 मौन ग्यारस
ता. 14 रोहिणी व्रत

धनु संक्रांति फलं

ता. 16 को 7:30 प्रातः से सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेंगे। ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति वराह वाहन पर सवार होकर वृष उपवाहन लिए हरित वस्त्र धारण किए, ताम्रपात्र में भिक्षा भक्षण करती हुई कुमारी अवस्था में अर्की है। इसलिए यह महंगाई भाव सूचक है। संक्रांति के प्रभाव से अनाज के मूल्यों में वृद्धि होगी। सोना-चांदी में स्थिरता दिखाई देगी। अनेक प्रांतों वर्षा-आंधी का प्रकोप परिलक्षित होगा।

मास फल

इस माह वृश्चिक राशि में सूर्य बुध चंद्र का त्रिग्रही योग तथा मीन राशि पर राहु का प्रभाव सरकार द्वारा शांति के प्रयास भंग होंगे। बजट आदि से संबंधित असहयोग अस्थिरता दिखाई देगी। शनि राहु की परस्पर दृष्टि से भारत के दक्षिणी प्रांतों में आपसी मतभिन्नता दिखेगी। किसी राष्ट्र में भूकंप आदि उत्पात की संभावना रहेगी। सूर्य बुध पर सूर्य राहु की दृष्टि से फसलों को हानि होगी। कई स्थानों पर वर्षा-धुंध का योग है।

अगले वर्ष का पंचांग आप अपने बुक सेलर से प्राप्त कर लें।

ज्योतषीय परामर्श हेतु संपर्क करें

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान नेहरू नगर, भोपाल मो.-9827322068

प्रस्तुतकर्ता - पं. विनोद गौतम

ईमेल-pt.vinodgoutam@gmail.com
website-www.jyotishmath.com

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग

आपका जीवन बदल देंगे ये 20 मंत्र

1. कमाई से कम खर्च हो ऐसी मानसिकता बनाओ।
2. दिन में कम से कम 3 लोगों की प्रशंसा करो।
3. खुद की भूल स्वीकारने में संकोच मत करो।
4. किसी के भी सपनों पर मत हंसो।
5. आपके पीछे खड़े व्यक्ति को भी कभी कभी आगे जाने का मौका दो।
6. रोज सूरज को उगता हुआ देखो।
7. बहुत जरूरी हो तभी उधार लो।
8. किसी के पास से कुछ अच्छा मिले तो ग्रहण करो।
9. कर्ज और शत्रु को कभी बड़ा मत होने दो।
10. स्वयं पर भरोसा रखें।
11. प्रार्थना करना नहीं भूलें, प्रार्थना में शक्ति होती है।
12. अपने काम से ही मतलब रखें।
13. समय बहुत कीमती है, इसको व्यर्थ में बरबाद न करें।
14. जो आपके पास है, उसी में खुश रहना सीखो।
15. बुराई किसी की भी मत करो, क्योंकि बुराई नाव में छेद के समान है, बुराई छोटी हो तो भी डुबो देती है।
16. सकारात्मक सोच रखो, नकारात्मक सोच त्याग दो।
17. हर व्यक्ति एक हुनर लेकर पैदा होता है बस उस हुनर को दुनिया के सामने लाओ।
18. कोई काम छोटा नहीं होता, हर काम बड़ा होता है। बड़ों का साथ अपनाओ, आम के पेड़ का साथ पाकर लौंकी की बेल भी आम से बड़ी हो जाती है।
19. सफलता उनको ही मिलती है, जो कुछ करते हैं।
20. कुछ पाने के लिए कुछ खोना नहीं बल्कि कुछ करना पड़ता है।

रुद्रबीसी का ग्यारहवां वर्ष संवत 2081 (सन-2024-25)

रुद्र बीसी का यह नौवां वर्ष है। रुद्र बीसी से तात्पर्य शिव तांडव के आगामी बीस वर्ष से हैं, जिसमें प्रलयांकारी शिव अपनी तरह से इस प्रकृति को चलाएंगे जिसमें प्राकृतिक प्रकोप के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में समरसता खंड-खंड होगी, भृगु संहिता के आधार पर प्रकृति के बड़े परिवर्तन युग आधारित होते हैं, लेकिन छोटी अवधि के हिसाब से ब्रह्मा वीसी, विष्णु बीसी और रुद्र बीसी को 20-20 वर्ष के कालखंड में बांटा गया है। भृगु संहिता जैसे ज्योतिषीय ग्रंथ में 60 तरह के संवत्सरों का उल्लेख है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बीसी का तात्पर्य बीस-बीस वर्ष के अवधिकाल से बताया गया है। इस तरह देखा जाए तो रुद्र बीसी वर्ष 2013 में प्रारंभ हुई है जो कि आगामी सन् 2034 तक चलेगी, चूंकि रुद्र अर्थात शिव संहार के देवता है। लिहाजा 20 वर्ष संहारक माने जाएंगे। जिसमें प्राकृतिक प्रकोप व मानवीय उपद्रव, हिंसा व युद्ध जैसी परिस्थितियां निर्मित होना स्वाभाविक है। रुद्र बीसी के पहले वर्ष का प्रभाव केदारनाथ धाम में हुए प्रलय से समझा जा सकता है। दूसरे वर्ष पशुपतिनाथ, नेपाल-भारत में भूकंप से हजारों लोगों की मौत इसी रुद्र बीसी का प्रभाव है। तीसरे वर्ष महाकाल उज्जैन में प्राकृतिक प्रकोप से कुंभ मेले का तहस-नहस होना आदि अनहोनी घटनाएं घटीं। ज्योतिष मठ संस्थान के संस्थापक व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम ने अपने अनुसंधान के आधार पर बताया था कि रुद्र बीसी के चलते आने वाला समय भयावहतापूर्ण है और इस भविष्यवाणी का उद्घोष किसी तरह का भय उत्पन्न करना नहीं था, बल्कि सचेत करने की दृष्टि से प्रत्येक वर्ष के पंचांग कैलेंडरों एवं पत्रिका सौभाग्यम में उल्लेख किया गया था। वर्तमान समय पर संक्रमक बीमारी कोविड-19 रुद्र बीसी के नौवें वर्ष का प्रभाव है।

2024 ई. रुद्रबीसी के ग्यारहवें वर्ष में आती है, इस वर्ष भी युद्धादि की स्थितियों बढ़ोतरी होगी। विश्व युद्ध होने जैसे हालात निर्मित होंगे। अमेरिका, जापान, चीन आदि देशों में प्राकृतिक प्रकोप, मानवीय प्रकोप संभव है। भारत में भी पूर्वोत्तर क्षेत्रों में भूकंप आदि से हानि होगी। वर्तमान में चल रहे रूप एवं यूक्रेन तथा इजराइल एवं फिलिस्तीन (हमास) के बीच के भयावह परिणाम भी रुद्रबीसी के दसवें वर्ष के कारण हम सबके सामने हैं।

प्रसिद्ध पंचांगकार, ज्योतिषाचार्य दिव्य ज्योतिष के प्रणेता एवं संस्थापक ज्योतिष मठ पं. अयोध्या प्रसाद गौतम गुरुजी के मुखारविंद से निकली गुरुवाणी

सर्वाधिकार सुरक्षित पंचांग ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल द्वारा प्रकाशित इस पंचांग में मुद्रित विषय वस्तु या उसके अंश प्रकाशक की बिना लिखित अनुमति के छपवाना या प्रकाशन करना अपराध है। सभी प्रकार के विवादों का निपटारा भोपाल के सभी सक्षम न्यायालयों में होगा।

कुंडली मिलान स्वतः करें

कुंडली मिलान में ग्रह मिलान एवं गुण मिलान करना आवश्यक होता है। वर-कन्या दोनों की जन्म पत्रिका में अगर 1, 4, 7, 8 एवं 12वें स्थान पर मंगल के साथ गुरु अथवा चंद्र है तथा मंगल स्वराशि मेष एवं वृश्चिक में है तथा गुरु केंद्र त्रिकोण में एवं चंद्रमा जन्म पत्रिका में केंद्र में हो तथा मंगल शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर मंगलदोष का प्रभाव जीवन में कभी प्रभावित नहीं करता है।

अगर मंगल 1, 4, 7, 8 एवं 12वें स्थान पर होकर राहु-शनि, केतु आदि अवरोधी विच्छेदी ग्रह के साथ है ऐसी स्थिति में ये सभी ग्रह परिणाम के उत्तरदायी माने जाते हैं। इनका विधिवत वैदिक उपचार वर-कन्या द्वारा करने से संपूर्ण परिहार हो जाता है। एवं विवाह हेतु कोई ज्योतिषीय बाधा नहीं मानी जाती है।

गुणदोष परिहार - साधारणतया 18 गुणों का मिलान होने पर शुभ विवाह में कोई ज्योतिषीय बाधा नहीं होती है। 25 गुणों से ऊपर का मिलान बाहुल्यप्रद होता है। यह बाहुलता सभी प्रकार के दोष समाप्त करने में सक्षम है तथा नक्षत्र में चरणभेद होने से नाड़ीदोष समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहमैत्री के उत्तम अंक राशि स्वामी में मित्रता, अन्य दोष दूर कर देती है। यथा-

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षड़ाष्टकम्,
चत्वारि नैव दुष्यति राशि मंत्री यदा भवेत।

अपनी समस्या का स्वयं निराकरण करें

कहीं हम श्रापित तो नहीं हैं। जीवन में चल रही उथल-पुथल से आप स्वतः जान सकते हैं कि हमें उक्त समस्या है। अतः समस्या की जड़ में जाएं ज्योतिष ग्रंथों के अनुसार मंगल, राहु, केतु, शनि प्रतिकूल होने पर समस्याएं उत्पन्न करते हैं। अगर आपको वाद-विवाद गृह कलह, परेशानी, मांगलिक कृत्य में रुकावटें, तथा स्वास्थ्य भी अनुकूल नहीं है जीविका सर्विस आदि के क्षेत्रों में कमी हो रही है। ऐसी स्थिति में मान लें कि हमें उपरोक्त ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इन ग्रहों की अशुभता से व्यक्ति श्रापित हो जाता है। श्राप विमोचन से सुख-समृद्धि सम्मान, सौभाग्य संतति, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं दूर हो जाती है।

शनिकृत श्रापदोष - जन्म पत्रिका में यह अढैया शनि साढ़ेसाती शनि तथा शनि की प्रतिकूल दशा प्रभावी होने से अन्याय करने से झूठ बोलने से प्रभावी हो जाता है।

राहु-केतुकृत श्रापदोष - जन्म कुंडली में राहु-केतुकृत श्राप कालसर्पदोष होने, चंद्रदोष, ग्रहण दोष एवं गुरु के साथ चंडाली दोष, पितृदोष होने तथा चुगली करने, अपमान करने से प्रभावी हो जाता है।

मंगलकृत श्रापदोष - यह दोष जन्म पत्रिका में 1, 4, 7, 8 एवं 12वें स्थान पर मंगल के स्थित होने से बनता है। मंगल-राहु की युति, मंगल की प्रतिकूल दशा के समय एवं बड़ों की अवहेलना करने तथा राष्ट्र विरोधी कार्य करने से प्रभावी हो जाता है। उपरोक्त ग्रहों के श्रापों के प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित हो जाता है जिससे स्वास्थ्य, संतान, पत्नी, परिवार आदि सभी पर समान अशुभ प्रभाव बनना शुरु हो जाते हैं। परन्तु यही ग्रह जन्म कुंडली दशा आदि में अनुकूल हैं तो रंक से राजा बना देते हैं। प्रतिकूल ग्रह होने पर गृह स्वामी द्वारा श्राप विमोचन तथा ग्रह दोष निवारक पूजा-पाठ अनुष्ठान करने से शांति प्राप्त होती है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम,
संचालक, ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल मो. 9827322068

ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

जानिए अपना भविष्य, विघ्न बाधाओं से मुक्ति के उपाय

- अनुष्ठान, गृह प्रवेश, महामृत्युंजय आराधना, जाप
- कपाल भैरवी, बगुलानुमुखी, अकालानुमुखी, मोक्षानुमुखी, आदि शत्रुविजयी अनुष्ठान
- जन्म-पत्रिका, पंचांग, कैलेंडर निर्माण कार्य
- जन्म पत्रिका में मंगल दोष, पितृ दोष, कालसर्प दोष, चांडाल दोष, विष कन्या दोष आदि समस्याओं के अनुसंधान व समाधान के लिए तुरंत संपर्क करें

(भारतीय प्राचीन ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद, खगोल, वास्तु एवं मौसम अनुसंधान संस्थान)

पता : ई.एम. 129 ज्योतिष मठ, नेहरू नगर, भोपाल (मप्र)-462003 फोन- 0755-3581264

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

मोबाइल नं. : 9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com

आग्रह : ज्योतिष मठ संस्थान के विकास व अनुसंधान कार्यों में आर्थिक सहयोग प्रदान करें संस्थान के सदस्य बनें। सहयोग राशि संस्थान के बैंक खाता क्रमांक 61211920616 IFSC-SBIN0010468 शाखा नेहरू नगर में जमा कर हमें सूचित करें।

संस्थान द्वारा पंचांग के अतिरिक्त अन्य प्रकाशित पुस्तकें जैसे, महालक्ष्मी पूजा पद्धति, कुंभ रहस्यम्, संतान प्राप्ति रहस्यम्, श्राद्ध रहस्यम्, विवाह पद्धति आदि डाक से घर बैठे प्राप्त करें।

सावधान! कहीं आप नकली रत्न तो नहीं पहनें?

अशोक प्रियदर्शी
वरिष्ठ पत्रकार भोपाल, मो. 9340833602

कुछ चुनिन्दा ब्रॉंडेड रत्न, ज्वेलरों द्वारा नकली रत्न, ज्वेलरी देकर लोगों को ठगा जा रहा है। भोपाल में ऐसे कुछ ज्वेलरों के ऊपर एफआईआर तक हो चुकी है। जानकारी के अनुसार महंगे रत्न की ज्वेलरी विवाह-शादी इत्यादि हेतु गिफ्टेट ज्वेलरी में नकली कांच का टुकड़ा लगाकर एवं उसे स्वयं सर्टिफाइड कर उसे महंगे दामों में बेचा जा रहा है। विवाह हेतु रिंग सेरेमनी की अंगूठी में नकली हीरा होने का प्रमाण मिला है। ये रत्न वाले दूल्हे-दुल्हन प्रथम विवाह रस्म की अंगूठी में सबसे ज्यादा नकली हीरा लगाते हैं। दूल्हा-दुल्हन उस प्रथम रस्मी अंगूठी को शुभ मानकर संभालकर लॉकर आदि सिंदूर की डिब्बी में हमेशा के लिए रख देते हैं। वे कभी उसकी जांच तक नहीं कराते। इस विश्वास के साथ कि इसमें महंगा हीरा अथवा रत्न जड़ा है, परन्तु यह उनका भ्रम साबित होता है, जब वे अपनी इस अंगूठी की जांच कराते हैं। इन ज्वेलरों-रत्न वालों द्वारा कुछ प्रलोभी एवं दलाल किस्म के ज्योतिषियों का सहारा लेकर उन्हें कमीशन देकर महंगे-महंगे रत्न आपके द्वारा खरीदवाते हैं। अगर आपको कोई ज्योतिषी महंगा रत्न लिखता है एवं किसी विशेष दुकान से लेने से लिए कहता है तब आप निश्चित समझें कि यह ज्योतिषी नहीं, बल्कि रत्न वाले का एजेंट है। अतः आप सभी से निवेदन है कि आप अपने यहां रखी रत्न-ज्वेलरी की जांच समय रहते अवशय करा लें।

मुख्य पंचांग प्राप्ति स्थल

श्री अशोक प्रियदर्शी भोपाल, मो. 9340833602, श्री संतोष योगी इंदौर, मो. 9630731410, रामजी पुस्तक भंडार जबलुपर मो. 9302543396 रत्न रुराक्ष भंडार सतना मो. 9803678590 सुबोध मिश्रा पन्ना मो. 9827985894 कृष्णा भक्ति भंडार उज्जैन, मो. 9827205372 डॉ. प्रकाश गौतम, दमोह मो. 9589271127 श्री पीके धमीजा रीवा-मोबा. 9424982991

पंचांग गणिताचार्य

यह पंचांग कैलेंडर की शक्ल में पूर्ण सरल हिन्दी भाषी पंचांग है। पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसमें सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। पंचांग में मुहूर्तों की श्रृंखला के साथ शिववास अग्निवास, हवन हेतु शुभ समय, शुभ योग तथा मासिक राशिफल, वार्षिक भविष्यफल के साथ देश-विदेश का भविष्यफल सम्मिलित है। पंचांग में तिथि, नक्षत्र, योगों एवं व्रत-त्योहारों को धर्म शास्त्रानुसार निर्णय कर लिखा गया है। भोपाल के अक्षांश और निकटवर्ती कर्क रेखा से पंचांग की गणना करना एक नई क्रांति जैसा ही था। क्योंकि अभी तक जो भी पंचांग, कैलेंडर तैयार हुए वो वाराणसी या जबलपुर के मान से बन रहे थे। ऐसे में भारत की हृदय स्थली मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को केंद्र पृष्टीय भू-भाग मानकर इस पंचांग की गणना कर आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। गणितीय विवेचना में त्रुटि संभव है। ऐसे में अगर आपके समक्ष कोई त्रुटि इस पंचांग में दृष्टिगत होती है तो कृपया सुधार हेतु हमें अवश्य अवगत कराएं। विश्वास है यह पंचांग सभी पाठकों को सही ज्योतिष ज्ञान देने में सफल रहेगा।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

- ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम

यह पंचांग डाक से मंगवाएं

नए वर्ष का पंडित अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग मंगवाने हेतु आप अपने निकटतम पंचांग विक्रेता को इस पंचांग को बेचने के लिए अवश्य कहें। अगर आपको विक्रेता पंचांग उपलब्ध न कराए तो आप हमसे रजिस्टर्ड डाक से यह पंचांग मंगवा सकते हैं जिसके लिए एक प्रति 80 रुपए, दो प्रति 120 रुपए और तीन प्रति 160 रुपए संस्थान के खाते में एडवांस जमा कराएं तथा अपना नाम, पूरा पता पिनकोड सहित पंचांग की संख्या लिखकर हमें 9827322068 पर वाट्सएप या एसएमएस करें।

पंचांग प्राप्ति व डिस्ट्रीब्यूशन के लिए इस नम्बर पर फोन करें
फोन- 0755-3581264
मो. 9827322068

विक्रेता/भेंटकर्ता/प्रतिष्ठान

सिद्धि विनायक कम्प्यूटर्स, मो.नं.- 9926980190

पं. अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग, प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान